गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
ओ३म्प् परिग्रहण क्रमांक ...2891.....
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

शिवलिंग पूजा?

(परिवर्धित संस्करण)

लेखकः

डा० श्रीराम आर्य

कासगंज (एटा–उ०प्र०)

6226
व-पु-263

प्रकाशक

वैदिक-प्रकाशन

२८०४, गली आर्यसमाज, बाजार सीताराम,

दिल्ली-११०००६

प्रकाशक
राजपाल सिंह शास्त्री
अध्यक्ष, वैदिक-प्रकाशन
२८०४, आर्यसमाज मन्दिर, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६
फोन:३२३८६३१ : ७५१३२०६

प्रथम संस्करण : दिसम्बर १९९७
मूल्य : १० रुपये

मुद्रक: फॉरेन लिट्रेचर (सब्स) एजेंसी विकासपुरी, दिल्ली-१८ द्वारा
तिलक प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-६

प्राक्कथन

इस ग्रन्थ को लिखने का हमारा प्रयोजन किसी सम्प्रदाय विशेष पर घाट करना अथवा किसी का दिल दुखाना नहीं है और न ही हम इस ग्रन्थ के द्वारा किसी प्रकार की साम्प्रदायिक कटुता को उत्पन्न करने के उद्देश्य से प्रकाशित कर रहे हैं। वरन्, हमारा लक्ष्य अपने हिन्दू समाज में वर्तमान धार्मिक कुरीतियों व अन्धविश्वासों के प्रति अपने समाज को सजग करना है ताकि हमारे सहधर्मी लोग यह देख व समझ सकें कि किस प्रकार हमारे धर्माचार्यवर्ग ने हिन्दू समाज को धार्मिक भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया है। एक ईश्वर के स्थान पर नर व नारी की जननेन्द्रियों की पूजा का भक्त बनाकर कुमार्गगामी बनाया है, उसके धार्मिक अन्धविश्वास के कारण मानव–जीवन के पवित्र उद्देश्य ईश्वर प्राप्ति के लक्ष्य से उसे विमुख बनाकर उसके जीवन को बर्बाद किया है। आज जबकि स्वतन्त्र भारत में हमारी राष्ट्रीय सरकार भौतिक दृष्टि से देश के उत्थान में प्रयत्नशील है। बुद्धिमान व्यक्ति सामाजिक दोषों को दूर करने में अहर्निश प्रयत्नशील हैं तो यह अत्यन्त आवश्यक है कि **हमारे समाज में से धार्मिक दोष भी दूर हो जावें और जनता धर्म के ही मर्म को समझ सके। दोषों को दूर करने के लिए उनको स्पष्ट कर जनता के सामने रखना परम आवश्यक होता है** ताकि जनता की चेतना शक्ति जागृत हो व बुराइयों को लोग समझकर उनसे घृणा करने लगें। जब तक दोषों पर डटकर प्रहार नहीं किया जावेगा व बुराइयों से जनता को अवगत नहीं कराया जावेगा, तब तक अन्धविश्वासों का विनाश नहीं होगा। रोगों को दूर करना ही खण्डन कहाता है। रोग दूर हो जाने पर ही स्वास्थ्यवर्धक औषधि का रोग–मुक्त शरीर पर प्रभाव होता है। यह चिकित्सालय का अटल सिद्धान्त है। पाखण्ड का खण्डन एवं सत्य बात का मंडन करना यह मानव धर्म है। जो अज्ञानतावश पाखण्ड को बुरा कहते हैं, वे चिकित्सा के मर्म को नहीं समझते हैं।

शिवलिंग पूजा वास्तव में शंकर व पार्वती के गुप्तांगों की ही पूजा है। यह हमने दर्जनों प्रमाणों के आधार पर इस ग्रन्थ में सिद्ध किया है

जिनका खण्डन पुराणों का मानने वाला कोई भी पौराणिक विद्वान् नहीं कर सकता है। हिन्दू समाज के परम पूज्य फर्जी देवता शंकर के पतित जीवन की चन्द झांकियां आपको इसमें मिलेगी और उनको पढ़कर आप देखेंगे कि क्या ऐसे गन्दे चरित्र वाले व्यक्ति की उपासना से किसी व्यक्ति या समाज का उत्थान हो सकता है। आज बाजार में शंकर व पार्वती कृष्ण, विष्णु आदि के कामोत्पादक सिनेमा स्टाइल के दूषित चित्र छाप–छाप कर बांटे व बेचे जा रहे हैं। शिवभक्तों को ही नहीं वरन् हमारे सम्पूर्ण (सनातनधर्मी) समाज के लिए चुनौती पेश करते हैं कि क्या हमारे सनातन धर्म सभायें या पौराणिक पण्डितगण नशे में सो रहे हैं जो इनके प्रकाशन के विरुद्ध कोई आन्दोलन नहीं करते हैं। हमें कहना है कि हमारे इस पुस्तक को पढ़कर यदि किसी हमारे पौराणिक बन्धु को कुछ अप्रिय लगे तो वे उन अश्लील पुराणों को जब्त कराने का उद्योग करें जिनके प्रमाणों के आधार पर इस ग्रन्थ की रचना हुई है। सनातन धर्म सभायें परम पूज्य अपने फर्जी देवताओं के अश्लील चित्र छापने वाली फर्मों के विरुद्ध आन्दोलन करें। योनि तथा लिंग पूजा के गन्दे स्थान शिव मन्दिरों को समाप्त करा दें। जगन्नाथपुरी आदि के मन्दिरों को ठीक करावें। जहां खुले व्यभिचार के नग्न चित्र सनातन धर्म के वाममार्गीय स्वरूप का प्रमाण उपस्थित करते हैं। हमारा यह ग्रन्थ पौराणिक जनता की आंखें खोलकर उसे हमारे प्राचीन धर्म में प्रचलित एक भयंकर भूल से सावधान करने का कार्य करेगा। अतः इसका अधिक से अधिक प्रचार होना आवश्यक है। देश में खण्डन–मण्डन का कार्य बन्द हो जाने से सर्वत्र ही आजकल धार्मिक क्षेत्रों में पाखण्डों का प्रचार तेजी से हो रहा है। आर्यसमाज के विद्वानों से हमें कहना है कि वे आर्यसमाज की पवित्र वेदी पर से मत–मतान्तरों के पाखण्डों के खण्डन व वैदिक सिद्धान्तों के मण्डन में लेखों व व्याख्यानों का अजेय प्रवाह पुनः पूर्ववत् जारी करें जिसके लिए महर्षि ने समाज की स्थापना की थी। आर्य विद्वानों को अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिए। आशा है पाठक हमारे इस प्रयास (ग्रन्थ) का स्वागत करेंगे।

निवेदक–

कासगंज (उ०प्र०) -डा० श्रीराम आ

विषयानुक्रमणिका

एक ईश्वर है, उसके अनेक नाम हैं ७
महादेव जी ब्रह्मा के बेटे थे ८
विष्णु व ब्रह्मा महादेव जी के बेटे थे ८
ब्रह्मा, विष्णु व महादेव को एक मानने वाले नरकगामी होंगे ६
पुराण में शिव की महानता का वर्णन १०
वाममार्ग का भैरवी चक्र १२
सती अनसूया से व्यभिचार चेष्टा व लिंगपूजा का शिव को शाप १५
जलहरी क्या है? १७
शिवलिंग शिव की मूत्रेन्द्रिय ही है १७
जननेन्द्रिय की पूजा का विधान १८
शिवलिंग व जलहरी का स्पष्टीकरण १८
नाभियुक्त लिंग पूजा का विधान १८
शिव का स्वरूप योनि लिंग होगा– भृगु ऋषि का शाप १६
शिवलिंगों की पैदायश का इतिहास २१
मन्दिरों की लूट का नमूना २४
शिवलिंग ब्रह्मचर्य में स्थित है २५
शिवलिंग की उपस्थेन्द्रिय होने का खुला सबूत २५
शिवलिंग के छू जाने वाली वस्तु अपवित्र होती है २७
शिव का प्रसाद शराब, मांस व विष्ठा के समान है २७
शराब, मांस व रज–वीर्य से शिवजी का पूजन करो २८
शिव मन्दिरों, देव पूजन व हवन निषेध २६
शिव के भक्त पाखण्डी व अछूत हैं ३०
शिव–प्रसाद की निन्दा ३१
शिव को पूजने वाला ब्राह्मण शूद्र होता है ३१
शिवादि के पूजने वाले टट्टी के कीड़े बनेंगे ३१
दुर्गा का स्वरूप ३३
दारुवन की कथा शिव पुराण से ३५
शिवलिंग के साथ वृषण भी कटे थे ३८
शिवजी दारुवन में विष्णु को स्त्री बना कर साथ में ले गए थे ३६
दारुवन की कथा भाषा शिव पुराण से ४०
शिवलिंग पर बेलपत्र व जल चढ़ाने का रहस्य ४२
मोहिनी अवतार की कथा सोना–चांदी की उत्पति शिव वीर्य से ४३
शिव वीर्य से हनुमान का जन्म ४५
शिव वीर्य से पारे की उत्पत्ति ४६
पार्वती रज से गन्धक की उत्पत्ति ४६
इलावृत देश का हाल ४७
हर समय शिवजी कामिनी पाश में बंधे रहते हैं ४७
शिव के पास अप्सरायें क्रीड़ा करती हैं ४८

मर्दों को औरत बनाने के शाप की कथा	४८
शंकर का वेश्यानाथ अवतार व वेश्यागमन	५०
आडि वध की कथा	५२
शंकर का पार्वती को विष्णु से कुकर्म कराने का आदेश	५३
शंकर का शिव दूती को अण्डकोष खाने का आदेश	५४
शंकर का १०० वर्ष तक पार्वती से रति करना	५५
शंकर का १००० वर्ष तक पार्वती से रमण करना	५५
पुराणों में शंकर के लिए लम्पट या धूर्त शब्द का प्रयोग	५६
पुराण बनाने वालों को धूर्त बताया है	५७
पुराण बनाने वालों की उपाधियां	५८
भ्रष्ट लोग भागवत पढ़ते हैं	५८
पौराणिक पण्डितों का सच्चा स्वरूप	५९
पुराण पाठक का पूर्ण बहिष्कार करने का आदेश	५९
पुराण में अंग्रेजी	६०
पुराण शूद्रों के लिए बने हैं	६०
क्या शिवजी ने कामदेव को भस्म किया था	६१
बैकुण्ठ और कैलाश की स्थिति का निर्णय	६१
एक विचित्र मूर्ति	६३
मूर्तिपूजा कम अक्ल वालों के लिए है	६४
पत्थर का लिंग शूद्र पूजते हैं	६४
मूर्ख लोग मूर्ति को ईश्वर समझते हैं	६४
जलमय तीर्थ व मिट्टी के देवता नहीं होते	६५
मूर्ति में पूज्यबुद्धि व जल में तीर्थबुद्धि मानने वाले गधे हैं	६५
शिव पूजकों के लिए व्यवस्था	६६
त्रिपुण्ड्रधारी पतित होता है	६६
शिव भक्त पाखण्डी, भ्रष्ट तथा नरकगामी हैं	६६
शिवलिंग पूजकों को घोर दुःख मिलेगा	६७
क्या राम ने शिवलिंग पूजा की थी	६९
शंकर व पार्वती राम का चिंतन करते हैं	७०
शंकर द्वारा राम की स्तुति	७०
रामचन्द्र जी के दर्शन से शिवजी तर गये	७०
नैतिक पतन की पराकाष्ठा	७३
शंकर का जुआ खेलना	७३
रावण द्वारा शिवलिंग की पूजा	७४
हनुमान जी द्वारा शिवलिंग पूजने की गप्प	७५
राम के युग में मूर्ति पूजा नहीं थी	७५
शिवलिंग पूजा के महात्म्य व चेले फांसने का जाल	७६
उपसंहार–शिव माया के चमत्कार	८०
ईश्वरोपासना का वैदिक प्रकार	८४
परिशिष्ट (अनेक महत्वपूर्ण विषय)	८८

o

शिवलिंग पूजा?

एक ईश्वर है, उसके अनेक नाम हैं

पौराणिक (सनातन) धर्म में ब्रह्मा, विष्णु व महादेव तीन प्रमुख उपास्यदेव माने जाते है। कुछ पुराणों में कहीं–कहीं इन तीनों को एक ही माना है।

ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तीनों नाम एक ही ईश्वर के हैं।

गुणमय्यी स्वशक्त्यास्य सर्गस्थित्यप्ययान्विभौ।
धत्से यदा स्वद्रग्यूमन्ब्रह्म विष्णु शिवाभिधानम्।।३३।।

(भागवत स्क० ८, अ०७)

अर्थ—प्रभो! अपनी गुणमयी शक्ति से इस जगत की सृष्टि, स्थिति और प्रलय करने के लिए आप एक रस–अनन्त होने पर भी ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि नाम धारण कर लेते हैं।

सृष्टिस्थत्यन्तकरणी ब्रह्मा, विष्णु, शिवात्मिकाम्।
स संज्ञायाति भगवान् एक एव जनार्दनः।।६६।।

(विष्णु पुराण प्र० अंश अ० २)

अर्थ— वह एक ही भगवान जनार्दन जगत की सृष्टि, स्थिति और प्रलय करने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव इन तीनों नामों को धारण कर लेते हैं।

इससे प्रगट होता है कि ये तीनों नाम एक सर्वव्यापक, जगदाधार ब्रह्म के ही हैं। इन तीनों देवताओं का पृथक्–पृथक् कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। वैदिक साहित्य में एक ईश्वर को उसके गुण एवं कार्यों की अपेक्षा से अनेक नामों से पुकारा गया है।

तदेयाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रंतद् ब्रह्म ताः आपः सः प्रजापतिः।१।

(यजुर्वेद अ. ३२, मं.–१)

सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्।।

(सामवेद पूर्व. १-६१)

स ब्रह्मा स विष्णु स रुद्रस्सऽशिवस्सोऽक्षरस्परमःस्वराट्।
स इन्द्रस्सकालाग्निस्सचन्द्रमाः।।

(कैवल्योपनिषद्)।

अर्थात्—आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आपः, प्रजापति, सोम, राजा, वरुण, इन्द्र, कालाग्नि, रुद्र, शिव, ओम, स्वराट्, विष्णु, सूर्यादि नाम **ईश्वर** के हैं। जगत का उत्पन्नकर्त्ता होने से ब्रह्मा, पालक होने से ईश्वर विष्णु है, कल्याणकारी होने से शिव नाम परमात्मा का है। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने जगत्प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में प्रथम समुल्लास में ईश्वर के १०० नामों की व्याख्या में ये सभी नाम परमात्मा के लिए सिद्ध किये हैं। परन्तु पौराणिक साहित्य में भागवत व विष्णु पुराण की एवं वेदों व उपनिषदों की उपरोक्त मान्यता के विपरीत वर्णन मिलता है। जिसमें इन सभी देवताओं का पृथक्-पृथक् अस्तित्व माना है और एक-दूसरे की निन्दा की है।

महादेव जी ब्रह्मा जी के बेटे थे

नरसिंह जी ने जो साक्षात् विष्णु के अवतार थे, कहा है—

मन्नाभि पंकजाज्जातः पुरा ब्रह्मा, चतुर्मुखः।
तल्ललाट समुत्पन्नो भगवान् वृषभध्वजः।।३१।।

(लिंग पु. पूर्वार्ध अ. ६६)

अर्थ—मेरी नाभि से कमल पैदा हुआ, उस कमल में से ब्रह्मा पैदा हुए। उन ब्रह्मा के माथे से शंकर जी का जन्म हुआ है।

इसके विपरीत अन्य स्थानों पर इसी पुराण में लिखा है कि—

विष्णु व ब्रह्मा महादेव जी के बेटे थे

अयं मे दक्षिणे पार्श्वे ब्रह्मालोक पितामहः।।२।।
वामे पार्श्वे च मे विष्णुर्विश्वात्मा हृदयोद्भवः।।३।।

(लिंग पु. १६)

अर्थ—महादेव जी कहते हैं कि मेरे दाहिने पार्श्व से लोक पितामह ब्रह्मा जी तथा बांये पार्श्व (पसली) से विश्व के आत्मस्वरूप हृदयोद्‌भव विष्णु जी पैदा हुए हैं।

एक प्रमाण और भी देखिए—

ब्रह्मा, विष्णु व महादेव को एक मानने वाले नरकगामी होंगे

विष्णु ब्रह्मादि रूपाणामैक्यं जानन्ति ये मानवाः।
ते यान्ति नरकं घोरं पुनरावृत्ति वर्जितम्।।

(गरुड पु. ब्रह्मकाण्ड अ. ४)

अर्थ— जो लोग ब्रह्मा, विष्णु व महादेव को एक ही मानते हैं वे मर कर घोर नरक में जाते हैं। उनका पुनर्जन्म भी नहीं होता है।

गरुड़ पुराण के श्लोक को पढ़कर वे लोग अपनी आंखें खोल लें, जो तीनों देवताओं को कुछ पुराणों के आधार पर एक ही बता दिया करते हैं। यदि गरुड़ पुराण की यह बात सच है तब तो भागवत व विष्णु पुराण बनाने वालों को घोर नरक मिला होगा। क्योंकि उन्होंने तीनों देवताओं को एक ही लिख दिया।

इन कुछ उद्धरणों को देने से हमारा तात्पर्य यह है कि वैदिक साहित्य में ब्रह्मा, विष्णु व महादेव को एक ही ईश्वर के भिन्न–भिन्न नाम माना है और भागवत व विष्णु पुराण ने भी किसी–किसी स्थल पर चाहे इन देवताओं को एक ही स्वीकार किया है, किन्तु अन्य पुराणों ने इन तीनों देवताओं का अस्तित्व पृथक्–पृथक् ही माना है। हमें इससे कोई सरोकार नहीं कि इन तीनों में कौन, किसका बाप है और कौन किसका बेटा है? यह देखना तो हमारे पौराणिक बन्धुओं के अपने घर की बात है। इस लेख में हमें ब्रह्मा व विष्णु के संबंध में भी विचार नहीं करना है। हम आज अपने पाठकों के संबंध में वास्तविक स्थिति से जानकारी कराना चाहते हैं। हमारे देश की धर्म परायण हिन्दू जनता करोड़ों की संख्या में शिव के वर्णन से भरे पड़े हैं।

कहा जाता है कि शिवजी सपेरों के समान गले में सांपों को पहने रहते हैं, समुद्र मंथन के बाद वे जहर को पी गये और वह उनके गले में रखा है, इससे वे **नीलकण्ठ** कहलाये। उन्होंने सती से विवाह किया। उसके मरने पर वे उसकी लाश को कन्धे पर डालकर शोक में दीवाने हुए सर्वत्र भागते फिरे। विष्णु ने छिप-छिपकर लाश के अनेक टुकड़े कर दिए, वे जहां-जहां पृथ्वी पर गिरे, वहां-वहां तीर्थ बन गए। इसी दीवानेपन में उन्होंने जो नाच किया, वही शिव का तांडव-नृत्य कहलाया। इसके बाद उन्होंने हिमालयराज की पुत्री पार्वती से विवाह किया। कामदेव को भस्म कर दिया। शिवजी के मस्तक से गंगाजी निकली है। दौज का चन्द्रमा शिवजी के सिर पर निवास करता है इत्यादि। अनेक प्रकार की गाथायें उनके बारे में प्रसिद्ध हैं। इन्हीं कारनामों से प्रभावित होकर शिव के भक्त उनकी पूजा करते हैं। सौर पुराण में तो शिव के बारे में यहां तक लिखा है:

पुराण में शिव की महानता का वर्णन

शिव सामान्य वक्तारं शिव सामान्य दर्शिनम्।
दृष्ट्वा स्नायात् सचैलं सन् शिव सामान्य संगिनम्।।
महेशस्यैव दासोऽयं विष्णुस्तेनानुकम्पितः।
श्रुतिस्मृति पुराणानां सिद्धान्तोऽयं यथार्थतः।।
इन्द्रोपेन्द्रादय सर्वे महेशस्यैव किंकराः।।
तेन तुल्यो यदा विष्णुर्ब्रह्मा वा यदि गद्यते।
षष्टिवर्षसहस्राणि विष्टायां जायते कृमिः।

(सौर पुराण अ. ४०)

अर्थ— जो मनुष्य शिवजी के समान विष्णु को देखता है व शिव के समान ब्रह्मा आदि देवताओं को बताता है वह पापी है। उसे देखकर कपड़ों सहित स्नान करना चाहिए। विष्णु शिवजी का दास है, यह श्रुति, स्मृति, पुराणों का सिद्धान्त है। इन्द्रादि सभी देवता शिवजी के नौकर हैं। जो मनुष्य विष्णु, ब्रह्मा आदि को शिवजी के समान कहता है, वह ६० हजार साल तक मर कर पाखाने का कीड़ा बनेगा।

शिवजी की श्रेष्ठता प्रगट करने व अन्य सभी देवताओं की तुच्छता दिखाने के लिए कितने प्रबल शब्दों का प्रयोग किया गया है, यह पाठक ऊपर के प्रमाण में देखें। तीनों देवताओं को एक ही बताने वाले हमारे पौराणिक भाई भी अब कभी आगे मुंह खोलने का साहस न करें, वरना उन्हें पाखाने का कीड़ा बनना पड़ेगा। अस्तु–

ऐसे महान् पौराणिक देवता की ऐसी प्रशंसा देखकर प्रत्येक समझदार व्यक्ति के हृदय में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि जब पौराणिक शास्त्रों में शिवजी की पूजा का विधान किया गया तो अन्य देवताओं के समान उनके सिर, धड़ या पैरों की पूजा छोड़कर उनकी उपस्थेन्द्रिय **शिवलिंग** को ही क्यों पूजा जाता है? अन्य देवताओं की अपेक्षा शिवलिंग में ही क्या विशेषता है, जो सारा शिवोपासक सनातनी संसार उसकी उपासना में तल्लीन है, जबकि मूत्रेन्द्रिय किसी की भी पूजना, यह संसार में कोई शराफत की बात नहीं है।

वास्तविक बात तो यह है कि महाभारत के युद्ध के बाद जब नाना प्रकार के मतों, पन्थों का प्रादुर्भाव हुआ, एक ईश्वर के स्थान पर बहु देवतावाद की मान्यता व उनकी उपासना का प्रचार हुआ, स्वार्थवश ब्राह्मण वर्ग ने अशिक्षित जनता को धर्म के नाम पर नाना प्रकार के ढोंग रचकर लूटना, खाना प्रारंभ किया तो देश में दुराचारी लोगों के द्वारा एक शिश्नोपासक (मूत्रेन्द्रिय की उपासना करने वाले) वाममार्गीय सम्प्रदाय का प्रसार हुआ। वैदिक आदेश के सर्वथा विपरीत व्यभिचार को ही अपना आदर्श मानने वाले, मद्य–मांस मैथुन में रत रहने वाले इस वाममार्गीय सम्प्रदाय ने शिव नाम के फर्जी देवता की कल्पना की, उसके नाम पर नानाप्रकार की मिथ्या कथायें गढ़ी और तत्संबंधी लिंग–शिव आदि पुराणों की रचना कर डाली। संस्कृत भाषा का उस समय देश में पंडितवर्ग में अधिक प्रचार था।

अतः शास्त्रों के नाम पर छन्दोबद्ध पुराणादि ग्रन्थों को बनाने में कठिनाई नहीं हुई। वैष्णवों ने विष्णु की प्रशंसा में पुराण बनाये तो शैवों ने शिव की प्रशंसा में अपनी मान्यता के आधार पर साहित्य तैयार कर

दिया। अन्धविश्वासी देश की जनता ने उनका अन्धानुकरण प्रारंभ कर दिया और यह अन्धपरम्परा अब तक देश में बहु देवतावाद की पूजा के रूप में चली आ रही है। कोई भी आंख खोलकर यह नहीं देखता कि शिवलिंग को पूजना धर्म है या पाप, उस पर जल चढ़ाना उचित है या अनुचित। जहां देखो शिव-लिंग पूजने के मन्दिर खड़े हैं और धुआंधार उस पर सिर पटकते रहते हैं।

आज हमें अपने पाठको को सनातन धर्म के ही मान्य शास्त्रों से शिवलिंग पूजा का सम्पूर्ण रहस्य बताना है। हमारा उद्देश्य किसी के दिल को दुखाना नहीं है। वरन् अपनी वैदिक धर्मी जनता में से मूत्रेन्द्रिय की पूजा के इस गन्दे आडम्बर को तथा भ्रष्टाचार से दूर करना और धर्म परायण अपनी हिन्दू जनता को यह तथ्य बताना है कि ईश्वर के स्थान पर हमारे स्वार्थी, अन्धविश्वासी, धर्माचार्यों ने क्यों नारी के गुप्तांग सहित शिवलिंग की पूजा जारी कराई है। पौराणिक साहित्य के स्वाध्याय से हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि भारत के दक्षिण प्रदेश में सर्वप्रथम वाममार्ग का उदय हुआ था। मद्य, मांस व मैथुन उनके सम्प्रदाय का मूल आधार था। उन्होंने अपने देवता शिव की उपस्थेन्द्रिय की पूजा का अपने व्यभिचार प्रधान धर्म के प्रचार का साधन बनाया था।

वाममार्ग का भैरवी चक्र

वाममार्गीय सम्प्रदाय का प्रचार आज भी बिहार, बंगाल, आसाम व उड़ीसा प्रदेशों में पाया जाता है। इनके सामूहिक कार्यक्रम बन्द स्थानों में होते हैं, जिनमें इनके सम्प्रदाय के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों को प्रविष्ट नहीं किया जाता है। बहुत बड़े कमरे में इनका कार्यक्रम होता है। सभी सदस्य जोड़े सहित उसमें भाग लेते हैं। बिना स्त्री वाले को शामिल नहीं करते हैं। सर्वप्रथम मध्य में एक वेदी बनाई जाती है। उस पर एक घड़ा रखते हैं। घड़े पर नारियल रखते हैं। उपस्थित समूह में से कोई भी जोड़ा स्त्री व पुरुष सर्वथा नग्न हो जाते हैं। वे अपनी उपस्थेन्द्रियों को शराब से धोकर स्वच्छ करते हैं। पुरुष नारी के गुप्तांगों की पूजा चावल आदि से करता है। नारी नर के गुप्तांग की पूजा करती है। सभी

लोग ह्रीं-ह्रीं, क्लीं-क्लीं आदि का जाप करते हैं। पूजा के बाद शराब का एक-एक पैग (प्रायः दो-दो तोला शराब का) सबको मिलता है। सभी स्त्री, पुरुष उसे पीते हैं। बाद में मांस मिलता है, सभी खाते हैं। फिर दूसरी बार शराब मिलती है। फिर तीसरी बार मछली व शराब मिलती है। फिर दही-बड़े मिलते हैं। फिर चौथी बार शराब मिलती है। एक बार पुनः पांचवीं बार शराब का दौर चलता है। इस सबके बाद रोशनी बन्द कर दी जाती है और रातभर मैथुन का क्रम जारी रहता है। यह **मद्य, मांस, मीन, मुद्रा व मैथुन** वाममार्गीय के धर्म के मूल **पंच मकार** कहलाते हैं। जिस पुरुष व स्त्री के गुप्तांग का पूजन होता है वे दोनों साधक व साधिका कहलाते हैं।

मैथुन क्रम के दो रूप होते हैं—व्यक्तिगत एवं समष्टिगत। व्यक्तिगत में हर जोड़ा अपने तक सीमित रहता है। समष्टिगत में सारी स्त्रियों की चोलियां उतरवा कर एक घड़े में डालकर डण्डे से घुमा दी जाती है। फिर हर आदमी उसमें से हाथ डालकर एक चोली निकाल लेता है। फिर जिस स्त्री की चोली जिस पुरुष के पास पहुंचती है, वह रात भर उसी के पास रहती है। प्रातःकाल होने पर वह समारोह विसर्जित हो जाता है और हर जोड़ा अपने असली जोड़े से मिल जाता है। बनारस आदि जगहों में भी जो शिवजी के गढ़ हैं, इनकी शाखायें लगती हैं।

वाममार्ग का स्वरूप प्रगट करने के लिए ये श्लोक काफी होंगे:

मद्यं मासं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च।

एते पंच मकाराः स्युर्मोक्षदा हि युगे युगे (कालीतन्त्र)

मातृयोनिं परित्यज्य विहरेत सर्वयोनिषु।। (महनिर्वाण तन्त्र)

शराब, मांस, मछली, मुद्रा तथा मैथुन ये **पंच मकार** हैं, जो मोक्ष देने वाले हैं। माता को छोड़कर प्रत्येक स्त्री से काला मुंह किया जा सकता है।

इतने ही से वाममार्ग की असलियत पाठक समझ सकते हैं। व्यभिचार करते समय वाममार्गी अपने को भैरव व स्त्री को भैरवी बताते हैं।

भारत के प्रसिद्ध ऐतिहासिक विद्वानों ने भी बड़ी खोज के बाद निष्कर्ष घोषित किया है कि शिव द्राविड़ों का देवता था। जितनी भी मूर्तियां भारत के मूर्तिपूजकों द्वारा देवताओं की गढ़ी गई हैं, केवल शिव की ही ऐसी मूर्ति उनमें मिलती है, जो सर्वथा नग्नावस्था में उपस्थेन्द्रिय का प्रदर्शन करती हुई दिखाई देती है। मथुरा में मसानी रोड पर गोकर्ण महादेव के मन्दिर की मूर्ति, काशी में नेपाल महाराज का मन्दिर, जगन्नाथपुरी के मन्दिर व उत्तर प्रदेश के झांसी जिले के खुजराहो के मन्दिर में नर व नारी के संभोग करते हुए अश्लील आसनों से युक्त मूर्तियां आज भी उस वाममार्गीय व्यभिचार प्रधान सभ्यता के गन्दे नमूने के स्वरूप में देखी जा सकती है। भारतीय सभ्यताभिमानी राष्ट्रीय सरकार भी इन भ्रष्टाचार के प्रचार के गन्दे मन्दिरों में संशोधन करने का साहस नहीं कर सकती है, यह कितने दुःख की बात है?

उस मध्यकाल में आज से प्रायः २।। हजार वर्ष पूर्व के समय के वाममार्गीय ने अपने गन्दे आदर्शों को प्रामाणिक बनाकर जनता को सत्य मानने का प्रभाव डालने के लिए अनेक प्रकार की कहानियां गढ़–गढ़ कर पुराणों में देवताओं के कार्य–कलापों के रूप में लिख डाली थीं। जनता को शास्त्रों एवं देवताओं के नाम पर खूब बहकाया गया। जो पाप के प्रति शंका व भय जनता में था, उसे पाप मुक्त कार्य–कलापों को आदर्श में दिखाकर जनता को पाप के भय से मुक्त कर दिया गया। जिस कर्म को देवता करते हों तो वह पाप कैसे हो सकता है? महापुरुषों के चरित्र तो सदैव अनुकरणीय होते हैं, इस प्रकार का विश्वास जनता में पण्डित वर्ग ने पैदा करा दिया। व्यभिचार को पाप न माना जाये, इसके लिए ब्रह्मा, विष्णु, महेश व इन्द्रादि देवताओं की कल्पना की गई व उनको व्यभिचार–प्रिय पर–स्त्रीगामी बनाने के लिए सैंकड़ों प्रकार की कहानियां गढ़–गढ़कर पुराणों की रचना की है।

हम पुराणों में देखते हैं कि जितना पतित चरित्र की दृष्टि से इन त्रिदेवों की पुराणकारों ने शान के साथ प्रस्तुत किया है। कदाचित् रावण व कंस का चरित्र अपेक्षाकृत कहीं अधिक श्रेष्ठ उन्होंने दिखाया है। हमारा

विषय यहां शिवलिंग पूजा के संबंध में तथ्य उपस्थित करना है। अतः हम विषयान्तर में न जाते हुए सप्रमाण उन घटनाओं को प्रस्तुत करते हैं जिनके आधार पर शिवलिंग पूजा की परिपाटी जारी की गई, बताई जाती है।

कहा जाता है कि एक बार ब्रह्मा, विष्णु व महादेव ने अत्रि की पत्नी सती अनुसूया से व्यभिचार की चेष्टा की थी। उसकी कथा संक्षेप में हम पुराण में से नीचे प्रस्तुत करते हैं

सती अनसूया से व्यभिचार की चेष्टा व लिंग पूजा का शिव को शाप

कदाचिद्भगवानत्रिर्गङ्गाकूलेऽनसूयया।
सार्धं तपो महत्कुर्वन्ब्रह्मध्यानंपरोऽभवत्।।६७।।
तदा ब्रह्मा हरिश्शंभुः स्व स्ववाहनमास्थिताः।
वरं ब्रूहिति वचनं तमाहुस्ते सनातनाः।।६८।।
इतिश्रुत्वा वचस्तेषां स्वयंभूस्तनयो मुनिः।
नैवकिञ्चिद्वचः प्राह संस्थितः परमात्मनि।।६९।।
तस्य भावं समालोक्य त्रयो देवाः सनातनाः।
अनसूयां तस्य पत्नी समागम्यवचोऽब्रुवन्।।७०।।
लिंग हस्तः स्वयं रुद्रो विष्णुस्तद्रसवर्धनः।
ब्रह्मा काम ब्रह्मालोपः स्थितस्यस्यावशं गतः।
रतिं देहि मदाघूर्णे नो चेत्प्राणान् त्यजाम्यहम्।।७१।।
पतिव्रताऽनसूया च श्रुत्वा तेषां वचो शुभम्।
नैव किञ्चिद्वचः प्राह कोपभीता सुरान्प्रति।।७२।।
मोहितास्तत्र ते देवा गृहीत्वा तां वलात्तदा।
मैथुनाय समुद्योगं चक्रुर्माया विमोहिताः।।७३।।
तदा क्रुद्धासती सा वै तां शशाप मुनिप्रिया।
मम पुत्राभविष्यन्ति यूयं कामविमोहिताः।।७४।।

महादेवस्य वै लिंगं ब्रह्मणोऽस्य महाशिरः।
चरणो वासुदेवस्य पूजनीया नरैस्सदा।
भविष्यन्ति सुरश्रेष्ठा उपहासोऽयमुत्तमः।।७५।।

(भविष्य पुराण प्रति सर्ग खण्ड ४ अ. १७)

अर्थ—कभी भगवान अत्रि मुनि अपनी अनसूया के साथ गंगा किनारे रहते थे और घोर तप करते हुए ब्रह्म के ध्यान में मग्न रहते थे।६७। वहां पर ब्रह्मा, विष्णु व महादेव अपनी–अपनी सवारियों में बैठकर पहुंचे और उनसे श्रेष्ठ वचन बोले।६८। इनकी बातों को सुनकर मुनि ने कोई उत्तर न दिया और परमात्मा के ध्यान में तल्लीन रहे।६९। उनके भावों को देखकर तीनों देवता मुनि पत्नी अनसूया के समागम के लिए कहने लगे।७०। (लिंग) अपनी उपस्थेन्द्रिय को (हस्तः) हाथ में धारण किये हुए। (स्वयं रुद्रो) महादेव जी (विष्णुस्तद्रसवर्धनः) विष्णु जी उसमें रस बढ़ाते हुए (ब्रह्माः) ब्रह्मा जी (काम) कामदेव के प्रभाव से (ब्रह्मलोपः) ज्ञान का लोप करते हुए, मोहित होकर (स्थितस्या वशं गतः) उसके वश में हो गए, आसक्त हो गये। (रति देहि मदापूर्णे) हे मस्त आंखों वाली! हमें अपने साथ रति करने दे। (नो चे प्राणान्स्यत्यजाम्हम्) वरना हम प्राण छोड़ते हैं, तेरे सिर हत्या देते हैं।७१। पतिव्रता अनसूया उनके इन अशुभ वचनों को सुनकर कुछ न बोली और तीनों देवताओं के प्रति बड़ी क्रोधित हुई।७२। (मोहितास्तत्रते देवाः) काम से मोहित हुए उन देवताओं ने (गृहीत्वा तां बलात्तदा) उसे बलपूर्वक पकड़ लिया (मैथुनाय समुद्योगं चक्रुर्माया विमोहितः) महादेव जी की माया से विमोहित होकर वे जबरदस्ती मैथुन की चेष्टा करने लगे।७३। (तदा क्रुद्धा....प्रिया) तब क्रोधित होकर मुनिप्रिया अनसूया नें उनको शाप दे दिया। (मम... विमोहिता) काम से विमोहित हुए तुम मेरे पुत्र बनोगे।७४। (महादेवस्य वै लिंगं) महादेव की उपस्थेन्द्रिय। (ब्रह्मणोस्य महाशिरः) ब्रह्मा का यह बड़ा सिर (चरणो वासुदेवस्य) विष्णु के चरण (पूजनीया नरैः सदा) मनुष्यों के द्वारा सदैव पूजे जाया करेंगे और (भविष्यन्ति सुर श्रेष्ठा उपहासोऽयमुत्तमः) हे श्रेष्ठ देवताओ! तुम्हारी सदा खूब मजाक बना करेगी।

पुराण के इस प्रमाण से स्पष्ट है कि अत्रि ऋषि के ब्रह्म के ध्यान में तल्लीन होने की अवस्था में अवसर पाकर गंगा के किनारे तीनों देवताओं ने बलपूर्वक पकड़ कर उनकी सती–साध्वी पत्नी अनसूया के साथ बलात्कार की चेष्टा की थी। उस पर मुनि पत्नी ने शिवजी को लिंग की पूजा का शाप दिया था और तभी से शिवजी की उपस्थेन्द्रिय की पूजा अनसूया के शाप के कारण प्रचलित हुई है। एक सती के साथ तीनों देवताओं की इस अनुचित चेष्टा को कोई भी व्यक्ति कमीनी एवं पापपूर्ण कहे बिना न रहेगा। अस्तु शिवलिंग पूजा का यह भी एक रहस्य हुआ?

जलहरी क्या है?

शिवलिंग की मूर्ति के चारों ओर एक नाली सी बनी होती है इसे जलहरी कहते हैं। यह जलहरी वास्तव में क्या है, यह बहुत कम लोग जानते हैं। पौराणिक सिद्धान्तानुसार जलहरी शिवलिंग के साथ पार्वती के गुप्तांग की प्रतिमूर्ति (नकल) रूप में पूजी जाती है। इसके लिए पुराण का प्रमाण दृष्टव्य है।

गिरिजां योनि रूपां च वाणंस्थाप्य शुभंपुनः।
तत्र लिंगं च तत्स्थाप्य पुनश्चैवाभिमन्त्रयेत्।३७।

(शिवपुराण कोटि रुद्र संहिता अ. १२)

अर्थ–(गिरिजां) पार्वती के (योनिरूपां) नारी–जननेन्द्रिय के आकार की (शुभं वाणं स्थाप्य) शुभ जलहरी बनाकर फिर (तत्र लिंगं) उसमें शिव उपस्थेन्द्रिय को (तत्स्थाप्य) स्थापित करके (पुनश्चैवाभिमन्त्रयेत्) फिर उसका पूजन करो।

शिवलिंग शिव की मूत्रेन्द्रिय है

प्रत्यक्षमिह देवेन्द्र पश्य लिंग भगान्वितम्।
देवदेवेन रुद्रेण संहार हेतुना ।२७। (महा. अनु. पर्व अ.१४)

अर्थ–हे देवेन्द्र! (सृष्टि संहार हेतुना) सृष्टि और संहार के कारणभूत (देव देवेन्द्र रुद्रेण) देवाधिदेव शिवजी ने (लिंग भगान्वितम्)

पुरुष व नारी जननेन्द्रिय से चिन्हित लिंग मूर्ति धारण की है (प्रत्यक्षमिह पश्य) उसे आप प्रत्यक्ष देख लें।

इस प्रमाण से स्पष्ट है कि शिवलिंग की मूर्ति नर व नारी की जननेन्द्रियों की संयुक्त प्रतिमूर्ति (नकल) है।

जननेन्द्रियों की पूजा का विधान

भगेन सहितं लिंगं भगलिंगेन संयुतत्।
इहामुत्र च भोगार्थं नित्य भोगार्थमेव च।।१०४।।
भगवत्त महादेवं शिवं लिंगं प्रपूज्येत्।।१०५।।
स्वचिन्ह पूजनात्प्रीतश्चिन्ह कार्य नवीयते।
चिन्ह कार्य तु जन्मादि जन्माद्यं विनिविर्तते।१०८।

(शिव. विन्धे. सं. अ. १६)

अर्थ—नारी जननेन्द्रिय सहित पुरुष जननेन्द्रिय और पुरुष जननेन्द्रिय सहित नारी जननेन्द्रिय यही दोनों भोग के निमित्त और नित्यभोग के लिए है। १०४। भगवान महादेव को लिंग रूप से पूजन करे।१०५। शिवजी अपने पुरुष चिन्ह को पूजने से प्रसन्न हो जाते हैं। इससे चिन्ह कार्य नहीं प्राप्त होता है (अर्थात् मोक्ष हो जाती है) चिन्ह कार्य जन्मादि का कारण है। चिन्ह (लिंग) पूजने से जन्मादि में निवृत्ति हो जाती है।१०८।

शिवलिंग व जलहरी का स्पष्टीकरण

लिंगवेदी महादेवी लिंग साक्षान्महेश्वरः।१३।
तयोः सम्पूजना देव स च सा समर्चितौ।१४

(शिव पु० वायु सं० उत्तर खं.३४)

अर्थ—लिंगवेदी (जलहरी) पार्वती है और लिंग साक्षात् शिवजी हैं। इनके पूजन से दोनों का पूजन हो जाता है।

शिव नाभियुक्त पूजा का विधान

शिवनाभिमयं लिंग प्रति पूज्या महर्षिभिः।
श्रेष्ठञ्च सर्वलिंगम्यस्तस्मात् पूज्यं विशेषतः।

(शब्द कल्पद्रुम कोष लिंग शब्द की व्याख्या पृ. २२०, खं०४)

अर्थ—(शिव नाभिमयं लिंग) शिव की नाभि से युक्त लिंग (प्रति पूज्य महर्षिभिः) महर्षियों द्वारा पूजा जाता है। (श्रेष्ठञ्च सर्वलिंग) वह सब लोगों में श्रेष्ठ होता है। (तस्मात्) इसलिए (पूज्यं विशेषतः) विशेष रूप से उसका पूजन करना चाहिए। इससे स्पष्ट है कि केवल शिवलिंग पूजने की अपेक्षा शिव की नाभियुक्त उपस्थेन्द्रिय की पूजा विशेष उपयोगी होती है।

इन प्रमाणों से स्पष्ट हो गया कि शिवलिंग पूजा के रूप में नर व नारी की उपस्थेन्द्रियां शिवलिंग व जलहरी के रूप में मन्दिरों में पूजी जाती है। पाठक पूछ सकते हैं कि शिव को उपस्थेन्द्रिय पूजा का शाप अनुसूया से व्यभिचार की चेष्टा करने पर लगा था, पर पार्वती को उसके साथ क्यों घसीटा गया है। इस विषय में पुराणों में एक विस्तृत कथा दी है। हम संक्षेप में उस कथा को यहां उद्धृत करते हैं।

शिव का स्वरूप योनि लिंग होगा-भृगु का शाप

दिलीप उवाच—महाभागवंत श्रेष्ठो! रुद्रस्त्रिपुरं घातकः।
कस्माद्विगर्हितं रूपं प्राप्तवान् सहभार्यया।।
योनि लिंग स्वरूपं च कथं स्यात् सुमहात्मनः।
पंचमुखश्चतुर्बाहुः शूल पाणिस्त्रिलोचनः।।

अर्थ—राजा दिलीप ने वशिष्ठ से प्रश्न किया—त्रिपुर दैत्य को मारने वाले पांच मुंह, चार हाथ व तीन नेत्र वाले त्रिशूलधारी शिव का पार्वती सहित गर्हितस्वरूप योनि लिंग कैसे हो गया? इस शंका का समाधान कीजिए।

इस पर वशिष्ठ जी ने बताया कि एक बार मुनियों की बैठक में यह निश्चय हुआ था कि इन तीनों देवताओं में कौन–सा देवता सत्वगुण वाला है, इसका निर्णय किया जावे। इसके लिए सबने भृगु ऋषि को नियत किया, और उन्हें तीनों देवों ब्रह्मा, विष्णु व महादेव की परीक्षा लेने को भेजा। इस निश्चय के अनुसार भृगु ऋषि के शंकर के यहां जाने का वर्णन पुराणकार ने जो किया है उसे हम संक्षेप में यहां देते हैं—

एवमुक्तोभृगुस्तूर्ण कैलाशं मुनि सत्तमः।
जगाम वायु मार्गेण यत्रास्ते वृषभध्वजः।२६।
गृहद्वारमुपागम्य शंकरस्य महात्मनः।
शूल हस्तं महारौद्रं नन्दिंऽब्रवीद्विजः।२७।
सम्प्राप्तोऽहं भृगु विप्रो हरं दृष्टुं सुरोत्तमम्।
निवेदयस्व मां शीघ्रं शंकराय महात्मने।२८।
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा नन्दी सर्व गणेश्वरः।
उवाच पुरुषं वाक्यं महर्षिममितौजसम्।२६।
असान्निध्यः प्रभोस्तस्य देव्या क्रीडति शंकरः।
निवर्त्तस्व मुनिश्रेष्ठ! यदि जीवितुमिच्छसि।३०।
एवं निराकृतस्तेन तत्रातिष्ठन्महातपाः।
बहूनि दिवसान्यस्मिन् गृहद्वारि महेशितुः।
तत्र क्रोध समाविष्टो भृगुशाप मदान्मुनिः।३१।
निविष्टस्तमसा मूढो मां न जानाति शंकरः।
नारी समागमतोऽसौ यस्मान्मामवमन्यते।३२।
योनि लिंगस्वरूपं वैरूप तस्मातस्य भविष्यति।३३।
रुद्रभवताश्चये लोके भस्म लिंगास्थिधारिणः।
ते पाखण्डत्वमापन्ना वेदबाह्या भवन्तु वै।२६।

(पद्म पुराण उत्तर खण्ड अ. २५५ कलकत्ता)

भावार्थ—ऋषियों से विदा होकर भृगु ऋषि कैलाश पर गये जहां महादेव जी रहते थे। शंकर के द्वार पर पहुंच कर भृगु जी ने शूल धारण किये। महारौद्र रूप नन्दी को देखा और वे उससे बोले, मैं भृगु ब्राह्मण हूं। शंकर जी को देखने (मिलने) आया हूं। अतः मेरे आने की बात शंकर जी से जाकर शीघ्र ही कह दो। नन्दी उनके वचन सुनकर उनसे बोला कि शंकर जी एकांत में पार्वती के साथ क्रीड़ा कर रहे हैं। अतः तुम जीवित रहना चाहते हो तो यहां से तुरन्त भाग जाओ। इस प्रकार नन्दी की बात सुनकर भृगु जी वहीं शंकर के द्वार पर बैठ गये

और बहुत दिनों तक बैठे रहे। बहुत दिन होने पर भी जब उनसे शिवजी नहीं मिले तो अत्यन्त क्रोधित होकर भृगु जी ने शंकर को शाप दिया कि तामस में फंसा हुआ शंकर मुझे नहीं जानता है, वह नष्ट हो जावेगा। नारी के साथ समागम में तल्लीन शंकर ने मेरा अपमान किया है। अतः उनका स्वरूप भी योनि लिंग हो जावेगा, शंकर के भक्त लोग जो लोक में भस्म, लिंग व हड्डी धारण करेंगे, वे सब घोर पाखण्डी एवं वेद से बहिष्कृत होंगे।

हमने ऊपर के प्रमाण में देखा कि शिव की 'योनि लिंग' स्वरूप के पूजा होने का कारण भृगु ऋषि का शाप है, जो उन्होंने शिव को पार्वती के साथ रमण में तल्लीन होने के कारण दिया था। महाराजा दिलीप के प्रश्न के उत्तर में शिव के इस गर्हित स्वरूप का यह एक मुख्य कारण बताया है। अतः शिवलिंग पूजा के द्वारा शिव की जो पूजा की जाती है, वह वास्तव में शिव-पार्वती की जननेन्द्रियों की ही पूजा होती है। **शिवलिंग व जलहरी शिव व पार्वती की जननेन्द्रियों की प्रतिमूर्ति** है, यह इस प्रमाण से भी स्पष्ट हो जाता है। कितनी लज्जा की बात है कि लोग वास्तविकता न समझकर शिव लिंग पूजा के रूप में भ्रष्ट जननेन्द्रिय पूजा की वाममार्गीय सभ्यता का अन्धानुकरण कर रहे हैं, जोकि देश में वास्तव में दुराचार के प्रचार के लिए प्रारंभ की गई थी। इसी संबंध में पौराणिक साहित्य में एक कथा और भी आती है कि जगत में जो असंख्य शिवलिंग मिलते हैं, यह कैसे पैदा हुए हैं। कथा इस प्रकार है-

शिवलिंगों की पैदायश का इतिहास

संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रन्थ '**शब्द कल्पद्रुम कोष**' चतुर्थ काण्ड, खण्ड १ व २ में लिंग शब्द की व्याख्या में लिखा है कि राजा दक्ष की पुत्री सती से विवाह होने के बाद-

गताः सर्वेमहेशोऽपि सत्या सह तदा गृहम्
जगामरेमे सत्या च चिरं निर्भर मानसः।।
अथ काले कदाचित् सत्या सह महेश्वरः।

रमे न शेके तं सोढुं सती श्रान्ता भवेत्तदा।।
उवाच दीनयावाचा देवदेव जगद्गुरुम्।
भगवन्नहि शक्नोमि तवभारं सुदुसहम्।।
क्षमस्व मां महादेव कृपां कुरुजगत्पते।
निशम्य वचनं तस्या भगवान् वृषभध्वज।।
निर्भरं रमण चक्रे गाढ़निर्दयमानसः।
कृत्वा सम्पूर्णरमणं सती च त्यक्त मैथुना।।
उत्थानाय मनश्चक्रे उभयोस्तेजः उत्तमम्।
पपात धरणीं पृष्टे तैः व्याप्तखिलं जगत्।।
पाताले भूतले स्वर्गे शिव लिंगास्तदाभवन्।
तेनभूत्वा भविष्याच्च शिवलिंगाः सयोनियः।।
यत्र लिंग तत्र योनियन्त्र योनिस्ततः शिवः।
उभयोश्चैव तेजोभिः शिवलिंग व्यजायत्।।

(इति शिव लिंगोत्पति कथनमिति नारदपंचरात्रान्तर्गत तृतीय रात्रे प्रथमाध्याये नारद ब्रह्म संवादः)

अर्थ—सती के विवाह के बाद सब देवतागण अपने घरों को चले गये और शंकर भी अपनी चिरकाल की मनोकामना पूर्ण करने के लिए सती के रमण करने के लिए अपने गृह में प्रविष्ट हो गए। उस काल में जब शंकर के साथ रमण करने से सती थक गई। तो शिवजी से बोली, हे जगत गुरु? आपके दुःसह बोझ को मैं सह नहीं सकती हूं, हे जगत्पते! मुझे क्षमा करो। तब महादेव जी ने बड़ी निर्दयता के साथ अपने मन को संतुष्ट करने के लिए खूब रमण किया। सम्पूर्ण रमण कर चुकने पर छोड़ी हुई सती ने उठने की इच्छा की तब दोनों का उत्तम शुक्र पृथ्वी पर गिर पड़ा और उससे जगत व्याप्त हो गया। उस वीर्य से तीनों लोकों में योनियों समेत शिवलिंग पैदा हो गए तथा आगे होंगे, वे योनियों सहित इसी तेज से पैदा हुए हैं तथा होंगे (यत्र) जहां (लिंग) नर उपस्थेन्द्रिय होगी (तत्र योनिः) वहां नारी जननेन्द्रिय होगी, वहीं शिवलिंग

अवश्य होगा (उभयोश्चैव तेजोभि) इन दोनों के तेज से ही (शिवलिंग व्यजायत) शिवलिंग उत्पन्न हुए हैं।

इस प्रकार जगत में जो शिवलिंग मिलते हैं उनकी उत्पत्ति के संबंध में पौराणिक शास्त्रकारों ने उपरोक्त कथा अपने ग्रन्थों में लिखकर यह बताया है कि उनकी उत्पत्ति भी शिव व सती के समागम के पश्चात् हुए शुक्र व रजःपात के तेज से हुई है। गत पृष्ठों में हमने बताया है कि शिवलिंग वास्तव में शिव की उपस्थेन्द्रिय तथा जलहरी निश्चित रूप में पार्वती की जननेन्द्रिय की प्रतिमूर्ति है। भारत का कोई भी पौराणिक विद्वान इन प्रमाणों का खंडन नहीं कर सकता है। जो लोग शिवलिंग को ज्योतिलिंग व जलहरी को कारण सहित प्रकृति बता बैठते हैं, वे जनता को धोखे में डालने की गलत बात कहते हैं। उपरोक्त प्रमाणों का दूसरा अर्थ किया ही नहीं जा सकता है। भारत में जो पुरानी मूर्तियां मिली हैं, उनमें मध्ययुग की प्राचीन शिव प्रतिमायें भी मिलती हैं जिनमें शिव की उपस्थेन्द्रिय की पूजा का विधान स्पष्ट प्रतीत होता है। हिन्दुओं के प्राचीन तीर्थ जगन्नाथपुरी आदि के मन्दिरों में उस बर्बर पौराणिक सभ्यता के युग की नग्न प्रतिमायें नर व नारी को शिश्नेन्द्रिय की पूजा का खुला प्रदर्शन करती हैं, जिन्हें देखकर प्रत्येक भारतीय सभ्यताभिमानी का सर लज्जा से नीचा हो जाता है, जिन्हें देखकर विदेशीय पर्यटकों ने भारतीय सभ्यता व संस्कृति को संसार की निगाह में काफी बदनाम किया है। परन्तु हमारे देश में धर्म के अन्धभक्त लोग बजाय इसके कि इस उपस्थेन्द्रिय पूजा की अव्यवहारिक प्रथा को बन्द करें, उसके प्रचार के लिए निरन्तर शिव मन्दिर बनवाते जा रहे हैं। हमारे देश का करोड़ों–अरबों रुपया, जो शिक्षा व धर्म प्रचार आदि राष्ट्रोत्थान के कार्यों में व्यय किया जाना चाहिए था, मूत्रेन्द्रियों की अव्यवहारिक पूजा के लिए शानदार मन्दिर बनवाने में उनके पीछे जायदाद लगाने में बरबाद किया जाता रहा है। जिन्हें देखकर मोहम्मद बिनकासिम, महमूद गजनवी, तैमूरलंग जैसे विधर्मी एवं विदेशी सदा भारत–भूमि पर आक्रमण करने व उसे लूटते रहे पर हमारे देश के पण्डित–पुजारियों को भी समझ

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 2491
...विद्यालय, कुरुक्षेत्र

शिवलिंग पूजा?

आज भी इस ज्ञान–विज्ञान के युग में हमारे देश की जनता मूत्रेन्द्रियों की पूजा तथा उपासना करने वाली बनी रहे, यह कितने दुख की बात है?

मन्दिर की लूट का नमूना

सन् ७१२ में मोहम्मद बिनकासिम ने भारत पर आक्रमण किया और राजा दाहिर को मार कर नारायण कोट का प्रसिद्ध मन्दिर लूटा था, उसमें ४० देगें सोने की, जिनमें १७२०० मन सोना भरा था, ६०० सोने की विशाल मूर्तियां, जिनमें एक–एक मूर्ति ३०–३० मन की थी, कई ऊंट भरकर हीरा, पन्ना, मोती, मणियां आदि लूटकर ले गया। इसके लगभग ३०० वर्ष बाद महमूद गजनवी ने नगरकोट का मन्दिर लूटा, इसमें ७०० मन सोना, २०० मन चांदी, २० मन हीरे, मोती व जवाहिरात उसके हाथ लगे। अकेली एक जंजीर जिसमें घण्टा लटक रहा था और जो ४० मन सोने की थी, सोमनाथ के मन्दिर में से हाथ लगी थी। इस मन्दिर में असंख्य हीरा, मोती, मणियां, सोना, चांदी वह लूट कर ले गया। इस प्रकार भारत के हजारों मन्दिरों का न जाने कितने (कल्पनातीत) मूल्य का माल विदेशी आक्रमणकारी सदा लूट–लूट कर भारत से ले जाते रहे हैं।

सोमनाथ के शिव मन्दिर के शिवलिंग का एक टुकड़ा आज भी उसी समय का गजनी की मस्जिद की सीढ़ियों पर लगा है, जिस पर पैर रखकर नमाजी यवन मस्जिद में जाया करते हैं और वह टुकड़ा उनके चरण स्पर्श किया करता है। मोहम्मद गौरी ने जब कन्नौज को लूटा तो १००० मन्दिर विध्वंस करके उनकी लूट का सोना, चांदी व जवाहरात ४०० ऊंटों पर लाद कर अफगानिस्तान को ले गया था। भारत में विदेशियों द्वारा लूट का इतिहास इतना बड़ा है कि उस पर एक स्वतंत्र विशाल ग्रन्थ लिखा जा सकता है। हमने यहां चन्द नमूने मात्र पेश किये हैं।

शिवलिंग शिवजी की मूत्रेन्द्रिय ही है, यह ऊपर के प्रमाणों से भली प्रकार सिद्ध है। हम महाभारत ग्रन्थ से दो प्रमाण इसकी पुष्टि में और देते हैं।

शिवलिंग ब्रह्मचर्य में स्थित है

नेत्येन च ब्रह्मचर्येण्ण लिंगमस्य यदास्थितम्।
महत्त्यस्य लोकाश्च प्रियं ह्येतन्महात्मनः।१५।
विग्रहं पूजयेद्यो वै लिंगवापि महात्मनः।
लिंगपूजायिता नित्यं महती श्रियमश्नुते।१६।
ऋषयश्चापि देवाश्च गन्धर्वाप्सरसस्तथा।
लिंगमेवार्चयतिस्म यत्तदूर्ध्वं समास्थितम्।१७।

(महाभारत अनुशासन पर्व. १६१)

अर्थ—महादेव की उपस्थेन्द्रिय सदा ब्रह्मचर्य में स्थिर रहती है और उसको लोग पूजते हैं। महात्मा को यही प्रिय है। जो महात्मा की उपस्थेन्द्रिय को पूजता है या महात्मा के शरीर को पूजता है वह बड़ी भारी सम्पति को पाता है। ऋषि और देवता गन्धर्व व अप्सरायें सदा उसी उपस्थेन्द्रिय को पूजते हैं, जो सीधा ऊपर को खड़ा है।

इस प्रमाण में बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में बताया है कि शिवजी की उपस्थेन्द्रिय ब्रह्मचर्य में स्थित है। ब्रह्मचर्य का संबंध जननेन्द्रिय के संयम द्वारा वीर्य की सुरक्षा से है। अतः साधारण बुद्धि वाला मनुष्य भी यह समझ सकता है कि शिवलिंग शिवजी की मूत्रेन्द्रिय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। हम इससे भी स्पष्ट प्रमाण एक और देते हैं।

शिवलिंग का उपस्थेन्द्रिय होने का खुला सबूत

न शुश्रुम यदन्यस्यलिंगमभ्यर्चित सुरैः।२३०।
कस्यान्नस्य सुरैः सर्वैलिंग भुक्त्वा महेश्वरम्।
अर्चयेऽर्चितपूर्वा ब्रूहिग्यदिस्ति ते श्रुतिः।२३१।
यस्य ब्रह्मा च विष्णुश्च त्वं चापि सह दैवतां।
अर्चयेथा सदालिंगं तस्माच्छ्रेष्टत मोहितः।२३२।
न पद्मांका चक्रांका न वज्रांका वतः प्रजाः।
लिंगांका च भगांका च तस्मान्माहेश्वरी प्रजाः।२३३।
देवयाः कारणरूपभावजनिताः सर्वा भगांका स्त्रियः।

लिंगनापि हरस्य सर्वपुरुषाः प्रत्यक्ष चिन्हकलाः।२३४।
पुल्लिंग सर्वमीशानं स्त्रीलिंग विद्धि चाप्युमाम्।
द्वाभ्यां तनुभ्यां व्याप्तं हि चराचरमिदं जगत्।२३५।

(महाभारत अनुशासन पर्व अ. १४)

अर्थ—हमने नहीं सुना कि देवताओं ने किसी अन्य की उपस्थेन्द्रिय की पूजा की हो। महादेव को छोड़कर दूसरे किसकी उपस्थेन्द्रिय की पूजा की हो। सब देवताओं ने पूर्वकाल में या अब की है, कहिये। यदि आपने सुना हो। जिसकी उपस्थेन्द्रिय को ब्रह्मा, विष्णु व आप सब देवताओं के साथ सदा पूजते हैं, इसलिए वही इष्टतम है। जिस कारण से प्रजापद्म, चक्र या वज्र चिन्ह वाली नहीं है। अपितु सारी प्रजा लिंग तथा भग के चिन्ह से अंकित पैदा की है। जितने पुल्लिग हैं वे सभी महादेव तथा जो स्त्रीलिंग हैं वे सभी पार्वती हैं। इन दोनों के शरीर से सारा जगत व्याप्त है।

जगत् में सारे ही पुरुष (नर) जो पुलिंग होने का चिन्ह धारण करते हैं, वही चिन्ह शिवलिंग हैं। अर्थात् शिवलिंग शिव जननेन्द्रिय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, यह बात इस प्रमाण से नितान्त स्पष्ट है। कितने आश्चर्य की बात है कि ब्रह्मा और विष्णु भी शिव उपस्थेन्द्रिय की पूजा किया करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह तीनों देवता कभी वाममार्गीय हो गये होंगे और भैरवी चक्र में ये सारी ऊटपटांग हरकतें किया करते हैं।

भगवान परम पवित्र हैं, ऐसा संसार के सभी मतवादी मानते हैं। अतः जो भी वस्तु सनातनी भगवान की प्रतिमा को छू जावे, वह भी अति पवित्र हो जानी चाहिए, यह सब बुतपरस्तों का विश्वास है। इसी प्रकार शिवजी यदि देवता हैं तो उनको छू जाने वाली वस्तु, उनका मन्दिर, उनके नाम, प्रसाद आदि सभी परम पवित्र माना जाना चाहिए। किन्तु पुराणों में इसके विपरीत वर्णन मिलता है और

उससे यह भी सिद्ध होता है कि शिवलिंग शिवजी की उपस्थेन्द्रिय के अतिरिक्त और कोई वस्तु नहीं है। हम कुछ प्रमाण इस विषय में भी उपस्थित करते हैं।

शिवलिंग को छू जाने वाली वस्तु अपवित्र होती है।

स्पृष्ट्वा रुद्रस्य निर्माल्यं सवासा आप्लुतः शुचिः।

अर्थ—शिवलिंग पर चढ़ी हुई वस्तु कोई छू भी ले तो कपड़े सहित स्नान करने पर शुद्ध होता है।

अनर्हम् नैवेद्य पत्रपुष्पफलजलम्।
मह्यम् नैवेद्य सकलं कूप एवं विनिक्षिपेत्।

(पद्म पुराण, पाताल खण्ड अ. ११४ कलकत्ता)

अर्थ—शिवजी कहते हैं कि मेरे नैवेद्य पत्र, पुष्प, फल और जल कोई भी ग्रहण करने योग्य नहीं है। मेरे ऊपर चढ़ाया हुआ नैवेद्य (प्रसाद) कुंए में फेंक दो।

"शिवलिंग पर चढ़ा अन्न, पंडा का अन्न और तीर्थों में दान लेने वाले ब्राह्मण का अन्न निषिद्ध है।"

(देवी भागवत भाषा स्क. ६, अ. ८०, पृ. ७५६)

लिंगो परिचयेद् द्रव्यं तद् ग्राह्यं मुनीश्वरः।
सपवित्रं च तज्ज्ञेयं यल्लिगं स्पर्श बाह्यतः।।

(शिव पुराण विन्ध्येश्वर सं. २२ श्लोक २०)

अर्थ—हे मुनीश्वरो! शिवलिंग से जो छुई हुई न हो, वह वस्तु ग्रहण करने योग्य और जो लिंग पर चढ़ा दी गई, वह ग्रहण करने योग्य नहीं है।

शिव-प्रसाद शराब-मांस व विष्ठा के समान है।

नान्यदेव तुवीक्षेत् ब्राह्मणो न च पूजयेत्।
नान्यः प्रसादं भुंजीत नान्यस्यायतनं विशेत्।७१।
इतरेषांतु देवानां निर्माल्यं गर्हितं भवेत्।१०४।
सकृदेव हि योऽश्नाति ब्राह्मणो ज्ञान दुर्बलः।

निर्माल्यं शंकरादीनां च चाण्डालो भवेद्ध्रुवम्।१०५।
कल्पकोटि सहस्राणि पच्यतै: नरकाग्निना।
निर्माल्यं भोद्विज श्रेष्ठाः रुद्रादीनां दिवौकसाम्।२०६।
रक्षोयक्ष पिशाचान्नं मद्यमांस समं स्मृतम्।१०७।

(पद्म पुराण उत्तर खण्ड अ. २५५ कलकत्ता)

अर्थ—ब्राह्मण दूसरे देवता का न तो दर्शन करे और न पूजे, न उसके प्रसाद को खाये, न उसके मन्दिर में जाये, न दूसरे देवताओं का प्रसाद ग्रहण करे। जो मूर्ख ब्राह्मण शिव निर्माल्य को खाता है, वह मानो विष्ठा खाता है। शंकरादि के निर्माल्य को खाने वाला निश्चय चाण्डाल होता है। वह नरक की आग में करोड़ों कल्प तक पड़ा रहता है। हे ब्राह्मणो! शिव आदि देवताओं का निर्माल्य खाना व मांस के तुल्य है।

इस प्रमाण में शिवलिंग के ऊपर चढ़े प्रसाद की कितनी निन्दा की गई है। यह शिवभक्त लोग आंख खोलकर देखें और सोचें कि शिवलिंग जिसकी वे रात-दिन पूजा किया करते हैं कितनी अपवित्र वस्तु है। शंकर के ऊपर चढ़ा प्रसाद खाना महापाप है। उसे खाने वाला चाण्डाल होगा, यह पुराण का फैसला है। अब हम दिखाते हैं कि शिवजी की वास्तविक पूजा शिवजी के वास्तविक भक्त वाममार्गी लोगों ने किस चीज से करने का विधान किया है—

शराब मांस व रज-वीर्य से शिवजी का पूजन करो, शिवजी का आदेश

मधु कुम्भसहस्रैस्तु मांसभार शतैरपि।
न तुष्यामि वरारोह! भगलिंगामृतं बिना।

(कुलार्णव तन्त्र उल्लास ८)

अर्थ—शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती! हजारों घड़े शराब तथा सैकड़ों भार मांस से भी मेरी पूजा की जावे तो भी मैं भग लिंगामृत (रज-वीर्य) के बिना कभी सन्तुष्ट नहीं होता हूं।

शिव मन्दिर में देव पूजन व हवन का निषेध

देवालयेषु सर्वेषु वर्जयित्वा शिवालयम्।
देवानां पजनं राजनग्नि कार्येषु वा विभो।५५

(भविष्य पुराण ब्रह्म पर्व अ. २१०)

अर्थ—हे राजन्! शिवालय को छोड़कर बाकी सब मन्दिरों में देव पूजन व हवन जैसे पवित्र कार्य करने चाहिए।

इन प्रमाणों के आधार पर हमने आपको बताया कि शिवलिंग वास्तव में शिव मूत्रेन्द्रिय ही है, अतः बड़ी गन्दी वस्तु है। **सनातन धर्म की शाखा वाममार्ग के शास्त्रों में विधान है कि शराब-मांस आदि से शिवजी की पूजा की जानी चाहिए।** जो वस्तु शिवलिंग को छू जाये, उसे छूना भी पाप है। शिवलिंग पर चढ़ी हुई सभी वस्तुएं अशुद्ध हो जाती हैं। उन्हें कोई भी न छुए, उन चीजों को कुंए में डाल दें। **तब फिर हम पूछते हैं कि** शिवलिंग को पूजना, उस पर सिर टेकना, उसे चन्दन लगाना, उस पर फल—फूल, दूध आदि चढ़ाना, उस पर गंगाजल छोड़ना, बेलपत्र चढ़ाना आदि पाप नहीं तो क्या है?

सनातन धर्म के अनुसार शिवजी ने गंगा को सिर पर धारण किया था। **गंगा को शिव-तनया (शिवपुत्री) भी कहते हैं।** तो ऐसी पवित्र गंगा के जल को शिवलिंग पर चढ़ाना यह क्या कोई बुद्धिमानी की बात है? शिव मन्दिर में भजन, पूजन व हवन का निषेध पुराण ने किया है, तब फिर शिव मन्दिरों को बनवाना, उनमें भजन करना सनातन धर्म के शास्त्रों के विरुद्ध होने से पाप कर्म क्यों नहीं है? भजन तो पवित्रतापूर्वक पवित्र स्थान में किया जाता है। शिव मन्दिर तो पुराणों ने अपवित्र स्थान बताये हैं, उनमें जाकर धूप, दीप नैवेद्य शिवलिंगों पर चढ़ाना क्या कोई अक्लमन्दी की बात है? चन्दन व धूप आदि को मूत्रेन्द्रियों पर चढ़ाना पागलपन नहीं तो क्या कहा जायेगा? शिवजी का प्रसाद, शराब, मांस व विष्ठा के समान पुराण ने बताया है। तब फिर पौराणिक बन्धु ऐसा गन्दा प्रसाद क्यों बांटते हैं? शराब, मांस, रज-व वीर्य से शिवजी की

पूजा का विधान है तो क्या शंकर कोई अघोरी सम्प्रदाय का लीडर था, उसे इन घृणित चीजों से नफरत नहीं थी?

हमें कहना है कि सनातनी ब्राह्मण तो स्वार्थ में अन्धे बने हुए हैं। पत्थर पूजते–पूजते उनकी अक्ल पत्थर की हो गई है, वे न तो पुराणों को पढ़ते हैं, न अक्ल से सोचने का काम लेते हैं। सदा जनता को स्वार्थवश बहकाते रहते हैं। पर जनता को भी इतना अन्धविश्वासी नहीं होना चाहिए कि जो भी चाहे जैसे धर्म के मामले में मूर्ख बनाता रहे और वह भेड़ों के समान उसके पीछे चले जाकर अपने जीवन को नष्ट करता रहे।

कुछ ठीक है इस शरारत को हमारे धर्म के ठेकेदारों ने ईश्वर के स्थान पर शिवजी की मूत्रेन्द्रिय की पूजा (पुराणों के अनुसार) शिवलिंग के रूप में देश में जारी करा दी और भोला हिन्दू उसे ही ईश्वर मानकर पूजने लगा। मेरे देश के भाग्य फूट गए, उस दिन से जब से यहां के निवासी ईश्वर को भूलकर योनि लिंग की प्रतिमूर्ति शिवलिंग को ईश्वर की जगह पूजने लगे। मेरे देशवासियो! तुमको अपनी इस भोली अक्ल पर अब जरा लाज आनी चाहिए। तुम्हारे इस भोलेपन के कारण मेरा भारतवर्ष बड़ा कलंकित हुआ है।

पुराणों ने शिव के भक्तों की भी बहुत निन्दा की है। उसका मुख्य कारण शिवजी को चरित्र की दृष्टि से बहुत ही आपत्तिजनक रूप में उपस्थित करना है। जब विद्वानों ने शिवलिंग पूजा के प्रचार की ओर ध्यान दिया तो उन्होंने इस बुराई को रोकने के लिए जनता को सचेत किया था। यहां हम कुछ प्रमाण इस सम्बन्ध में उपस्थित करते हैं जिनसे आप यह देख सकेंगे कि शिव के इस गर्हित स्वरूप में पूजन को देखकर शिव की निन्दा की गई है।

शिव के भक्त पाखण्डी व अछूत हैं

यस्तु नारायणं देव ब्रह्म रुद्रादि दैवतैः।
समत्वं नैव वीक्षेत स पाखण्डी भवेत सदा।११।

किमत्र बहुनोक्तेन ब्राह्मणा येऽप्य वैष्णवाः।
न स्पृष्टव्या न वक्तव्या न दृष्टव्या कदाचन्।३।

(पद्मपुराण उत्तर खण्ड अ. २३५)

अर्थ—जो लोग विष्णु को शिव व ब्रह्मा के समान बताते हैं, वे सब पाखण्डी है। जो ब्राह्मण वैष्णव नहीं है, जो शिव के उपासक हैं, उनको न तो छूना चाहिए, न उनसे बात करनी चाहिए और न उनकी शक्ल ही देखनी चाहिए।

शिव प्रसाद की निन्दा

शिव निर्माल्य भोक्तारश्शिव निर्माल्य लंघव
शिव निर्माल्य दातारः स्पर्शस्तेषां ह्यपुण्यकृत।२६।

(शिव पुराण रुद्र संहिता सृष्टि खं. अ. १८)

अर्थ—शिव के प्रसाद को खाने वाले, शिव प्रसाद को उल्लंघन करने वाले। शिव प्रसाद को देने वाले इन सबको छूना भी पाप को देने वाला है।

शिव को पूजने वाला ब्राह्मण शूद्र होता है।

रुद्रार्चनाद् ब्राह्मणस्त्तु शूद्रेण समतां ब्रजेत।
अक्षभूतार्चनात् सद्यश्चाण्डालत्वमवाप्नुयात्।

(वृद्ध हारीत स्मृति २।४७)

अर्थ—शिव की पूजा करने से ब्रह्माण्ड शूद्र तुल्य हो जाता है। यक्ष तथा भूतों की पूजा करने से तत्काल चाण्डाल बन जाता है, (यक्ष व भूत शिवजी के गण बताये जाते हैं।)

शिवादि के पूजने वाले टट्टी के कीड़े बनेंगे

वैष्णवः पुरुषो यस्तु शिव ब्रह्मादि देवतान्।
प्रणमयेदर्चयेद्वावि विष्टायां जायते कृमि।२६१।

(वृद्ध हारीत स्मृति)

अर्थ—यदि विष्णु का उपासक भूलकर भी शिव, ब्रह्मा आदि को प्रणाम अर्चना करता है, तो वह मर कर पाखाने का कीड़ा बनेगा।

शिवजी की तब तो पूजा करने वाले वैष्णवों की ओर भी बड़ी दुर्गति होगी। इन प्रमाणों से सिद्ध है कि शंकर के घोर भक्त, घोर पाखण्डी व धर्म विरोधी हैं। सनातन धर्म के शास्त्र की व्यवस्था है कि यदि विष्णु भक्त शिव को प्रणाम भी कर बैठे तो विष्ठा का कीड़ा बनेगा।

इन प्रमाणों से एक बात अत्यन्त स्पष्ट है कि शैवों ने जब देश में शिवलिंग पूजा के रूप में घोर दुराचार फैलाने का प्रयत्न किया था तो उसकी प्रतिक्रिया बड़ी प्रबल हुई थी। लोग शिव के उस स्वरूप को सहन नहीं कर सके थे। वास्तव में शिव का वह स्वरूप सहन करने योग्य भी नहीं था। पुराणों एवं महाभारत में शिव की प्रशंसा में जो विशेषण दिए गए हैं, उनके शिव के स्वरूप का एक चित्र सामने आ जाता है। हम उसे यहां उपस्थित करते हैं। आप इस पर विचार करें और सोचें कि क्या यह स्वरूप एक देवता या ईश्वर का हो सकता है अथवा भयंकर आकृति वाले किसी राक्षसादि व्यक्ति का होगा।

शिव का शरीर (नील लोहित) नीले वर्ण का है, वह (शूल धर) शूल धारण करता है, उसके नेत्र (विरूपाक्ष, रक्त, उन्मत लोचन) भयानक, लाल एवं उन्मत्तों जैसे रहते हैं, उसकी (कुटिल भ्रकुटीधरः) भ्रकुटी कुटिल हैं, उसके (उन्मत केशः) बिखरे हुए बाल, व (जटी जटाधर) लम्बी –लम्बी जटायें हैं, वह (कपाली कपाल विलसद हस्तः) हाथों में खप्पर धारण करता है, वह (विवासा) नंगा रहता है, वह (कोपीन वासा) केवल कोपीन पहनता है, वह (नीलकण्ठः) नीले कण्ठ वाला है, उसका शरीर (महाकाय) बहुत विशाल है, वह (भस्मोद्‌धूल विग्रहः) अपने शरीर पर भस्म रमाता है (भस्मप्रिय) वह भस्म से प्रेम करता है, (भस्मशायी) भस्म में लोट लगाता है, भस्म भी साधारण नहीं बल्कि (चिता भस्म संलिप्तश्चिताभस्म परायण) मरघट की चिता की भस्म लपेटता है, (चिता प्रमोदी) चिताओं से उसे प्रेम है, वास्तव में वह (श्मशानाधिपतिः) मरघटों का ही स्वामी है (श्मशानास्थ, श्मशाननिलयस्तिष्ठिति) मरघटों में ही रहता है, मरघट वासी है वह (निशाचर) रात में विचरता है (प्रेताचारी) भूत–प्रेतों के साथ विचरने वाला है (पिनाकी) पिनाक नाम का तीर कमान

धारण करता है (व्याली) वह गले व बांहों में सांप लपेटे रहता है (राहू शनिः) राहु व शनिश्चर के समान संसार को पीड़ा देने वाला है, (कमण्डल धरो) हाथों में कमण्डल धारण करता है, (कायाचारी, कामुकवर) बहुत विषयी व कामियों में भी शिरोमणि, (महालिंग) बड़ी उपस्थेन्द्रिय वाला है, (उर्ध्वलिंग) वह ऊपर को लिंग वाला है, (कामी) बड़ा कामी है, (कामदेव) साक्षात् कामदेव की मूर्ति है, (उग्र) बड़ा क्रोधी है, (उन्मत वेषः) पागलों जैसा भेष रखता है (भयदाता) वह बड़े भयंकर स्वरूप वाला है (कामातुर) वह हर समय विषय भोग की इच्छायें मन में रखता है। व्यभिचार में पकड़े जाने से दारु वन में लिंग कट जाने से लिंगहीन हो गया है, इसलिए उसका नाम (षण्ड) हिजड़ा, नपुंसक हो गया है, परेशानियों के कारण (सर्वदोन्मत्तमानसः) सदैव उसके दिल–दिमाग में उन्मत्तता, पागलपन सवार रहता है। इस पर भी वह (मकरन्द–प्रिय) खुशबू से प्रेम करता है। वह (वृष वाहन) बैल की सवारी करता है, वह (मृग व्याध) व्याध के समान भोले हिरणों का वध शिकार किया करता है। शंकर के इस स्वरूप को देखकर पुराणकारों ने उसे (धूर्त्त) शब्द से संबोधित किया है।

शंकर के उपरोक्त कोष्टकों के अन्दर के उपनामवाची शब्द महाभागवत, स्कन्द पुराण और पुराण, शिव पुराण तथा महाभारत में बड़े गौरव के साथ दिये गये हैं। इसी प्रकार शिव की पत्नी पार्वती जिसे दुर्गा भी कहते हैं, उनके स्वरूप का वर्णन करते हुए पुराणकार ने लिखा है।

दुर्गा का स्वरूप

निशुभ शुभसहत्री मधु मांसासवप्रिया।

(शिव पुराण वायु. सं. अ. ३१ श्लो. ६०)

उग्र दंष्ट्रा चोग्रदण्डा कोटवी च पभौ मधु।३।
सगर्ज्ज साट्हासं च दानवामय माययुः।१२।
दानवानां बहुनां च मांसरुधिरं तथा।३६।

भुक्त्वा पीत्वा भदकाली शंकरान्तिक माययौ।३७।

(शिव पुराण रूद्र सं. युद्ध खं. अ. ३८)

जयति दिगम्बर भूषा सिद्ध बटेशा महालक्ष्मीः।१३।
दिग्वसना विकृतमुखा विकरालदेहा रौद्रभावस्था।१४।
जयति भुजगेन्द्रमणि शोभितकर्णा महातुण्डा।१७।
सिंहारूढ़ा विनिर्गत्य दुर्गाभिः सहिता पुरा।२४।
कुमारी विंशतिभुजाघन विद्युल्लतोपमा।२५।

(भविष्य पुराण उत्तर खण्ड अ. ६१)

अर्थात् दुर्गा निशुम्भ–शुम्भ को मारने वाली, मधु–मांस तथा आसव सेवन करने वाली, तेज दांतों वाली, कठोर डण्डे वाली, शराब पीने वाली, गर्जने वाली, अट्टहास करने वाली, मांस व रुधिर का भोजन करने वाली, नर मुण्डों को पहिनने वाली चण्डी–नंगी–कुरूपना–विकराल देह वाली, डरावनी, बिजली की सी चमकने वाली, कानों में सर्पमणि, सुन्दर कान वाली, लम्बी चौंच, सिंह की सवारी करने वाली कुमारी, बीस भुजा वाली, इत्यादि स्वरूप वाली है।

इसके अतिरिक्त दुर्गा की निम्न उपाधियां पुराण में और दी हैं

उन्नतस्तनी, घनस्तनी, बलि प्रिया, मांसभक्ष्या, रुधिरासव, भक्षिणी, भीम रावा सदृश्य सारण नृत्य परायणा, छिन्न मस्तका, छाग मांसप्रिया, छाग बलि प्रिया–भुजंगा–तामसी वक्ता, तमो गुणवती, रक्त नयना, रक्तेक्षणा, रक्त भक्ष्या, रक्तमतोरणश्रयारक्त दन्ता, रक्त जिह्वा, रक्त भक्षण तत्परा, रक्तप्रिया, रक्ततुष्टा, रक्त पानासुततत्परा:, अष्टहस्तादशं भुजां चा अष्टादश भुजाविन्ता, सिंहपृष्ठ समारूढ़ा, सहस्रभुजराजिता, कामातुरा, काममत्ता, काम मानस, सतनु:युवती, तोवनोद्दिक्ता स्वैरिणी, स्वेच्छ विहरा, योनिरूपा, योनिपीठस्थिता, योनि स्वरूपिणी, कामा, लसिता, चावाणी, कटाक्षक्षेप, मोहिनी मैनका गर्भ संभूता–इत्यादि।

(महाभागवत पुराण अ. २३)

उपरोक्त स्वरूप को देखकर यह सोचा जा सकता है कि यह स्वरूप किसी दिव्य गुणधारी, सौम्य स्वभाव वाली, निष्कलंक, सात्विक प्रकृति वाली आदर्श देवी का हो सकता है अथवा किसी भयानक तामसी प्रकृति की राक्षसी का यह स्वरूप है। शंकर व दुर्गा की कल्पना वाममार्गीयों एवं तान्त्रिकों ने की है। हमारी इस स्थापना का समर्थन शंकर व दुर्गा के स्वरूप को देखने से हो जाता है। देवता या देवी का स्वरूप इतना पवित्र, प्रेममय, आकर्षण, निर्दोष, तेज स्वरूप, शान्ति आदि दिव्य गुणधारी होना चाहिए जिसे देखकर भक्त में प्रेम व निर्भयता उत्पन्न हो, उसे प्राप्त करके भक्त उसके जिसे आनन्द में सराबोर हो जावे। उपासक में उपास्य के गुण आते हैं। ऐसे तामस प्रकृति के शिव दुर्गा की उपासना करने वालों में वैसे ही सारे दुर्गुण समाविष्ट होंगे, निश्चित ही है। यह वही दुर्गा है जिसकी भक्ति में नवदुर्गों में हिन्दू दिन–रात तन्मय रहता है।

इस प्रकार हमने दिखाया कि शिव व पार्वती अपने स्वरूप से देवता की श्रेणी में नहीं आते हैं। शिव की कल्पना वैदिक नहीं है। शिवलिंग की पूजा शिव और पार्वती की जननेन्द्रियों की पूजा है। पार्वती के उपनाम महाभागवत पुराण में योनिरूपा, योनिपीठस्थिता, सवैरिणी, योनि स्वरूपिणी आदि हैं, जो इसी बात की पुष्टि करते हैं कि शिव में जलहरी पार्वती जननेन्द्रिय की प्रतिमूर्ति है। अब हम कुछ प्रमाण शिव के चरित्र सम्बन्धी और आगे उपस्थित करते हैं जिन्हें देखकर आप यह अनुमान लगा सकेंगे कि पुराणकारों ने फर्जी शिव के जीवन की कथायें पुराणों में लिख–लिख कर शंकर को संसार की निगाहों में चरित्र की दृष्टि से कितना नीचे गिराया है। हम सर्वप्रथम प्रसिद्ध दारुवन की घटना प्रस्तुत करते हैं।

दारुवन की कथा

दारु नाग का एक उपवन था, जिसमें भृगु ऋषि का ...श्रम था। उसमें बहुत से शिवभक्त तपस्वीजन निवास करते थे। एक दिन वे लोग यज्ञ के लिए समिधायें लेने वन में गए हुए थे।

एतस्मिन्नतरे साक्षात् शंकरो नीललोहितः।
विरूपं च समाधाय परीक्षार्थं समागतः।९।
दिगम्बरोऽति तेजस्वी भूति भूषण विभूषितः।
सचेष्टां सदक्षां च हस्तेलिंगविधारयन्।१०।
मनसा च प्रियं तेषां कर्तुं वै वनवासिनाम्।
जगाम तद्वनं प्रीत्या भक्त प्रोतोहरः स्वयम्।११।
तदृष्ट्वा ऋषि पत्न्यस्ताः परं त्रास सुपागताः विह्वला।
विस्मिताश्चान्यास्समाजग्मुस्तथा पुनः।१२।
आलिलिंगस्तथाचान्याः करैर्धृत्वा तथा परः।
परस्परन्तु संघर्षात्संमग्नास्ताः स्त्रियस्तदा।१३।

अर्थ–इसी समय में साक्षात् नीललोहित शंकर जी विकट रूप धारण किये उनकी परीक्षा के निमित्त वहां गये।९। वे साक्षात् दिगम्बर (सर्वथा नंगे) अति तेजस्वी, विभूति रमाये हुए, कामियों के समान (दुष्ट) चेष्टा करते हुए, हाथ में लिंग धारण किए हुए।१०। भक्तों से प्रसन्न होकर उन वनवासियों की मन से भलाई करने के लिए प्रसन्नता से वहां गये।११। उनको इस (नग्न) अवस्था में देखकर ऋषि पत्नियां बड़ी परेशान हुईं, व्याकुल हो गईं, कई विस्मित होकर वहां आ गईं।१२। और हाथों से पकड़ कर उनसे परस्पर आलिंगन करने लगी। इस प्रकार आलिंगन करने से वे स्त्रियां बड़ी प्रसन्न हुईं।२३।

एतस्मिनेव समये ऋषिवर्याः समागमन्।
विरुद्धं तं च तै दृष्ट्वा दुःखिता क्रोध मूर्छिताः।१४।
तदा दुःखमनुप्राप्तः कोऽयं कोऽयं तथाऽब्रुवन्।
समस्ता ऋषयस्ते व शिवमाया विमोहिता।१५।
यदा च नोक्तवान् किंचित्सोऽवधूतो दिगम्बरः।
उचुस्तं पुरुषंभीमं तदा ते परमर्षयः।१६।
त्वया विरुद्धं क्रियते वेदमार्ग विलोपियत्।

ततस्त्वदीयं तल्लिंगं पततां पृथ्वीतले।१७

इसी अवसर में श्रेष्ठ ऋषि भी आ गए। इन विरुद्ध कार्यों को देखकर ा बड़े दुःखी हुए तथा क्रोध से बेचैन हो गए।१४। उस समय दुःखित ;ए शिव की माया से मोहित ऋषि आपस में बोले. यह कौन है? ।१५। र वह नंगा अवधूत शिव कुछ न बोला, तो वे परम ऋषि ऐस भयंकर पुरुष से कहने लगे।१६। तुम यह वेद मार्ग को लोप करने वाला विरुद्ध कार्य करते हो, इस लिए तुम्हारा यह लिंग भूमि पर गिर पड़े।१७।

सूत उवाच–

इत्युक्ते तु तदा तैश्च लिंगं च पतितं क्षणात्।
अवधूतस्य तस्याशु शिवास्याऽद्भुत रूपिणः।१८।
तल्लिंगं चाग्निवत्सर्वं यद्ददाह पुरास्थितम्।
यत्र यत्र च तद्याति तत्र तत्र च दहेत्पुनः।१६।
पाताले च गतं तच्च स्वर्गे चाति तथैव च।
भूमौ सर्वत्र तद्यातं न कुत्रापिस्थिरं हि तत्।२०।
लोकांश्च व्याकुला जाता ऋषयस्तेऽति दुःखिताः।
न शर्म लेभिरे केचिद्देवाश्च ऋषयस्तथा।२१।
दुःखिता मिलिताश्शीघ्रं ब्राह्मणं ययुः।२२।
मुनीशांस्तांस्तदा ब्रह्मा स्वयं प्रोवाच वै तदा।३१।
आराध्य गिरजां देवी प्रार्थयन्तु सुरांशिवम्।
योनिरूपा भवेच्येद्वै तदा ततस्थिरतां व्रजेत्।३२।
पूजितः परमभक्तया प्रार्थितः शंकरस्तदा।
सुप्रसन्नस्ततो भूत्वा तानुवाच महेश्वरः।४४।

सूत जी बोले–ऐसा उन ऋषियों के करने पर उस अवधूत अद्‌भुत रूपधारी शिव का वह लिंग उसी समय कट कर गिर पड़ा।१८। और वह कटा हुआ लिंग अग्नि के समान जलने लगा। वह जहां–जहां जाता था वहां–वहां आग लगा देता था।१६। वह लिंग पाताल में तथा स्वर्ग लोक में भी उसी प्रकार जलता हुआ भ्रमण करने लगा, कहीं पर भी

स्थिर नहीं हुआ ।२०। उससे सम्पूर्ण लोक व्याकुल हुए तथा वे ऋषि दुःखी हुए, कोई देवता या ऋषि कल्याण को प्राप्त नहीं हुए ।२१। दुःखी हुए वे सब मिलकर शीघ्र ही ब्रह्मा जी की शरण में गए ।२२। तब ब्रह्मा जी उन ऋषियों से स्वयं कहने लगे ।३१। हे देवताओं! देवी पार्वती की आराधना करके तत्पश्चात् शिवजी की प्रार्थना करो, यदि पार्वती जी साक्षात् योनिरूपा हो जावें तो लिंग स्थिरता को प्राप्त हो ।३२। उस समय परम भक्ति से पूजित और संस्कृत हुए शिवजी अति प्रसन्न होकर ऋषियों से बोले ।४४।

शिव उवाच—हे देवाः ऋषयः सर्वेमद्वचः श्रूयतामादरात्।
योनिरूपेण मल्लिगं धृतं चेत्स्यात्तदा सुखम् ।४५।
पार्वती च बिना नान्या लिंग धारयितुं क्षमा।
तयाधृतं च मल्लिगं द्रुतं शान्तिं गमिष्यति ।४६।
सूत उवाच—तत् श्रुत्वा ऋषिभिर्देवैस्सुप्रसन्नैर्मुनीश्वराः।
गृहीत्वा चैव ब्राह्मणं गिरिजा प्रार्थिता तदा ।४७।
प्रसन्ना गिरिजां कृत्वा वृषभध्वजमेव च।
पूर्वोक्तं च विधिं कृत्वा स्थापितं लिंगमुत्तमम् ।४८।

(शिव पुराण कोटि रुद्रसंहिता अध्याय १२)

अर्थ—महादेव जी बोले, हे देवताओ व ऋषियो! आप सब मेरे वचन को आदर से सुनो। यदि मेरा लिंग योनि रूप से धारण किया जावेगा तो शान्ति हो सकती है ।४५। मेरे इस लिंग को पार्वती के बिना और कोई धारण करने में समर्थ नहीं है। पार्वती द्वारा धारण किया गया मेरा लिंग शान्ति को प्राप्त होगा ।४६। सूतजी बोले, हे मुनीश्वरो! यह सुनकर देवता तथा ऋषियों ने ब्रह्माजी को साथ लेकर उस समय पार्वती से प्रार्थना की ।४७। पार्वती तथा शिवजी को प्रसन्न करके पूर्वोक्त विधि के अनुसार शिव लिंग की स्थापना की गई ।४८।

लिंग के साथ वृषण भी कटे

शिव पुराण का एक खण्ड धर्म संहिता के नाम से प्रसिद्ध है। वह

बम्बई से एक बार छपा था। शिव पुराण में से अब उसे न मालूम क्यों पृथक् कर दिया गया है। उसमें लिखा है–

छित्वा सवृषणं लिंगं गुरुद्वार रतः स्वयं।१८६।
शिश्ने स्यात कर्तनं कार्य नान्योदण्डः कदाचन्।१६०।

(धर्म संहिता अध्याय १०)

अर्थ–गुरु पत्नी (भृगु ऋषि की पत्नी) कामी शिव की उपस्थेन्द्रिय वृषण (अण्ड कोष) के साथ कट कर गिरी थी। शिश्न काटने के अतिरिक्त उत्तम दण्ड ऐसे–ऐसे व्यक्ति के लिए और हो ही क्या सकता था।

शिवजी दारुवन में विष्णु को स्त्री बनाकर साथ ले गये थे

उपरोक्त दारुवन की दुर्घटना के सम्बन्ध में सौर पुराण ने कुछ भिन्नतायुक्त निम्न प्रकार विवरण प्रस्तुत किया है–

एवं देव्यावचनं श्रुत्वा भगवान्नीललोहितः।
विट्वेषमथाऽऽस्थाय ययौ दारुवनं प्रति।४८।
स्त्रीरूपधारी विष्णुश्च शंकरेण समागतः।
विष्णुना सह विश्वेशो देव दारुवनौकसः।४६।
मोह यन्मायया शम्भुर्विचचार वनेतदा।
मुनिस्त्रियः शिवं दृष्ट्वा मदनानल दीपिताः।५०।
त्यक्त लज्जा विवस्त्राश्च ययुस्ता अनुशंकरम्।
स्त्री रूपधारिणं विष्णु सर्वे मुनि कुमारकाः।५१।
अन्वगच्छन्त देवर्षे कामवाण प्रपीड़िताः।
तद्भुतं तदा ज्ञात्वा कुपिता मुनयस्तदा।५२।
लिंगहीनं हरः कृत्वा गणवेश घरं हरि।५३।

(सौर पुराण अ. ६६)

अर्थ–देवी के वचन सुनकर शंकर जी व्यभिचारी पुरुष का रूप बना कर दारुवन गये।४८। विष्णु जी स्त्री का रूप धर के शंकर जी

के साथ गए ।४६। वन में जाकर शंकर जी ने अपनी माया फैलाई तो उसके प्रभाव से मुनियों की औरतें शिव को देखकर कामदेव की अग्नि से पीड़ित होकर ।५०। लज्जा त्याग कर व कपड़े उतार कर (नंगी होकर) शंकर जी से जा चिपटी तथा सारे मुनियों के जवान लड़के स्त्री रूपधारी विष्णु जी को देखकर ।५१। काम बाण से पीड़ित होकर उनसे जाकर भिड़ गए। इस अद्‌भुत दृश्य को देखकर तथा क्रोधित होकर मुनियों ने शिवजी को लिंग हीन कर दिया ।५२-५३

इस कथा को दो रूप में देखने पर हमको पता लगा कि शिवजी का दारुवन में जाकर ऋषि-मुनियों से दुराचार करना, विष्णु का औरत बनकर शिव के साथ वहां जाना तथा ऋषि कुमारो का विष्णु जी से उनके स्त्री रूप में व्यभिचार करना, मुनियों के शाप से शिवजी के अण्डकोष सहित शिश्नेन्द्रिय का कटकर गिरना व उसमें आग प्रगट होना, कटे हुए शिश्न का सर्वत्र भागते फिरना व आग लगना, शंकर जी के परामर्श से पार्वती का उसे योनि रूप में धारण करना तथा तभी से शिवलिंग की पूजा जारी होना, यह सब शिवलिंग (शिव मूत्रेन्द्रिय) पूजा का प्रारंभ बताता है। लखनऊ के छपे भाषा शिवपुराण के खंड ८ अ. १६ पर पृष्ठ ७४८ से ७५० तक यही कथा दी है। उसमें प्रारम्भ में नारद जी ने ब्रह्मा जी से शिवलिंग पूजा का प्रारम्भ कब से हुआ है तो ब्रह्माजी ने दारुवन की सम्पूर्ण कथा बताते हुए अन्त में यह शब्द कहे हैं।

दारुवन की कथा भाषा शिव पुराण से

शिवजी बोले-"गिरिजा योनि रूप से लिंग को धारण करे तो हम शान्त होंगे। गिरिजा के सिवाय तीन भुवनों में और कौन है जो हमारे लिंग को रोक सके। यह सुनकर सब देवता आदि ने गिरिजा को प्रसन्न किया जिसने योनि रूप होकर शिवजी का लिंग धारण किया जिससे सबको बड़ा आनन्द हुआ और सबने बड़ी स्तुति की, पर माता-पिता को नग्न देखकर किसी ने उनकी पूजा नहीं की। पर जब शिवजी ने आज्ञा दी कि हमारे लिंग की पूजा करो तो सबने उसी दशा में पूजा

की और उसी दिन से शिवलिंग पूजा का चलन हो गया।"

इस सब विवरण को देखकर हम समझ सकते हैं कि मूत्रेन्द्रिय की पूजा का शिवलिंग के रूप में प्रचार किया गया है तथा शिश्नेन्द्रिय पूजा को उचित सिद्ध करने के लिए यह सब कथाएं गढ़–गढ़कर पुराणादि ग्रन्थों में लिखी गई है। यदि पुराणों की इन कथाओं को सत्य माना जावेगा तो शिवजी पर अनेक प्रकार के प्रश्न लागू होंगे, जिनका कोई उत्तर पुराणों को सत्य मानने वालों पर न बन सकेगा।

प्रश्न१—कटा हुआ शिवलिंग क्या कभी पुनः शिवजी के शरीर में जोड़ा गया या नहीं?

प्रश्न२—पुराणों में शिवजी को शिखण्डी व षण्ड क्या लिंगहीन होने से ही तो नहीं बताया गया है?

प्रश्न३—सती अनसूया के पास एवं दारुवन में व्यभिचारार्थ जब शिवजी गये तो निज लिंग, उपस्थेन्द्रिय को हाथ में ग्रहण करके ही क्यों गए थे। क्या इससे शिवचरित्र का पतन सिद्ध नहीं होता?

प्रश्न४—गंगा को शिव तनया (शिवपुत्री) कहते हैं तो शिवपुत्री को शिवलिंग पर चढ़ाना क्या बुद्धिमानी की बात है?

प्रश्न५—गंगा को मैया कहते हैं तो गंगा मैया को महादेव बाबा के ऊपर चढ़ाना क्या यह मैया का बाबा के साथ दुराचार करना नहीं होगा?

प्रश्न६—पराई स्त्रियों पर माया जाल डालकर उन्हें कामोत्तेजित कर देना और फिर उनके पतियों की अनुपस्थिति में व्यभिचार करना क्या यह सनातन धर्म का कोई विशेष अंग है जिसे पालन कराके शिवजी ने यह गंदा आदर्श उपस्थित किया है।

प्रश्न७—विष्णु जी को औरत बनाकर साथ में ले जाना तथा मुनियों के लड़कों का स्त्री रूपधारी विष्णु से व्यभिचार कराना, क्या यही विष्णु के भगवान होने का सच्चा प्रमाण है? विष्णु भगवान ने अपने साथ स्वेच्छा से व्यभिचार कराकर क्या भक्तों के लिए यह अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है? और क्या यह कृत्य सनातन धर्म के अनुकूल माना जा सकता है? इसी प्रकार के अनेक प्रश्न पाठकों के मस्तिष्क में पैदा

हो सकते हैं जिनका जवाब पुराणों को सर्वथा सत्य मानने वालों क देना पड़ेगा।

शिवलिंग पर बेलपत्र व जल चढ़ाने का रहस्य

शिवलिंग पर जल भी केवल इसलिए निरन्तर छोड़ा जाता है वि उससे एक बार आग फूट निकली थी जिससे त्रैलौक्य को भस्म क डाला था, यदि पुनः कभी उसमें ज्वालामुखी फूट निकला तो अब कौन उसे धारण करेगा।

पहले तो पार्वजी जी ने धारण कर लिया था, अब इतनी सामर्थ्य किस स्त्री में होगी। अतः कटे हुए शिवलिंग की गर्मी शान्त बनी रहे, इसके लिए हर समय शिवलिंग पर पानी छोड़ने के लिए जल के घड़े उसके ऊपर रखे जाते हैं। भक्त लोग दूर–दूर से जल लाकर शिवलिंग पर छोड़ा करते है। उन्हें हर समय उसी दारुवन में प्रकट हुई अग्नि का भय लगा रहता है, हमारे विचार से यदि जल छोड़ने का यही कारण हो तो शिवलिंग युक्त मन्दिरों को नगर से बाहर जंगलों में स्थापित करना चाहिए। ताकि कभी गड़बड़ हो जाने पर भयभीत भक्त लोग सुरक्षित रह सकें अथवा हर मन्दिर में फायर ब्रिग्रेड (आग बुझाने के एंजिन) रखने चाहिए ताकि समय पर आग ज्यादा न फैलने पाये।

शिवलिंग पर जल और बेलपत्र चढ़ाने का आयुर्वेदिक कारण भी हो सकता है। जल की शीतल धारा शिश्नेन्द्रिय पर छोड़ने से समस्त शरीर की गरमी नष्ट हो जाती है, सम्पूर्ण रोग मिट जाते हैं, वीर्यकोष की उष्णता दूर होकर प्रमेह मिटते हैं, वीर्य स्वस्थ बनता है। सम्भव है शिव के स्वास्थ्य के लिए यह डाक्टरी क्रिया भक्त लोग किया करते हों। बेलपत्र भी वीर्य पौष्टिक एवं प्रमेह व मधुमेह नाशक होता है। इसके लिए बेलपत्र के चूर्ण को अथवा बेलपत्रों को घोटकर सेवन किया जाता है। आयुर्वेदीय चिकित्सकगण इसका बहुधा प्रयोग किया करते हैं।

शिवलिंग पर बेलपत्र भी संभवतः इसी विश्वास के आधार पर अन्ध–भक्त लोग चढ़ाते हैं कि शिवजी स्वस्थ रहें व उनका वीर्य पुष्ट होता रहे, पर वे यह नहीं समझ पाते हैं कि बेलपत्र खाने से प्रमेह नाशक

एवं वीर्य पौष्टिक गुण करता है, न कि शिश्नेन्द्रिय पर ऊपर से चढ़ाने से कोई लाभ होता है। जल चढ़ाने व बेलपत्र प्रमेह नष्ट करने को खाने का नुस्खा तो ठीक है पर शिवलिंग के सम्बन्ध में प्रयोग विधि दोनों ही गलत हैं। हमारे विचार में यदि शंकर जी की चिन्ता त्याग कर भक्त लोग अपने ऊपर ये दोनों चीजें प्रयोग करने लगें तो उनका स्वास्थ्य भी सुधर जाये तथा उनका गृहस्थ जीवन भी सुखमय बन जाये।

हमने प्रारम्भ में लिखा है कि शिव की कल्पना वाममार्गीय सम्प्रदाय ने की है, जिनमें व्यभिचार प्रधान धर्म माना जाता है उन्होंने शिवजी के चरित्र को भी अपने सम्प्रदाय की मान्यताओं के सांचे में ढालने का प्रयत्न किया है। हम कुछ घटनायें पुराणों से और यहां उपस्थित करते हैं, जिनसे आपको हमारी उपरोक्त स्थापना की पुष्टि में प्रमाण मिलेगा।

मोहिनी अवतार की कथा तथा सोना व चांदी की उत्पत्ति शिव वीर्य से

एक बार शिवजी ने विष्णु से अपना मोहिनी स्वरूप दिखाने को कहा तो विष्णु जी एकदम गायब हो गए। महादेवजी को सामने एक बाग में एक सुन्दरी स्त्री गेंद खेलती हुई नजर आई, उसने शंकर को तिरछी नजर से देखा। शंकर जी कामान्ध हो गए और उसे पकड़ने को भाग पड़े। वह स्त्री भी भागी। वह आगे–आगे, शिवजी उसके पीछे–पीछे भागे चले जा रहे थे। भागने में उस स्त्री के वस्त्र हवा में उड़ गए। वह सर्वथा नंगी हो गई और पेड़ो की आड़ में लाज के मारे छिपने लगी। शिवजी ने पीछे से दौड़कर उसके सिर का जूड़ा पकड़ लिया। अब थोड़े से श्लोक भी देखिए–

तयापहृत विज्ञानस्तत्कृतस्मर विह्वलः।
भवान्याऽपि पश्यन्त्या गत ह्रीस्तत् पदं ययौ।।२५।।
सा तमायान्तमालोक्य विवस्त्राव्रीडिता भृशम्।
निलीयमाना वृक्षेषु हसन्ती नान्वतिष्ठत।।२६।।
तामन्वगच्छद् भगवान भवः प्रमुषितेन्द्रियः।

कामस्य च वशं नीतः करेणुमिवयूथपः।।२७।।
सोऽनुव्रज्यातिवेगेन गृहीत्वानिच्छतीं स्त्रियम्।
केशबन्धं उपानीय बाहुभ्यां हरिषस्वजे।।२८।।

अर्थ—उस स्त्री ने शंकर जी की बुद्धि हर ली। वे उनके हाव–भावों पर कामातुर हो गए और भवानी के सामने लज्जा छोड़कर उसकी ओर चल पड़े।२५। मोहिनी वस्त्रहीन तो पहले ही हो चुकी थी। शंकर को अपनी ओर आते देखकर बहुत लज्जित हो गई। वह शर्म के मारे एक वृक्ष से जाकर दूसरे वृक्ष की आड़ में जाकर छिप जाती और हंसने लगती, परन्तु ठहरती नहीं थी।२६। शंकर जी की इन्द्रियां अपने वश में न रहीं। वे अत्यन्त कामोत्तेजित हो गए। अतः हथिनी के पीछे हाथी की तरह वे उसके पीछे–पीछे दौड़ने लगे।२७। उन्होंने अत्यन्त वेग से उसका पीछा करके पीछे से उसका जूड़ा पकड़ लिया और उसकी इच्छा न होने पर भी उसे दोनों भुजाओं में भरकर हृदय से लगा लिया।२८।

सोपगुढ़ा भगवता करिणा करिणी यथा।
इतस्ततः प्रसर्पन्ती विप्रकीर्ण शिरोरुहा।।२६।।
आत्मानं मोचयित्वांग सुरर्षभभुजान्तरात्।
प्राद्रवत्साप्रथु श्रोणी माया देव विर्निर्मिता।।३०।।
तस्यऽसौ पदवीं रुद्रो विष्णोरद्भूत कर्मणः।
प्रत्यंपद्यतः कामेन वैरिणेव विनिर्जितः।।३१।।
तस्यानुधावतो रेतश्च स्कन्दामोघ रेतसः।
शुश्मिणो युथपस्येव वासितामनुधावतः।।३२।।
यत्र तत्र पतत्मह्यां रेतस्तस्य महात्मनः।
तानि रूप्यस्य हेम्नश्च क्षत्रण्यां सन्महीपते।।३३।।

(श्रीमद्भागवत पु. स्क. ८ अ. १२)

अर्थ—जैसे हाथी हथिनी का आलिंगन करता है, वैसे ही शंकर जी ने मोहिनी का आलिंगन किया। वह इधर–उधर खिसक कर छुड़ाने की चेष्टा करने लगी। उसी छीना–झपटी में उसके बाल बिखर गये।२६।

उस देव निर्मित माया सुन्दरी ने किसी प्रकार शंकर की भुजाओं के पाश से अपने को छुड़ा लिया और बड़े वेग से भागी।३०। शंकर जी उस मोहिनी वेषधारी विष्णु जी के पीछे–पीछे दौड़ते चले गए। उस समय ऐसा जान पड़ता था कि मानो उनके शत्रु कामदेव ने उनके ऊपर विजय प्राप्त कर ली है।३१। कामुक हथिनी के पीछे दौड़ने वाले कामोन्मत्त मस्त हाथी के समान मोहिनी के पीछे दौड़ रहे थे। यद्यपि भगवान शंकर जी का वीर्य अमोघ है, फिर भी मोहिनी की माया से वह स्खलित हो गया।३२। शंकर जी का यह वीर्य पृथ्वी पर जहां–जहां गिरा वहां सोने–चांदी की खानें बन गईं।३३।

शिवजी की चारित्रिक दुर्बलता का यह भी एक दृष्टान्त हुआ। शिव वीर्य से सोने, चांदी की खानें बनने के सिद्धान्त की परीक्षा पौराणिक वैज्ञानिकों को विद्वानों की कसौटी पर कसके सिद्ध करनी चाहिए। वरना आज का पढ़ा–लिखा जनसमुदाय इस शिव को कलंकित करने के लिए वाममार्गीय पुराणकारों द्वारा रचित कोरी गल्प मानेगा। अथवा शिव को चरित्रवान व्यक्ति मानना छोड़ देगा। इसी शिव वीर्य से हनुमान जी की भी विचित्र पैदायश का नमूना देखिए–

शिव-वीर्य से हनुमान जी का जन्म

तद्वीर्यं स्थापयामासुः पत्रे सप्तर्ष यश्चते।
प्रेरिता मनसा तेन राम कार्यार्थमादरात्।।५।।
तैर्गौतम सुतायां तद्वीर्यं शम्भोर्महर्षिभिः।
कर्ण द्वारा तथांजन्या रामकार्यार्थमाहितम्।।६।।
ततश्च समये तस्मात् हनुमानिति नामभाक्।
शम्भुर्जज्ञे कपितनुर्महाबला पराक्रमः।।७।।

(शिवपुराण शतरुद्र संहिता, अ. २०)

अर्थ–मोहिनी के साथ हुए शुक्रपात को आदर से रामचन्द्र के अर्थ मन से शिवजी के द्वारा प्रेरणा किए हुए इन सप्त ऋषियों ने उस वीर्य को पत्ते पर रख लिया।५। उन महर्षियों ने वह शिवजी का वीर्य गौतम

की पुत्री के कान द्वारा अंजनी में रामचन्द्र के कार्य के लिए प्रवेश किया ॥६। उस समय उस वीर्य से महाबली तथा महापराक्रम युक्त वानर के शरीर वाले हनुमान नामक शिवजी उत्पन्न हुए ॥७।

कान में डालकर शिव–वीर्य से सन्तान उत्पन्न होने के विचित्र प्रकार पर डाक्टरी के पौराणिक विद्यार्थियों को अपनी अनुसन्धान शालाओं में परीक्षण करने चाहिए।

इसी शिव–वीर्य से वैद्यक ग्रन्थों में पारा पैदा होने की बात लिखी है।

शिव-वीर्य से पारे की उत्पत्ति

शिवांगात्प्रच्ययुतं रेतः पतितं धरणी तले।
तद्देह सार जातत्वाच्छुक्लमच्छम्भूच्चतत्।।
क्षेत्रभेदेन विज्ञेय शिववीर्यं चतुर्विधम्।
श्वेतरक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत् क्रमात्।।

(भावप्रकाश निघण्टु)

अर्थ– शिवजी का वीर्य पृथ्वी पर गिरा, उससे पारा पैदा हो गया। वह पारा क्षेत्र भेद से सफेद–पीला–लाल व काला चार प्रकार का होता है।

मोहिनी के चक्कर में फंसकर शिव–वीर्य गिरने से सोना, चांदी, हनुमान व पारा चार चीजें पैदा हो गईं। शिव वीर्य का महान चमत्कार दिखाने के लिए पुराणकारों ने इस कथा का सविस्तार वर्णन किया है। इसी प्रकार गंधक की भी विलक्षण उत्पत्ति लिखी है–

गंधक की उत्पत्ति

श्वेतद्वीपे पुरा दैव्याः क्रीडन्त्या रजसाप्लुतम्।
दुकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधी।।
प्रसृत यद्रजस्तस्माद् गन्धकः सनभूत्तदा।।

(भावप्रकाश निघण्टु)

अर्थ–श्वत द्वीप में पार्वती देवी पहले क्रीड़ा कर रही थी। रजःकाल आने पर जब उसके वस्त्र रजःस्राव से भीग गये, तो कपड़ों सहित उन्होंने

क्षीर सागर में स्नान किया। उस समय उस वस्त्र से जो रज फैला, उससे गंधक की उत्पत्ति हुई।

यह सब कथायें पौराणिक अन्धकार के युग में गढ़ी गल्पें हैं। लंका जाते समय हनुमान के शरीर से पसीना गिरा, उसे मछली निगल गई तो उससे मकरध्वज नाम का लड़का पैदा हो गया। यह गल्प प्राकृतिक नियम के विपरीत तुलसीदास जी ने उड़ाई थी तो यहां पुराण व वैद्यक ग्रन्थकारों ने शिव व पार्वती के रज–वीर्य से पारा, गंधक, सोना, चांदी की खान पैदा होना व हनुमान जी की विचित्र उत्पत्ति की गल्प ठोक दी है। एक दृष्टि से यह भी उत्तम ही हुआ। यदि पुराणकार कहीं शिव वीर्य से शिवजी के सन्तानों की उत्पत्ति की गल्प ठोकता तो वह अरबों–खरबों से क्या कम होते? और फिर उनके विवाह–शादी आदि कराने की व्यवस्था शिवजी से कराने में उसे सैकड़ों प्रकार की तुकबन्दी और लगानी पड़ती। इन पुराणकारों ने शिवजी को अधिक से अधिक कामुक सिद्ध करने में कोई कसर उठा नहीं रखी है। एक स्थान पर लिखा है–

इलावृत देश का हाल

जहां शंकर जी रहते हैं, वह इलावृत देश है। उस देश में एकमात्र शंकर जी ही पुरुष हैं। श्री पार्वती के शाप को जानने वाला कोई दूसरा पुरुष वहां प्रवेश नहीं करता है। क्योंकि वहां जो भी मर्द जाता है वह तुरन्त स्त्री बन जाता है। वहां पार्वती और उनकी अरबों–खरबों दासियों से सेवा कराने वाले शंकर जी रहते हैं।

(भागवत पुराण स्क. ५, अ. १७)

इसलिए इस विषय में दूसरे पुराणकार ने लिखा है–

शिवजी हर समय कामनी-पाश में बंधे रहते हैं

शिवोऽपि पर्वते नित्यं कामिनी पाश संयुतः।

(देवी भागवत स्क. १, अ. ११)

अर्थ–पर्वत पर शिवजी नित्य ही कामिनियों के बाहु–पाशों में फंसे रहते हैं।

शिव के पास अप्सरायें क्रीड़ा करती हैं

रमा कोटि सहस्राणि हार केयूर भूषितः।
सर्वश्रृंगार शोभाढ्या नूपुरावलंकृता।६।
अक्षय यौवनां सर्वा उमया सदृशोपम।
दिव्य वस्त्र परिधान महाभोगपरिच्छदाः।७।
सर्वभोग समायुक्ताः क्रीडन्ति शिवसन्निधौ।
यावत्तिष्ठति मेदिन्यां यावन्माक्षीर सागरे।८।

(केदार कल्प ३५)

अर्थ—सहस्रों कोटि अप्सरायें हार, बाजूबन्द आदि से भूषित नूपुर पहने सम्पूर्ण शृंगार की शोभा से युक्त।६। अक्षय यौवन वाली पार्वती के सदृश्य दिव्य वस्त्र धारण किये (शिव के भोगने को) महा भोग सहित।७। शिव के समीप क्रीड़ा करती हैं, जब तक पृथ्वी तथा समुद्र में जल रहता है।८।

यह हमने उस शिव लोक के हाल का वर्णन किया, जहां शिवजी रहते हैं। उनके पास अरबों–खरबों अप्सरायें रहती हैं। वे शिव के साथ क्रीड़ा व आमोद–प्रमोद किया करती हैं। यदि कोई अन्य मर्द भूल से भी वहां पहुंच जाये तो वह तत्काल स्त्री बन जाता है। मर्दों को औरत बनने का शाप कब, क्यों दिया गया, इसकी भी एक कथा है जो नीचे दी जाती है—

मर्दों को औरत बनाने के शाप की कथा

एकदा गिरीशं द्रष्टुमृषयः सनकादायः।
दिशो वितिमिराभासा कुर्वन्तः समुपागमन्।१६।
तस्मिश्च समये तत्र शंकरः प्रमदा युतः।
क्रीड़ासक्तो महादेवी विवस्त्रा कामिनी शिवा।१७।
उत्संगे संस्थिता भर्त्तुरमगाणा मनोरमा।
तान्विलोक्यांविका देवी विवस्त्रा व्रीडिता भृशम्।१८।

भर्त्तूरंकात्समुत्थाय वस्त्रमादायपर्यधात्।
लज्जा विष्टा स्थिता तत्रवेष मानातिमानिनी।१६।
ऋषयोपि तयोर्वीक्ष्य प्रसंग रमामणयोः।
परिवृत्य ययुस्तूर्णं नर नारायणाश्रमम्।२०।
ह्रीयुता कामिनीं वीक्ष्य प्रोवाच भगवान्हरः।
कथं लज्जातुराऽसि त्वं सुखं ते प्रकरोम्यहम्।२१।
अद्य प्रभृति यो मोहात्पुमान्कोऽपि वरानने।
वनं च प्रविशेदेतत्सर्व योषिद्भविष्यति।२२।

(देवी भागवत पु. स्क. १, अ. १२ तथा भागवत स्क. ६, अ.१)

अर्थ—एक समय सनकादिक ऋषि शिवजी के दर्शन को अपने प्रकाश से दिशाओं को निर्मल करते हुए आए। उस समय शिवजी पार्वती के साथ क्रीड़ा में आसक्त थे, कामिनी शिवा वस्त्रहीन थी।१७। वह शिवजी की गोदी में स्थित हुई रमण करती थी। उन ऋषियों को देखकर देवी बड़ी लज्जित हुई और वे स्वामी की गोद से उठकर जल्दी से वस्त्र धारण करने लगी।१८ व १६। ऋषि भी उन रमण करने वालों का प्रसंग देखकर शीघ्र ही नर नारायण आश्रम को चले गये।२०। तब पार्वती को लज्जित देखकर शिवजी बोले, तुम लज्जा क्यों करती हो? मैं तुम्हारे लिए सुख का प्रबन्ध करूंगा। आज से यदि कोई पुरुष भूलकर भी इस वन में आवेगा तो वह स्त्री बन जायेगा।

पुराणों की उपरोक्त बात के गल्प होने में क्या सन्देह हो सकता है। इस पृथ्वी पर ऐसा देश भी क्या कहीं संभव है, जहां अरबों—खरबों औरतें रहती हैं और उनके बीच में केवल एक ही मर्द शंकर जी विद्यमान रहकर दिन—रात रमण करते रहते हैं। पृथ्वी की प्रायः ढाई अरब आबादी में १ अरब औरतें नहीं हैं, पर पुराण बनाने वालों ने केवल एक पहाड़ी वन में अकेले शंकर जी के लिए अरबों—खरबों औरतें भागवत में पैदा कर दी हैं। पढ़े—लिखे लोग शिव को महाव्यभिचारी बनाने वाले इन पुराण बनाने वालों की मूर्खता पर हंसेंगे।

कितने आश्चर्य की बात है कि आज भी ज्ञान–विज्ञान के युग में जब पृथ्वी का कोना–कोना हवाई सर्वेक्षण से छान डाला गया है, इस प्रकार की गप्पों से भरे हुए पुराणों को छाप–छाप कर उनका प्रचार करने वाली संस्थायें एवं पण्डित मण्डल आज भी भोली–भाली धर्म परायण जनता में ऐसा घासलेटी साहित्य प्रचारित करके उसे मूर्ख बनाने में निरन्तर प्रयत्नशील हैं। भागवत पुराण में स्कन्द ६, अ. १ में लिखा है कि राजा सुद्युम्न भूल से एक बार वन में चला गया तो वह तत्काल औरत बन गया, उसका घोड़ा भी घोड़ी बन गया तथा साथ के नौकर सब औरत बने गये। इससे अनुमान होता है कि ऐसा देश इसी पृथ्वी पर ही कहीं है। इन मिथ्या पुराणों को सही मानने वालों को इस पौराणिक गल्प को उस स्थान का पता लगाकर प्रमाणित करना चाहिए।

इसी प्रकार शिवजी के चरित्र को कलंकित करने के लिए उनके वेश्यागमन की कला शिव पुराण में दी है। वेश्यागमन करने से शिवजी को 'वेश्यानाथ' की उपाधि से विभूषित किया गया है। कथा निम्न प्रकार है–

शंकर का वेश्यानाथ अवतार व वेश्यागमन

नन्दीश्वर बोले–हे तात! मैं परमात्मा शिव के वेश्यानाथ अवतार का आनन्ददायक वर्णन करता हूं।१। पहले नन्दिग्राम में अति सुन्दरी महानन्दा नाम की वेश्या रहती थी।२। एक समय उस वेश्या के घर स्वयं शिवजी वेश्या बनकर पहुंचे।३। उस सेठ को आया हुआ देखकर सुन्दरी वेश्या ने बड़े आनन्द के साथ आदर–सत्कार करके बड़े आदर से अपने स्थान पर बिठाया।१६। उसके हाथ में अति मनोहर कंकण देखकर लोभित हुई वह वेश्या उस वेश्य से बोली।१७। महानन्दा बोली–यह रत्न जटित आपके हाथ में स्थित हुआ स्त्रियों के आभूषणों में उचित कंकण मेरे मन को लुभाता है।१८। शिवजी बोले–यदि इस दिव्य श्रेष्ठ कंकण ने तुम्हारा मन लुभाया है तो तुम प्रेम से इसे धारण करो। पर इसका मूल्य क्या दोगी।२०।

वयं हि स्वैरचारिण्यो वेश्यास्तु न पतिव्रताः।
अस्मत्कुलोचितो धर्मो व्यभिचारो न संशयः।२१।
यद्येतदखिलं चित्तं गृह्णाति कर भूषणम्।
एतत्त्रयमहोरात्रं पत्नी तवभवाम्यहम्।२२।

वेश्या बोली—हम व्यभिचारिणी वेश्या हैं, पतिव्रता नहीं हैं, हमारे कुल का व्यभिचार कराना ही धर्म है, इसमें कुछ संशय नहीं है।२१। यदि यह हाथ का आभूषण आप मुझे दे देंगे, तो मैं तीन दिन व रात तुम्हारी स्त्री बनकर रहूंगी।२२।

शिव बोले— तथास्तु यदि ते सत्यं वचनं वीर वल्लभे।
ददामि रत्नवलयं त्रिरात्र भव मे वधुः।२३।
एतस्मिन्व्यवहारे तु प्रमाणं शशिभास्करौ।
त्रिवारं सत्यमित्युक्त्वा हृदयं मे स्पर्श प्रिये।२४।

हे वीर वल्लभे! बहुत अच्छा, यदि तेरा वचन सत्य है तो अपना रत्नों का कंकण तुझे देता हूं। तुम तीन दिन व रात मेरी स्त्री रहो।२३। हे प्रिये! इस व्यवहार में चन्द्रमा व सूर्य साक्षी हैं। तीन बार सत्य वचन कह कर मेरे हृदय को स्पर्श करो।२४।

वेश्या बोली— दिन त्रयहोरात्रं पत्नी भूत्वा तव प्रभो।
सहधर्मेचरामीति सत्यं सत्यं न संशयः।२५।
नन्दी बोला— इत्युक्त्वा हि महानन्दा त्रिवारं शशिभास्करौ।
प्रमाणीकृत्य सुप्रीत्या सा तद्हृदयमस्पृशत्।२६।
सा तेन संगता रात्रौ वैश्येन विटधर्मिणा।
सुखं सुष्वाप पर्यके मृदुतल्पोपशोभिते।३०।

(शिव पुराण शतरुद्र संहि

अर्थ—वेश्या बोली—हे प्रभो! तीन दिन व तीन रात तुम्हारी भार्या होकर तुम्हारे साथ विषय करूंगी, इसमें कुछ संशय नहीं है।२५। नन्दीश्वर बोले—यह महानन्दा वेश्या ने तीन बार सत्य–सत्य कह सूर्य

को साक्षी कर प्रसन्नतापूर्वक उस वेश्य के हृदय को स्पर्श किया। तब वह वेश्या उस व्यभिचारी वैश्य (शिव) के साथ रात्रि में मिल कोमल गद्दे व तकिये वाले सुन्दर पलंग पर चैन के साथ सानन्द गई।३०।

वेश्यागमन के ही समान पुराणों में शिवजी की अप्राकृतिक व्यभिचारे का भी दोष लगाया है। हम एक उदाहरण उसका भी पुराण से ही उपस्थित करते हैं—

आडि वध की कथा

अन्धक दैत्य शिवजी का बेटा था। उसे शिवजी ने हिरण्याक्ष दैत्य को गोद दे दिया था। हिरण्याक्ष को बारह अवतार लेकर विष्णु ने मार डाला था। उसके बाद अन्धक को गद्दी मिली थी। अन्धक से शिवजी का युद्ध हुआ। शिवजी ने बड़ी कठिनता से अन्धक को मार पाया था। **यह कथा शिव पुराण रुद्र संहिता युद्ध खण्ड** में विस्तार से दी है। अन्धक मरने के बाद उसके पुत्र आडि ने शिवजी से पिता की मृत्यु का बदला लेने का निश्चय किया। एक दिन वह शिवजी के यहां गया। पार्वती वहां पर नहीं थी। उसने पार्वती का वेष बना लिया। बातचीत से शिवजी को पता चल गया कि वह पार्वती नहीं है, वरन् दैत्य पुत्र आडि है। तो शिवजी ने अपनी शिश्नेन्द्रिय पर वज्र रख कर उसके साथ संभोग किया—

मेढ्रे वज्रास्त्रामादाय दानवन्तं शातयत्।
अबुध्यद्वीर कोनेव दानवेन्द्रं निषूदितम्।३७।

(नवलकिशोर प्रेस लखनऊ का सटीक मत्स्य पुराण अ. १५५)

अर्थात्—शिवजी ने अपनी शिश्नेनिन्द्रय पर वज्रास्त्र रखकर उस दैत्य के साथ संभोग किया जिससे वह मर गया।

शिवजी के चरित्र पर चाहे पुराणकारों की या उसके मानने वाले पौराणिक पण्डितों की दृष्टि में उपरोक्त घटना आभूषण हो, पर वर्तमान युग में यह घटना शिव चरित्र पर काला धब्बा लगाती है और यदि पुराण वर्णित इस घटना को सत्य माना जाये तो प्रश्न होता है कि क्या

प्राकृतिक व्यभिचार के आदि प्रचारक शंकर जी तो नहीं थे? क्या शास्त्र के उपयोग करने का यह भी वैध प्रकार था? शिवजी दैत्य पुत्र । गला घोटकर क्या नहीं मार सकते थे? उनका अमोध अस्त्र त्रिशूल स समय कहां चला गया था? हमारे विचार से यह सब गन्दी घटनायें **मार्गीय लोगों की धूर्ततापूर्ण कल्पनायें हैं।** इनको पुराणों में से काल देना चाहिए और यदि शिवजी द्वारा किया गया यह काण्ड सत्य घटना है तो शिवजी को पतित साबित करने के लिए यह एक बड़ा भारी प्रमाण है। **पौराणिको! या तो पुराणों का संशोधन करो, वरना शिव का चरित्र कलंकित होने से बचाया नहीं जा सकेगा।**

इसी प्रकार ब्रह्मवैवर्त में एक कथा दी है कि एक बार विष्णु जी गणेश जी को देखने को शिवजी के घर गए। वहां पार्वती जी विष्णु के सौन्दर्य को देखकर उन पर मुग्ध हो गई। शिवजी ने जब यह चरित्र देखा तो पार्वती से कहा—

शंकर का पार्वती को विष्णु के साथ कुकर्म कराने का आदेश

दुर्गाञ्च निर्जनीभूय तमुवाचहरः स्वयम्।
बोधयामास विविधं हितं तथ्यम् अखण्डितम्।१६०
निवेदनं मदीयं च निबोध शैलकन्यके।
शृंगारं देहिभद्रं ते हरये परमात्मने।१६१।

अर्थ—पार्वती को एकान्त में बुलाकर शिवजी ने स्वयं अनेक प्रकार के अकाट्य एवं हितकारी वाक्यों का बोध कराया और कहा।१६०। हे पार्वती, तेरा कल्याण हो। तू मेरे निवेदन को सुन और विष्णु को शृंगार दान दे दे।१६१।

इस पर पार्वती ने कहा—

तव वाक्य महादेव पालयिष्यामि सर्वथा।
देहान्तरे जन्मलब्ध्वाभजिष्यामि हरिं हर।१६७।

(ब्रह्म वैवर्त पु. कृष्ण जन्म ख. अ. ६)

अर्थ—हे शंकर जी! आपकी बात को मैं अवश्य पालन करूंगी उ दूसरे जन्म में मैं विष्णु को प्राप्त करूंगी।

पुराण में आगे लिखा है कि पार्वती ने इस प्रतिज्ञा को पूरा र दिया था।

यह घटना शिवजी की चारित्रिक श्रेष्ठता एवं पार्वती के पर–पु से बचने एवं उसके पतिव्रत धर्म का खुला उपहास नहीं तो क्या है? क्या कोई भी भला आदमी अपनी पत्नी को पर–पुरुष से शौकिया संभोग कराने का आग्रह कर सकता है? हमारे विचार से कोई भी भारतीय नारी ऐसी बात कहने वाले पति के सिर पर चप्पल मारते–मारते एक भी बाल नहीं रहने देगी। मगर पार्वती ने शिवजी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया क्योंकि वह स्वयं विष्णु पर आसक्त थी। पौराणिक शिव–पार्वती की महिमा निराली है। इसी प्रकार शिवजी ने एक स्त्री को अपने अण्डकोष खाने का आदेश दे दिया था। कथा इस प्रकार है–

शिव दूती को अण्डकोष खाने का आदेश

एक बार शिवजी ने दावत की। दावत समाप्त हो गई। उसके बाद वहां शिव दूती आई। उसे वहां आने में देर हो गई थी। इधर शिवजी की भोजन–सामग्री समाप्त हो गई थी तो उन्होंने शिव दूती को आदेश दिया–

आस्वादितं न चान्येन भक्ष्यार्थे च ददाम्यहम्।
अधोभागे च मेनामेवंर्तुलौ फल सन्निभौ।
भक्षयध्वं हि सहित लम्बौ मे वृषणाविभो।१२६।
अनेन चापि भोज्येन परातृप्तिर्भविष्यति।१२७।

(पद्मपुराण सृष्टि खण्ड ६ अ. ३१)

अर्थ—अन्यों ने जिसका स्वाद नहीं लिया है, भोजन के लिए मैं देता हूं। मेरी नाभि के नीचे दो गोल फल के समान आलम्ब सहित (उपस्थेन्द्रिय सहित) दो वृषण हैं, उनको खाओ। इस भोज्य वस्तु से पूर्ण तृप्ति हो जायेगी।

एक गैर स्त्री को भोजन के स्थान पर अण्डकोष (वृषण व लिंग) खाने का आदेश देना, शंकर जी के लिए शोभा की बात है या कलंक की? यह निर्णय करना हम पाठकों के ऊपर ही छोड़ते हैं। पौराणिक ग्रन्थों की अधिकांश बातें ऐसी बेतुकी हैं जिन्हें पढ़कर विधर्मी सदा हिन्दू धर्म का मजाक बनाते रहे हैं। इसी प्रकार बाल्मीकि रामायण में लिखा है—

शंकर का १०० वर्ष तक पार्वती से रति करना

दृष्ट्वा च भगवान्देवी मैथुनायोपचक्रमे।
तस्य संक्रीडमानस्य महादेवस्य धीमतः।
शिति कण्ठस्य देवस्य दिव्य वर्षशतं गतम्।६।

(बाल्मीकि रामायण बाल सर्ग ३६)

अर्थ—विवाह के उपरान्त पार्वती देवी को देखकर शंकर उनके साथ मैथुन करने लगे और उस मैथुन को करते हुए सौ वर्ष बीत गये। परन्तु—

न चापि तनयोराम तस्यामासीत्परन्तप।।

(बाल्मीकि रामायण बालकाण्ड सर्ग ३६)

अर्थ—उस महा मैथुन से भी पार्वती के कोई पुत्र नहीं हो सका।

शिवजी का १००० साल तक पार्वती से रमण करना

मत्स्य पुराण अ. १५७ में तथा शिव पुराण रुद्र सं. कुमार खण्ड अ. १, श्लोक १५ में लिखा है कि शिवजी पार्वती के साथ १००० दिव्य वर्षों तक निरन्तर रमण करते रहे।

इन प्रमाणों से शिवजी के अत्यधिक विषयी होने का प्रमाण मिलता है। साथ ही यह भी ज्ञात होता है कि शिवजी के पार्वती की कोख से कोई औलाद न हो सकी थी अथवा यह मानना चाहिए कि पौराणिक ग्रन्थकारों ने जहां शिवजी को अत्यधिक विषयी लिखा है, वहां उनकी संभोग शक्ति को भी अत्यधिक दिखाने के लिए शिव–पार्वती की सहस्र वर्ष पर्यन्त विषय करने की कल्पना की है। जनता के सामने शिव को ऊंचे दर्जे का विषयी, व्यभिचार–प्रचारक, अत्यधिक स्त्रियों वाला एवं

अत्यन्त भयानक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। आज जितने तान्त्रिक, शैव–शाक्त, वाममार्गी, दुर्गा के भक्त, देवी के पूजने वाले भैरव काली के उपासक आदि सम्प्रदाय वाले लोग हैं, वे सभी शिव–पार्वती–दुर्गा भैरव–काली आदि के रूप में (शिव–पार्वती को) बड़े कुत्सित रूप में जनता के सामने रखते हैं। उन पर बकरे, भैंसे आदि पशु काटते हैं। शराब, गांजा, भांग आदि का सेवी उन्हें बताते हैं। अपनी आकृतियां भयानक बनाये फिरते हैं। भस्म लपेटे, त्रिपुण्ड्र तिलक लगाये हड्डियों के ढेर धारण किये मुर्दों की खोपड़ी हाथों में लिए, चिमटा, डमरू–मोर पंखी धारण किये, बम–बम आदि शब्द चिल्लाते ये लोग सर्वत्र देखे जा सकते हैं।

यदि शिव को इन लोगों की कल्पना व कथनानुसार हम ऐसा ही मान लेवें जैसा पुराणों में लिखा है तो हम निःसंकोच यह कहने पर विवश हैं कि यह शिवजी दुराचार का नंगा आदर्श पेश करता है। कभी भी वैदिक धर्म का ईश्वर नहीं माना जा सकेगा। इस शंकर को मानने से हमारे देश में घोर व्यभिचार का प्रसार हुआ है। इन्हीं तान्त्रिकों एवं वाममार्गियों ने शिव के वीर्य तक को पीने का विधान 'केदार कल्प' पुराण में किया है, हम ग्रन्थ विस्तार भय से उन सब बातों को यहां नहीं देना चाहते हैं। शिव के सम्पूर्ण चरित्र में हमको एक भी आदर्श बात देखने को नहीं मिल सकी। जब हम पुराणों में देखते हैं कि शिव लोक में शिवजी हर समय कामिनी–पाशों में फंसे रहते हैं, असंख्य औरतें उन्हें हर समय घेरे रहती हैं तो हमें सोचना पड़ता है कि क्या शिवजी को चौबीसों घण्टे सिवाय स्त्रियों में व्यभिचार द्वारा ऐन्द्रिय विषय–भोग भोगने के और कोई काम धन्धा शेष नहीं है? हमने मत्स्य पुराण में एक स्थान पर देखा है कि पार्वती जी ने इसीलिए शिवजी को लम्पट शब्द से सम्बोधित किया है और निम्न शब्द उनके लिए प्रयोग किए हैं–

शंकर के लिए लम्पट व धूर्त शब्दों का प्रयोग

'एष स्त्री लम्पटी देवी'–(मत्स्य पु. अ. १५४, श्लोक ३१)

अर्थात् यह (शिव) परनारियों के लम्पट है।

एक अन्य पुराण—'महा भागवतकार' ने शिवजी के उपनामों मे उनके लिए 'धूर्त' शब्द का प्रयोग अ. ६७, श्लोक १५ में किया।

व्याघूर्णनयतौ धूर्तो व्याघ्रचर्मविवृतः।

यह सब शंकर के वीभत्स स्वरूप दूषित आचरणों के कारण हुआ है। शंकर का वास्तविक चरित्र एवं स्वरूप क्या था या क्या हो सकता है, इसे जनता के सामने रखने के लिए हमारे या किसी भी अन्य अन्वेषक के पास केवल पुराणों का ही साहित्य है। पुराणों से ही गाथायें संग्रहीत की गई हैं, जो कि लगभग सारी की सारी शंकर को अत्यन्त पतित एवं घृणा के योग्य सिद्ध करती हैं। यह निर्णय करना पुराणों के मानने वाले विद्वानों का कार्य है कि शंकर से संबंधित गाथायें सत्य हैं या मिथ्या हैं। हम यदि उनको मिथ्या कपोल कल्पित घोषित करते हैं तो भी पौराणिक विद्वान उन्हें सत्य ही मानते रहेंगे। पुराणों के कारण समस्त फर्जी पौराणिक देवताओं के चरित्रों पर सदैव आक्षेप होते रहे हैं। पौराणिक विद्वान उल्टे–सीधे तरीके से कोशिश करके सदैव उनके दुश्चरित्रों का समर्थन ही किया करते हैं। कभी किसी पौराणिक उत्तरदायित्व पूर्ण संस्था ने पुराणों को गलत एवं संशोधन योग्य घोषित नहीं किया है। अतः हमने उनके आधार पर शंकर चरित्र को प्रस्तुत करते हुए आपको बताया है कि किसी भी रूप में अनुकरणीय एवं उपासना योग्य देवता नहीं है। एक पुराणकार ने तो डंके की चोट पुराणों को धूर्तों के बनाये ग्रन्थ तक लिख दिया है।

पुराण बनाने वालों को धूर्त बताया है

प्राप्ते कलावहह दुष्टतरे च काले।
नत्वा भजन्ति मनुजा ननु वंचितास्ते।
धूर्तैः पुराण चतुरैः हरि शंकराणाम्
सेवा पराश्च विहितास्तव निर्मितानाम्।।

(देवी भागवत स्कं. ५, अ. १९)

अर्थात्—हे देवी! दुष्टतर इस घोर कलियुग में लोग तेरा भजन नहीं करते हैं। बल्कि धूर्त पुराण बनाने में चतुर लोगों ने शिव और विष्णु की पूजा की श्रेष्ठता लिख मारी है और लोगों को तेरी सेवा से वंचित कर दिया है। यहां धूर्त शब्द बहुवचन में प्रयुक्त हुआ है, जो यह सिद्ध करता है कि पुराण बहुत से धूर्त लोगों ने बनाये हैं। किसी एक व्यक्ति के बनाए हुए नहीं हैं।

पुराण बनाने वालों को उपाधियां

पौराणिक नाम व्यभिचार दोषो, शंकनीयः न कृतिभिः कदाचित्।
पुराण कर्ता व्यभिचार जातः, तस्यापि पुत्रो व्यभिचार जातः।।

(सुभाषित रत्न भण्डागार)

अर्थ—पुराण में व्यभिचार का दोष भरा पड़ा है, इसमें कोई शंका नहीं करनी चाहिए। पुराण बनाने वाला व्यभिचार से पैदा हुआ था, उनकी औलाद भी व्यभिचार से पैदा हुई थी।

भ्रष्ट लोग भागवत पढ़ते हैं

वेदैर्विहीनाश्च पठन्ति शास्त्रम्, शास्त्रेण हीनाश्च पुराण पाठाः।
पुराण हीनाः कृषिणो भवन्ति, भ्रष्टास्ततो भागवता भवन्ति।।

(अत्रि स्मृति श्लोक ३८२)

अर्थ—जो लोग वेद नहीं पढ़ सकते, वे शास्त्र पढ़ते हैं। जो शास्त्रों को भी नहीं पढ़ सकते वे खेती करते हैं और जो महाभ्रष्ट लोग खेती भी नहीं कर सकते वे जहां—तहां भागवत वांचते फिरते हैं।

इन चन्द प्रमाणों से स्पष्ट है कि भागवतादि पुराण कोई उत्तम ग्रन्थ नहीं हैं। इन पुराणों की रचना घोर साम्प्रदायिक लोगों ने मानव—जाति में पाखण्ड प्रसार करके उसे लूटने—खाने के लिए तथा इन ग्रन्थों का प्रमाण देकर उसे मूर्ख बनाने के लिए की थी। यह बात हम ही नहीं कहते हैं वरन् पुराण में इसके लिए स्पष्ट प्रमाण विद्यमान है कि उस समय के ब्राह्मण वर्ग ने स्वार्थान्ध होकर नाना प्रकार के मतमतान्तर जनता को गुमराह करने के लिए चलाये थे। महाभारत के

बाद देश की पतित दशा में उस समय के धर्माचार्यों की क्या स्थिति थी, यह पुराणकार के ही शब्दों में देखिए। आजकल के वे पौराणिक विद्वान् जो स्वार्थान्ध होकर जनता को धर्म के नाम पर कुमार्गगामी बनाते व नये—नये सम्प्रदाय चलाते रहते हैं व आर्यसमाज को भला—बुरा कहते हैं। वे इस दर्पण में अपना मुह देखें—

पौराणिक पण्डितों का सच्चा स्वरूप

पूर्वं यो राक्षसा राजन् ते कलौ ब्राह्मणाः स्मृता।४२।
पाखण्ड निरताः प्रायो भवन्ति जन वंचकाः।
असत्यवादिनः सर्वे वेद धर्म विवर्जिताः।४३।
दाम्भिका लोक चतुरा मानिनो वेद वर्जिताः।
शूद्र सेवा पराःकेचित् नाना धर्मप्रवर्तकाः।४४।
वेद निन्दाकराः क्रूराः धर्म भ्रष्टातिवाचकाः।
शूद्र धर्म रता विप्राः प्रतिग्रह परायणाः।४७।

(देवी भागवत स्क. ६ अ० ११)

अर्थ—हे राजन्! पूर्वकाल में जो राक्षस थे वे ही कलियुग के ब्राह्मण हैं। जो पाखण्डी, ठग, असत्यवादी, सारे के सारे वेद के विरोधी, दम्भी लोक व्यवहार में चतुर अभिमानी वेदों से वर्जित शूद्रों की सेवा करने वाले, शैव वैष्णव आदि धर्म (सम्प्रदाय) चलाने वाले, वेद निन्दक (नास्तिक), धर्म से सर्वथा भ्रष्ट, अतिक्रूर और अत्यन्त बकवादी होते हैं। शूद्रों के धर्म कर्म में लगे रहते हैं, और दान लेने में चतुर होते हैं।

पुराण पाठक का पूर्ण बहिष्कार करने का आदेश

ज्योतिर्विदोह्यथर्वाणः कीराः पौराण पाठकाः।
श्रद्धे यज्ञे महादाने वरणीयाः कदाचन।३३।
यज्ञे च फलं हानिः स्यात् तस्मात्तान् परिवर्जयेत्।३८४।

(अत्रि स्मृति)

अर्थ—ज्योतिषी, अथर्ववेदीय कीर तथा पुराण पढ़ने वाले ब्राह्मणों को यज्ञ, दान व श्राद्ध में नहीं बुलाना चाहिए। श्राद्ध में इनको बुलाने

वाले के पितर नरक में जाते हैं तथा दान का फल निष्फल हो जाता है और यज्ञ का फल भी नष्ट हो जाता है।

पौराणिक विद्वान् देखें और सोचें कि इन पुराणों व स्मृतियों में जिन्हें वे शास्त्र मानते हैं, किस प्रकार उनकी निन्दा की है। क्या पौराणिक विद्वानों में साहस है कि वे इन पुराणों का हमारी तरह बहिष्कार करने की घोषणा कर सकें।

इन प्रमाणों को देने से हमारा तात्पर्य यह दिखाना है कि धर्म के विषय में पुराणों को प्रामाणित नहीं मानना चाहिए और न मिथ्या देवताओं के चक्कर में पड़कर मानव जीवन को खराब करना चाहिए। पौराणिक विद्वानों को भी चाहिए कि वे पुराणों को त्याग कर वेदों के स्वाध्याय में प्रवृत होंवे! इन पुराणों का रचना काल महाभारत के बहुत बाद से अंग्रेजों के भारत में आगमन तक है। हम कुछ प्रमाण इस विषय में उपस्थित करते हैं–

पुराणों में अंग्रेजी

रविवारे च सण्डे च फाल्गुने चैत्र फरवरी।
षष्टिश्च सिक्सटी ज्ञेया तदुदाहरणमीदृशम्।३७।

(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग ख., १ अ. ५)

अर्थ–रविवार को सण्डे, फाल्गुन को फरवरी तथा साठ को सिक्सटी अंग्रेजी में कहते हैं। यह अंग्रेजी का उदाहरण है। इसी प्रकार–बाबर–तेमूरलंग–हुमायूं–अकबर–रैदास–मीरा–बीरबल–तुलसीदास–कबीरदास–सूरदास–शिवाजी–तानसेन आदि का वर्णन भविष्य पुराण प्रतिसर्ग ख० ४, अ० २२ में सविस्तार किया गया है। प्रायः सारे ही पुराणों में बौद्ध व जैन धर्म का विशद् खण्डन किया गया है। इन बातों से पुराणों के रचना काल का पाठक अनुमान लगा सकते हैं।

पुराण शूद्रों के लिए बने हैं

विशेषतश्च शूद्राणां पावनानि मनीषिभिः।५४।
अष्टादश पुराणानि चरित राघवस्य च।५६।

(भविष्य पुराण ब्राह्म पर्व अ. १)

अर्थ—१८. 'पुराण और रामचरित्र (रामायण) विशेषकर शूद्रों (मूर्खों) को पवित्र करने के लिए बनाए गए हैं।' इससे सिद्ध है कि पुराण व रामायण ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्यों के लिए न होकर केवल शूद्रों को ठगने के लिए बनाये गए हैं। अतः अन्य तीनों वर्णों व शिक्षित वर्ग को इनका बहिष्कार कर देना चाहिए।

क्या शिवजी ने कामदेव को भस्म किया था?

शंकर के बारे में बहुधा यह कहा जाता है कि उन्होंने कामदेव को भस्म कर दिया था। इस विषय में अनेक प्रकार की कहानियां भी गढ़ ली गई हैं। पर हमारा कहना है कि शिवजी के जीवन चरित्र की इन घटनाओं को देख कर कोई भी व्यक्ति इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता है। कामदेव के प्रभावों को योगी—संयमी व ब्रह्मचारी जन ही जीत सकते हैं। शिवजी का जीवन तो पुराणों के अनुसार अत्यधिक कामुक, शृंगार रस से पूर्ण एवं विलासितामय रहा है। जिसके हमने कुछ उदाहरण गत पृष्ठों में दिए हैं—

कहा जाता है कि शिवजी कैलाश पर रहते हैं और वह कैलाश हिमालय पर्वत पर है। यह भी अन्धविश्वासी धर्म भक्त जनता को बहकाने के लिए पौराणिक विद्वानों द्वारा उड़ाई गई बे—सिर पैर की गल्प हैं, क्योंकि गीता प्रेस गोरखपुर के प्रकाशित ग्रन्थ में इस प्रकार लिखा है—

वैकुण्ठ और कैलाश की स्थिति का निर्णय

वैकुण्ठ धाम पृथ्वी से १६ करोड़ योजन ऊपर स्थित है। जहां सबको अभयदान करने वाले साक्षात् भगवान लक्ष्मीपति निवास करते हैं। वैकुण्ठ की अपेक्षा १६ गुनी ऊंचाई पर शिवजी का निवास स्थान कैलाशधाम अवस्थित है अर्थात् पृथ्वी से २ अरब ५५ करोड़ योजन की दूरी पर स्थित है। जहां गिरिराज नन्दिनी उमा, गणेश जी, कार्तिकेय जी तथा नन्दी आदि के साथ कल्याण स्वरूप भगवान विश्वनाथ विराजमान है।

(संक्षिप्त स्कन्द पु. काशी खण्ड, पूर्वार्ध, पृष्ठ ५७६)

एक योजन बराबर चार कोस के होता है। इस प्रकार पृथ्वी से १० अब २४ करोड़ कोस यानी प्रायः २० अरब मील ऊपर आकाश में

कहीं शिवजी अपने कुनबे के साथ रहते हैं। हमारे भोले पौराणिक बन्धु मन्दिरों में घण्टे पीटते–पीटते थक जावें **नमः शिवाय** चिल्लाते–चिल्लाते मर भी जावें तो भी विष्णु शंकर या गणेश जी उनकी पुकार नहीं सुन सकते। स्कन्द पुराण के इस लेख पर एक प्रश्न पैदा होता है। यह जमीन प्रतिक्षण घूमने से आकाश में अपनी स्थिति बदलती रहती है। प्रातःकाल जो तारे हमारे सिर पर होते हैं, दोपहर को हमारा घर उनसे हटकर दूसरे तारों की सीध में हो जाता है। सायंकाल व रात्रि में हम नई दिशा में होते हैं और प्रातःकाल जमीन घूमकर हमें पुनः पहले की दशा में लाकर खड़ा कर देती है।

इस प्रकार आकाश की और हमारी स्थिति प्रतिक्षण बदलती रहती है। पुराणकार लिखता है कि विष्णु लोक व कैलाश इतनी ऊंचाई पर हैं। यहां 'ऊपर' शब्द का कोई अर्थ नहीं है जब तक सूर्य की अपेक्षा से समय व दिशा का निर्देश न किया जावे। स्पष्ट है कि पुराणकार की यह गप्प अधूरी है, क्योंकि उसे ज्ञान नहीं था कि पृथ्वी के घूमते रहने से 'ऊपर' की दिशा सदा बदलती रहती है।

फिर ऐसे दूर रहने वाले विदेशी देवता की पूजा से लाभ भी क्या है जो १०००० साल तक पार्वती के साथ विषय–भोग में तल्लीन रहा करे, जैसा कि पुराण में लिखा है। और उस व्यसन में फंसे रहने के कारण दिन–रात पुकारने वाले अपने भक्तों की खबर भी न ले सके। जिस बुलन्द तकदीर वाले शंकर को अरबों–खरबों बेहद खूबसूरत औरतें (बकौल भागवत पुराण के) सदा घेरे फिरती हों, वह इस भूमि के काले–कलूटे, जीने–मरने वाले पौराणिक हिन्दुओं की क्या परवाह करेगा। व्यर्थ में ये लोग शंकर पर मोहित होकर लिंग पूज–पूज कर अपना जीवन बरबाद करते हैं। जब शिवजी सर्वव्यापक एवं घट–घट वासी नहीं हैं, तो अपने भक्तों के ह्रदय की बात भी नहीं जान सकते हैं। फिर ऐसे देवता का ध्यान करने से लाभ ही क्या है? ईसाईयों का खुदा चौथे आसमान पर, मुसलमानों का खुदा सातवें आसमान पर रहता है, तो हमारे पुराणों का खुदा शंकर प्रायः २० अरब मील ऊंचा आसमान

में निवास करता है। आखिर हमारे पौराणिक लोगों का खुदा फर्जी, (देवता गण) ईसाई व मुसलमानों के खुदाओं से किसी बात में कम क्यों रहें। बहुत संभव है कि यह गप्प भी यवनों के खुदा से अपने देवता को ऊंचा सिद्ध करने को स्कन्द पुराण में गढ़ी गयी हो। सच्चाई क्या है यह पुराणों को मानने वाले या उनकी प्रकाशक पौराणिक संस्थायें अथवा शिव लिंग पूजने वाले भक्त लोग बता सकेंगे। क्योंकि संभव है उन्होंने वास्तविकता की, सत्यता की जांच कर ली होगी।

एक विचित्र मूर्ति

भारत में शिव मन्दिर में प्रायः दो प्रकार की मूर्तियां मिलती हैं। एक तो गोल, लम्बी, जो शिवलिंग कही जाती है। दूसरी चार मुंह वाली मूर्ति होती है। यह सिद्ध किया जा चुका है कि जलहरी शिव पत्नी पार्वती का गुप्तांग है। सर्वत्र तो उस जलहरी में शिवलिंग को स्थापित करके पूजा जाता है पर बहुत से शिव मन्दिरों में जलहरी में शिवजी का चार मुंह वाला सिर स्थापित करके पूजा जाता है। पता नहीं, शिवजी का बाकी सम्पूर्ण धड़ पार्वती के गुप्तांग जलहरी में कब, कैसे और क्यों समा गया व सिर ही उसके बाहर कैसे निकला रह गया? अथवा शंकर का सिर काट (जलहरी) में किस विधान से स्थापित किया गया? इस विचित्र पहेली का कोई समाधान हमको तो अब तक मिला नहीं है। उस संगमरमर की मूर्ति के पास बैठे गणेश जी मां–बाप की इस अजीब मजाक को देखते रहते हैं। यदि पौराणिक शिवोपासक विद्वान् इस रहस्य का स्पष्टीकरण कर सकेंगे तो हम उनके कृतज्ञ होंगे।

इसी प्रकार की कुछ प्राचीन मूर्तियां मथुरा के अजायबघर में मौजूद हैं, जिनमें शिवलिंग में शिवजी का मुंह बना हुआ है। ये मूर्तियां मध्यकाल में भारत में पूजी जाती रही हैं। पाठक! इस बात पर हंसेंगे कि शिवलिंग में शिवजी का मुंह बना देना कितने पागलपन की बात है? पर ये मूर्तियां इस बात की साक्षी हैं कि जनता को मूर्ख बनाने के लिए कारीगर ने जैसी भी मूर्ति बनाकर दे दी लोग उसे ही पूजने लगे। प्रमाण स्वरूप डाकौर जी व जगन्नाथ जी की बेतुकी काली–कलूटी भद्दी

तस्वीरें बाजार में बिकती हुई देखी जा सकती हैं। भोला हिन्दू उन्हें भी भगवान का चित्र मानता है। बुतपरस्ती करने वालों की बुद्धि भी बुत जैसी जड़ हो जाती है। उपास्य के गुण उपासक में आते ही हैं। जड़ वस्तुओं की उपासना करने वाले जड़ होने ही चाहिए। आत्मा तथा परमात्मा के बारे में किसी बात को सोचना और सत्यान्वेषण करना यह मूर्तिपूजकों की बुद्धि में नहीं आ सकता। इसीलिए चाणक्य ने लिखा है–

मूर्तिपूजा कम अक्लों के लिए है

प्रतिमा अल्प बुद्धिमान। (चाणक्य नीति अ. ४, श्लोक, १६)

अर्थात् मूर्तिपूजा अल्प बुद्धि वालों के लिए है। कम अक्ल वालों को लोग क्या समझते हैं, पाठक समझ लें।

पत्थर का लिंग शूद्र पूजते हैं

शिवलिंगस्तु शूद्राणाम्। (शिव पुराण वि॰ेश्वर सं. १-१८)

अर्थ—पत्थर का लिंग शूद्रों के लिए है। शूद्र का अर्थ ही मूर्ख होता है। द्विजातियों को और बुद्धिमानों को ये पत्थर के शिवलिंग नहीं पूजने चाहिए। यह पुराण का स्पष्ट आदेश है।

मूर्ख लोग मूर्ति को ईश्वर समझते हैं

मृच्छिला धातुर्दार्यादिमूर्तावीश्वर बुद्धयः।
क्लिश्यन्ति तपसा मूढ़ाः परां शान्तिं न यान्ति ते।।

(महानिर्वाणन्तक)

अर्थ—मूर्ख लोग मिट्टी, पत्थर, धातु अथवा लकड़ी की मूर्तियों को ईश्वर समझते हैं। इनको कभी शान्ति प्राप्ति नहीं हो सकती है।

जलमय तीर्थ व मिट्टी के देवता नहीं होते

न ह्यम्मयानि तीर्थानि न देवता मृच्छिलामयाः।

(भागवत स्क० १०, अ. ८४, श्लोक ११)

अर्थ—जलमय स्थान तीर्थ नहीं कहलाते। मिट्टी और पत्थर की प्रतिमायें देवता नहीं होती हैं।

मूर्ति में पूज्य बुद्धि व जल में तीर्थ बुद्धि रखने वाले गधे हैं

यस्यात्म बुद्धिः कुणपे त्रिधातुके। स्वधीः कलत्रादिषु भीम इज्यधीः।
यत्तीर्थ बुद्धिःसलिलेनकर्हिचित्। जनेषुभिज्ञेषु स एवं गौखरः।।

(भागवत स्कन्द १०, अ० ८४, श्लोक १३)

अर्थ—जो व्यक्ति इस शरीर को आत्मा समझता है। स्त्री–पुत्रादि को अपना समझता है, मिट्टी, पत्थर, काष्ठ आदि से बनी मूर्तियों को इष्टदेव मानता है तथा जो जल को तीर्थ समझता है, वह मनुष्य होने पर भी पशुओं में नीचा गधा ही है (गधे के समान है)।

उपरोक्त कुछ प्रमाणों में हमने दिखाया है कि मूर्तिपूजा चाहे वह शिव लिंग के रूप में हो और चाहे विष्णु आदि फर्जी देवताओं के रूप में हो, पीपल के पेड़ की हो या गंगा आदि की जलधारा का ही हो, अत्यन्त ही बुरी बात है। सनातन धर्म के मान्य ग्रंथों में उसके निषेध के सैकड़ों प्रमाण भरे पड़े हैं। अतः समझदार लोगों को मूर्तिपूजा या शिवलिंग पूजा की दूषित प्रथा का परित्याग कर देना चाहिए। मूर्तिपूजा का निराकरण उस समय तक नहीं होगा जब तक कि भारत में से हिन्दुओं के इन कल्पित विष्णु व शिव जैसे देवताओं के भ्रष्ट जीवन चरित्रों से जनता को अवगत नहीं कराया जावेगा। वैसे तो सारे ही देवताओं के चरित्र गन्दे हैं। वे देवता तो नहीं हैं, वरन् चरित्रों की दृष्टि से राक्षस ही सिद्ध होते हैं, परन्तु उन सब में **ब्रह्मा, विष्णु** व महादेव ये तीन जितने बड़े देवता माने गये हैं पुराणों ने उनके चरित्र उतने ही अधिक खराब बताये हैं। यदि इन प्रमुख देवताओं को सनातन धर्म से निकाल दिया जावे तो वर्तमान पौराणिक सनातन धर्म ही समाप्त हो जावेगा, क्योंकि सम्पूर्ण पौराणिक धर्म का पूर्ण आधार ये तीन ही मुख्य देवता हैं। हमारा मुख्य विषय यहां केवल शिवलिंग पूजा पर लिखना है। अतः हम अन्य देवताओं के चरित्र के दिग्दर्शन की बात छोड़ते हैं। हमें तो यहां बताना है कि शंकर जैसे कल्पित विदेशी देवता की उपासना करने से किसी का कल्याण नहीं हो सकेगा। सदाचारी की उपासना से भक्त में सदाचार के भाव उदय होंगे और दुराचारी की भक्ति से जीवन में दुराचार के

गन्दे परमाणु प्रवेश करेंगे। यह बात भी किसी-किसी पुराण बनाने वालों के दिमाग में घूम गई थी। इसीलिए पुराणों में निम्न व्यवस्थायें दी हैं।

शिव पूजकों के लिए व्यवस्था

ब्राह्मणः कुलजो विद्वान् भस्मधारी भवेद्यदि।
वर्जयेत् तादृशं देवि! मद्योच्छिष्टं घटं यथा।।

(पद्म पु० उ० खण्ड अ० २५३, पूना व अ० २३५ कलकत्ता)

अर्थ—यदि कोई कुलीन विद्वान् ब्राह्मण माथे पर भस्म आदि लगावे जैसा कि शिव के भक्त लगाते हैं, तो उसको वैसे ही छोड़ देना चाहिए जैसे शराब के भरे घड़े को।

त्रिपुण्ड्रधारी पतित होता है

त्रिपुण्ड्र शूद्र कल्यानां शूद्राणां च विधीयते।
त्रिपुण्ड्रधारणात् विप्रः पतितेः स्यान्न संशयः।२०।

(पद्म पु० उ० खण्ड अ० २५१, पूना व अ० २३५ कलकत्ता)

अर्थ—जो कोई ब्राह्मण त्रिपुण्ड्र (शिव का तिलक) माथे पर धारण करता है, वह पतित हो जाता है, क्योंकि यह विधि केवल शूद्रों की है। इसमें कोई संशय नहीं है।

शिव भक्त पाखण्डी-भ्रष्ट तथा नरकगामी हैं, स्वयं शिवजी की घोषणा

देवानां हितार्थाय वृत्तिः पाखण्डिनां शुभे।
कपालचर्मभस्मास्थि धारणात्कृतैर्मया।।
ये मे मतमाश्रित्य चरन्ति पृथ्वीतले।
सर्वधर्मैश्च रहिताः पश्यन्ति नरकं सदा।।

(पद्म पु० उ० खण्ड अ० २३३ पूना व अ० २३४ कलकत्ता)

अर्थ—शिवजी कहते हैं (घोषणा करते हैं) हे पार्वती! देवताओं के हित के लिए कपाल, चर्म और अस्थि धारण करने वाली पाखण्डी लोगों की वृत्ति मैंने धारण की है। मेरे मत को ग्रहण करके पृथ्वी पर आचरण करेंगे, वे सारे धर्मों से भ्रष्ट होकर नरक को देखेंगे।

शिवलिंग-पूजकों को घोर दुःख मिलेगा

शम्भो पपात भुवि लिंगमिदं प्रसिद्धं। शापेन तेन च भृगोर्विपिने गतस्य।।
तं ये नराः भुवि भजन्ति कपालिनैतु। तेषां सुखं कथमिहापि परत्र मातः।।

(देवी भागवत स्क० ५, अ० १६, श्लोक १६)

अर्थ—जिस शिव का लिंग भृगु के शाप से कटकर गिर पड़ा और जो हाथ में मनुष्यों की खोपड़ियों रखता है, उस शिव की जो लोग उपासना करते हैं, उनको इस लोक और परलोक में कहीं सुख न मिलेगा।

यह फतवे हमारे नहीं है। सनातन धर्म के परम मान्य पुराणों के हैं। बात भी ठीक है। आज प्रकाश एवं ज्ञान–विज्ञान के इस युग में पढ़ा–लिखा हिन्दू धर्म के मामले में अन्धा बनकर पोप–पुजारी एवं पण्डित के पीछे चलता है। शिवलिंग को हाथ जोड़ता है। उससे मिन्नतें मांगता है। उसके लिए मन्दिर बनवाता है। जमीन–आसमान के सारे भौतिक विज्ञान को समझने वाला वैज्ञानिक, कानून की बाल की खाल खींचने वाला वकील, व्यापार में भूमंडलभर के हिसाब की जोड़–तोड़ लगाने वाला गणितज्ञ व्यापारी, समस्त शास्त्रों को घोटकर पी जाने वाला संस्कृत का सनातनी पण्डित, कठिन से कठिन मामलों को तय करने की सूक्ष्म बुद्धि रखने वाला न्यायाधीश, इन पत्थर पुजारियों के हाथ सारी बुद्धि बेचकर शिवजी की मूत्रेन्द्रियों के सामने सिर नवाता फिरता है। वह नहीं सोचता कि आखिर यह शंकर की मूत्रेन्द्रिय की नकल (शिव लिंग) ही तो है, इसे पूजने से क्या मिलेगा? संसार के प्राणियों को इसे पूजने से क्या मिलेगा?

संसार का विद्वान् आकाश में उड़ने को हवाई जहाज बनाता है, चन्द्रमा व मंगल लोक में जाने को राकेट जहाज बना रहा है, अपार सागर की छाती पर जहाज दौड़ता है, रेडियो–टेलीविजन के आविष्कार करता है, संसार में वैज्ञानिक आविष्कारों के बल पर व्यापारिक व सैनिक साम्राज्य स्थापित करता है, अपने देश की जनता को समृद्ध बनाता है और मानव जाति की उन्नति का यत्न करता है। पर हमारा हिन्दू समाज

महादेव के पत्थर के लिंग को पानी से रगड़–रगड़ कर धोने में ही अपनी खोपड़ी खपाता रहता है। इस भोले हिन्दू को इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि इसके इन्हीं पाखण्डों के कारण १८ करोड़ हिन्दू मुसलमान बन गया, एक करोड़ ईसाई हो गया, चालीस लाख सिक्खों में चला गया, २० लाख जैनी हो गया, लाखों अछूत कहा जाने वाला दलितवर्ग अब बौद्ध बनता जा रहा है।

नीलकण्ठ शास्त्री जैसे लाखों शिक्षित हिन्दू लिंग पूजा के पाखण्डों के कारण हिन्दू धर्म से घृणा होने से विधर्मी बन गये। पढ़ा–लिखा शिक्षित नौजवान इन्हीं गन्दी बातों के कारण ईश्वर व धर्म से विमुख होकर घोर नास्तिक बनता जा रहा है। पर इस भोले हिन्दू को न अपने घर की फिकर है, न अपने समाज की। न उसे अपने स्वास्थ्य की चिन्ता है, न अपनी संतान को उन्नत बनाने की, न उसे सत्यासत्य का विवेक करने की जरूरत है और न देश की अवनति–उन्नति का उसे कुछ ध्यान है। उसे यदि ध्यान है तो शिवलिंग के लिए मन्दिर बनाने का है। खपत है, तो हर समय यह कि शिवलिंग पर जल छोड़ता रहे ताकि उस पत्थर के लिंग में से ज्वालामुखी फिर न फूट निकले, जिससे सनातनी संसार में तबाही आ जावे। बेल–पत्र चढ़ाता है तो इसलिए कि शिवजी का वीर्य पुष्ट होता रहे।

अरे पागल! तुझे शिव–वीर्य से क्या करना है। पुष्ट हो या न हो। तुझे यदि पत्थर के लिंग में ज्वालामुखी फूटने के भय का भूत सदा घेरे रहता है तो क्यों नहीं उखाड़कर ऐसे लिंग को किसी गहरे समुद, कुएं, नदी या तालाब में डाल आता, जहां सदा वह पानी से तर रहे और तेरी पानी चढ़ाने की मेहनत बच जावे। यदि तुझे गंगा प्यारी है तो इन शिव लिंगों को ले जाकर गंगा के बीच धारा में छोड़ आ और अपने बहुमूल्य समय को प्रभु भक्ति में लगा। या देश व समाज की सेवा का कोई काम करने में लगा दे, तेरा जीवन सफल होगा और देश–समाज का कल्याण होगा। इन शिव व विष्णु के मन्दिरों को गरीब बेघर–बार लोगों को रहने को दे दे ताकि गरीबों का भला हो और देश के मकानों की समस्या

के हल होने में सहायता मिले। मन्दिर के नाम लगी जायदादों को शिक्षा–संस्थाओं को दे दे, ताकि तेरे देश के लाखों गरीब बच्चे अज्ञानान्धकार से मुक्त होकर स्वतन्त्र देश के शिक्षित नागरिक बन सकें। और इन सबका पुण्य हो, हे शिव के पुजारी! तेरा लोक–परलोक सुधार देंगे। तेरे लिए ईश्वर का ध्यान करने को कोई शोर गुल रहित एकान्त स्थान उपयुक्त होगा।

मेरी हिन्दू कौम! आंख खोलकर देख। एक खुदा के मानने वालों ने संसार में साम्राज्य स्थापित कर लिए और खुदा ने उनकी सहायता की। तुझे सदियों तक गुलाम बनाये रखा और तू सैंकड़ों ईश्वर व देवी–देवताओं के चक्कर में पड़ी पिटती रही। तू शिव के लिंग को ही पकड़े बैठी रही और बुत्तपरस्ती ही तेरी बरबादी का कारण हुई। सोमनाथ जैसे लाखों विशाल मन्दिर इसी शिवलिंग पर अन्ध विश्वास के कारण बरबाद हुए। सारा देश इन पण्डे–पुजारियों के चक्कर में आकर देवताओं की मदद की आशा और विश्वास में बरबाद हो गया। जो देवता अपनी मूर्ति की रक्षा, यवनों की मार से न कर सके, मन्दिरों में चोरों से जो देवता अपने गहनों और कपड़ों की रक्षा नहीं कर सकते, खाना, पानी और हवा के लिए जो देवता पुजारियों के मोहताज हैं, जो देवता, पुजारियों के द्वारा तालों में सदा इसलिए बन्द (कैद) रखे जाते हैं कि उन्हें कोई चुरा न ले जावे या कुत्ते–बिल्ली उनको अपवित्र न कर दें, वे भी क्या देवता हैं? तुम्हें क्या देंगे? कभी सोचा करो। आखिर मनुष्य हो। तुमको प्रभु ने बुद्धि दी है कि सब काम सोच–समझ कर करो। **मनुष्य का अर्थ ही मननशील होता है।**

क्या राम ने शिव-लिंग पूजा की थी?

जनता को भ्रम में डालने के लिए एक बेतुकी गल्प यह उड़ाई गई है कि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी महाराज ने सेतुबन्ध रामेश्वर पर शिवलिंग पूजा की थी तथा उसे स्थापित किया था। पर यह बात सर्वथा निराधार है। बाल्मीकि रामायण में जो राम का प्राचीनतम जीवन चरित्र है, इस प्रकार का कोई लेख नहीं है जिससे इस गल्प का समर्थन हो

सके। तस्वीरें छापने वाली फर्मों ने ऐसे चित्र अवश्य बनाकर बाजार में प्रचारित्त कर दिये हैं, जिनमें रामचन्द्र जी घड़े से शिवलिंग पर जल की धारा छोड़ते दिखाये गए हैं।

शंकर व पार्वती राम का चिन्तन करते हैं

इदमेव सदा मे स्यान्मानसे रघुनन्दनः।
सर्वज्ञः शंकरः साक्षात्पार्वत्या सहितः सदा।५।

(अध्यात्म रामायण अरण्य का० सर्ग ६)

श्री रामचन्द्र जी के स्वरूप का शंकर और पार्वती मन में सदा चिन्तन किया करते हैं।

शंकर द्वारा राम की स्तुति

अहं भवन्नाम गुणान्कृतार्थो। वसामि काश्याम् निशं भवान्या।।
मुमूर्षमाणस्य विमुक्तयेऽहं। दिशामि मन्त्रं तव राम नाम।६२।

(अध्यात्म रामायण युद्ध का० सर्ग १५)

राम के राज्याभिषेक के अवसर पर शंकर ने राम की स्तुति करते हुए कहा—'प्रभो! आपके नामोच्चारण से कृतार्थ होकर मैं दिन-रात पार्वती के साथ काशी में रहता हूं और वहां मरणासन्न पुरुषों को उनके मोक्ष के लिए आपके तारने वाले मंत्र राम नाम का उपदेश किया करता हूं।

रामचन्द्र जी के दर्शन से शिवजी तर गये

राघवः सर्व देवानां पावनः पुरुषोत्तम।१२१।
स्पृष्ट्वा दृष्ट्वा तेनैव विमलाः शंकरादयः।१२२।

(पद्मपुराण रामायण उ० खण्ड अ० २५५ कलकत्ता)

अर्थ—सबसे पवित्र रामचन्द्र जी हैं जिनके स्पर्श और दर्शन से शंकरादि देवता निर्मल (पवित्र) होते गये।

इन श्लोकों में यह स्पष्ट रूप से बताया है कि शंकर से रामचन्द्र जी का स्थान बहुत ऊंचा है। रामचन्द्र जी अति पवित्र हैं, शंकर अति अपवित्र हैं। शंकर जैसे न जाने कितने सनातन धर्म के पतित कल्पित

देवता रामचन्द्र जी के दर्शन, स्पर्श व नाम जपने से तर गए, पवित्र हो गए। जब पुराण ही राम के दर्शन व उनका नाम जपने से शंकर का पवित्र होना बताता है तो यह कहना मूर्खता नं० १ नहीं तो क्या है कि वह महान् राम उस पतित शंकर को भी नहीं, वरन् उसके लिंग की पूजा करते थे, उस पर जल चढ़ाते थे। पर कौन देखने वाला है? यही तो हमारे सनातन धर्म की पोल है कि जो चाहो वाहियात बात महापुरुषों के जीवन में घुसेड़ दो। उनके पवित्र निष्कलंक अतिश्रेष्ठ जीवन चरित्रों को कलंकित करने के लिए किसी भी प्रकार की गन्दी बातें उनके बारे में उड़ा दो, उनकी चाहे जैसी स्वांगियों जैसी गन्दी तस्वीरें बनाकर जनता में प्रचारित करके अल्पज्ञ जनता में मिथ्या ज्ञान का प्रसार करो। **मर्यादा पुरुषोत्तम महान राम** को बदनाम करने के लिए उन्हें भी 'शिवलिंग' पूंजक बताकर दुनिया में कलंकित करो।

अरे ओ पोप लोगो! तुमको बिल्कुल लाज नहीं रही और न तुमसे कोई कुछ कहने वाला है। हिन्दू धर्म के नाम से कलंकित हुआ है। कोई भी पढ़ा–लिखा व्यक्ति यह देखने का यत्न नहीं करता है कि शिवलिंग पूजा का असली स्वरूप क्या है? वास्तविक बात यह है कि कुछ पुराणों ने व उनके भक्तों ने शिव की प्रशंसा में कुछ ऐसे पुलन्दे बांधे हैं कि उनकी चकाचौंध में किसी को असलियत जानने की बात सूझती ही नहीं। आपको आश्चर्य होगा कि स्वराज्य मिलने पर प्रायः ६०० वर्ष के बाद सोमनाथ के भवन मन्दिर का पुनः निर्माण कराया गया और उसमें फिर एक ऊंचा–सा शिवलिंग स्थापित किया तो भारत के सनातन धर्मी विचार के तत्कालीन **राष्ट्रपति महामाननीय श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी** भी उसे सिर नवाने पहुंचे थे।

इससे सिद्ध है कि राजनीति के महान पण्डित भी धर्म के मामले में जानकारी शून्य के बराबर रखते हैं और पण्डा–पुजारियों का अन्धानुगमन करते हैं। बहुत कम लोग धर्म के विषय में सत्यासत्य का अन्वेषण करते हैं। बाजार में दो पैसे की हांडी खरीदते समय दस दुकानों पर देखते हैं कि कहीं फूटी तो नहीं है। किन्तु धर्म जिसका संबंध

'यतोऽभ्युदयः निःश्रेयस्सिद्धि धर्मः' इस लोक में अभ्युत्थान एवं जीवन के अनन्तर अन्य जन्म के सुख और अन्त में निःश्रेयस (मोक्ष) से होता है, उसके बारे में इतनी लापरवाही बरतते हैं। यह कितने दुःख की बात है। जिनका जन्म जिस कुल में हो गया वह उस कुल में पैतृक धर्म से चिपटा रहना पसन्द करता है, चाहे वह कितनी ही रूढ़ियों से युक्त एवं गलत क्यों न हो।

दृष्टान्त के लिए शिवलिंग पूजा को ही ले लीजिए। कुछ हजार वर्षों से लोग इस वाममार्गीय सभ्यता के आदर्श **योनि लिंग पूजा** को करते चले आ रहे हैं। पर कितने लोग इतिहास में ऐसे हुए हैं, जिन्होंने शैव मतानुयायी होते हुए इस कुप्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई है। वैष्णवों ने यदि शैवों की या शैवों ने वैष्णवों की निन्दा की है तो द्वेषवश की है। दोनों दल अपने चेलों का गिरोह बढ़ाने में प्रयत्नशील रहे हैं।

भारत ने गत ५ हजार वर्षों के लम्बे इतिहास में केवल एक सत्यान्वेषी आदर्श व्यक्ति दृष्टिगोचर होता है, जिसने कट्टर ब्राह्मण शैव कुल में जन्म लेकर इस कुप्रथा के वास्तविक स्वरूप को समझ कर सच्चे परमात्मा की खोज की और सारे संसार के मतमतान्तरों, घनघोर घटाटोपों को नष्ट करके एक वेदोक्त परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को संसार के सामने रखकर धर्म के विषय में मानव का मार्ग प्रदर्शन किया है।

वह महान् व्यक्ति युग-स्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज थे। जिन्होंने अद्वितीय विद्याबल, योगबल एवं अजेय तर्कबल के सहारे सारे मतमतान्तरों के अन्धकार को नष्ट करके अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वारा मनुष्यों को सत्य बात समझने की बुद्धि प्रदान की है। ऋषि दयानन्द जी महाराज द्वारा स्थापित आर्यसमाज धर्म के विषय में जनता को निरन्तर मार्गप्रदर्शन करने में प्रयत्नशील है। आवश्यकता इस बात की है कि पौराणिक बन्धु हठधर्मी छोड़कर आर्यसमाज की बात को सुनें, ऋषि के ग्रन्थों को पढ़ें, उस पर मनन करें और असत्य को छोड़कर सत्य को ग्रहण करें जो कि मनुष्यता का धर्म है।

शिवलिंग पूजा का विधान भारत और उसकी आदर्श सभ्यता के लिए महान कलंक है। यह पाठकों ने गत पृष्ठों में देखा है। अब हम एक प्रमाण पौराणिक शंकर के जुआ खेलने की घटना का और देते हैं। जिससे आपको पता लगेगा कि भारत में सारे ही कुकर्मों का प्रचार इन पौराणिक देवताओं के गंदे चरित्रों के कारण ही हुआ है जिनका पुराणों में निर्लज्जता पूर्वक वर्णन किया है। सरकार को चाहिए कि राष्ट्र के चरित्र को सुरक्षित रखने के लिए इन दूषित पुराणों को जब्त कर लें।

नैतिक-पतन की पराकाष्ठा

हमने पीछे दिखाया है कि **लिंग पुराण** में शिवजी ने ब्रह्मा को अपने दाहिने अंग (पसली) से पैदा हुआ बताया है अर्थात् ब्रह्माजी शिवजी के बेटे हैं। संक्षिप्त स्कन्ध पुराण गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित के पृष्ठ १७ पर लिखा है कि–

ब्रह्माजी निरन्तर मणिमय शिवलिंग का पूजन करते हैं

अगर शिव में जरा शरमोहया बाकी होती तो अपने खासुल्खास बेटे को ऐसा पाप कर्म अपने साथ करने से अवश्य ही रोक देते। हमारे विचार से इन दोनों पतित देवताओं में नैतिकता सर्वथा नहीं है।

शंकर का जुआ खेलना

शंकरश्च भवानी च क्रीडनाद्यूतमास्थितौ।
भवान्याऽभ्यर्चिता लक्ष्मी धेनु रूपेण संस्थिता।२५।
गौर्य्या जित्वापुरा शम्भुः नग्नो द्यूते विसर्जितः।
अतोऽयंशंकरो दुखी गौरी नित्यं सुखेस्थिता।२२।
पराजये विरुद्धं स्यात् प्रतिपद्युदितेरवो।
प्रातगोर्धनः पूज्यो द्यूतंरात्रौ समाचरेत्।२६।

(पद्म पुराण उत्तर खण्ड अ० १२२ कलकत्ता)

अर्थ–महादेव ने जुआ खेला था। पार्वती ने शंकर को जुए में पूरी तरह जीत लिया और उन्हें नंगा करके छोड़ दिया। इसलिए शंकर सदा

दुःखी व पार्वती सदा सुखी रहती हैं। प्रतिपदा के दिन सूर्य निकलने पर पराजय विरुद्ध पड़ता है। अतः प्रातःकाल गोवर्धन पूजा करे और रात में जुआ खेले।

जिस जुए के कारण महाभारत का विनाशकारी संग्राम हुआ, जिस जुए को सारा संसार बुरा कहता है, जिसके कारण नित्य हजारों घर बरबाद होते हैं तथा जिसका निषेध **अक्षैर्मादीव्यः** कहकर ऋग्वेद ने किया है, उसी जुए के प्रचार की आज्ञा पुराण दे रहा है। क्योंकि महादेव ने जुआ खेला और पुराण की व्यवस्था है। अतः यह घृणित कर्म भी सनातन धर्म है। जब देवता कुकर्मों के प्रचारक होंगे तो अन्य भक्त जनता भी क्यों न उनके दुराचरणों का अनुगमन करेगी। जैसा गुरु, वैसा चेला बनेंगे। जब पुराण जुए का आदेश दे रहा है तो भक्तों में क्यों न जुए का गन्दा प्रचार व्याप्त होगा। बाजार में शंकर व पार्वती के जुआ खेलते हुए चित्र बनाकर बेचे जाते हैं और भक्त लोग उनको खरीदकर आदर से घर लाते हैं, हमारे हिन्दू समाज में किस प्रकार मूर्खता धर्म के नाम पर छा रही है, यह देखकर दुःख होता है।

रावण द्वारा शिवलिंग की पूजा

रावण ने बालुकामय शिवलिंग की पूजा की थी। इस विषय में बाल्मीकि रामायण में एक वर्णन आता है जिसे बहुधा शिवलिंग पूजा के समर्थन में प्रस्तुत किया जाता है। हमारा कहना है कि बाल्मीकि रामायण में प्रारम्भ में ६५०० श्लोक थे। बाद में लोगों ने उसमें मिलावटें कर करके २४००० श्लोक कर दिए हैं। दक्षिण में रावण की ठीक वैसे ही पूजा की जाती है जैसे उत्तर भारत में राम की, की जाती है। शिवलिंग की पूजा की कल्पना प्रारंभ व प्रचार दक्षिण भारत से हुआ। अतः वहां के लोगों ने रावण को शिवलिंग पूजक बताकर इस कार्य का महत्व बढ़ाने के लिए बहुत बाद को बाल्मीकि रामायण में ये श्लोक प्रक्षिप्त जोड़ दिए हैं। यदि कोई इन्हें प्रक्षिप्त मानने को तैयार न होवे तो भी हमारा कहना है कि राक्षस लोग विषयी व दुराचारी होते हैं। रावण तो राक्षसेश्वर था।

वह तो अत्यधिक दुराचारी व विषयी होना ही चाहिए था। यदि उसने लिंग पूजा की हो तो भी उसका कार्य धर्म विषय में प्रमाणित व उचित नहीं माना जा सकता है और न उसका अनुकरण ही किया जाना चाहिए। शिवलिंग पूजा के औचित्य में रावण का उदाहरण देना शिवलिंग को रावण वंशीयों का राक्षसी कर्म स्पष्टतया स्वीकार करना है—

हनुमान जी द्वारा शिवलिंग पूजने की गप्प

(गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त स्कन्द पुराण पृष्ठ १४४ पर लिखा है)

तदनन्तर वायुपुत्र हनुमान जी रामेश्वर के उत्तर भाग में भगवान रामचन्द्र जी की आज्ञानुसार अपने द्वारा लाये गए शिवलिंग को स्थापित किया।

पुराणों की सारी ही बातें बे—सिर पैर की होती हैं। हनुमान जी महाराज महान योद्धा संस्कृत एवं व्याकरण में महान पण्डित थे, वे स्वयं साक्षात् विष्णु के अवतार (जैसा कि पुराण मानते हैं) भगवान राम के सेवक थे, जिनके दर्शन व स्पर्श से शंकर जी पवित्र हुए थे। भगवान राम सदा हनुमान जी को प्राप्त थे तो फिर वे राम को छोड़कर शिवलिंग काहे को पूजने बैठे थे। हनुमान जी को भगवान विष्णु (रामचन्द्र जी) से बढ़कर किस चीज की या सद्गति की आवश्यकता शेष थी जिसके लिए वे शिवलिंग जैसी दूषित चीज को पूजने या उसे स्थापित करने का पागलपन करते? क्या शिवलिंग रामचन्द्र जी से भी अधिक महत्व रखता था?

इसके अतिरिक्त जब महाभारत अनुशासन पर्व अ० १४ में स्पष्ट लिखा है (प्रमाण पीछे देखो) कि पुरुष—चिह्न को छोड़कर पराया शरीर (शिवलिंग) पूजने में या रुद्राभिषेक करने में कौन—सी अक्लमन्दी की बात है। प्रत्येक पाठक इस पर गम्भीरता से विचार करें।

राम के युग में मूर्तिपूजा नहीं थी

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हमारी मान्यता है कि मूर्तिपूजा का विधान बौद्ध या जैन काल से भारत में प्रचलित हुआ है। किन्तु यदि विवशता

में दुर्जनतोषन्याय से हम पुराण की ही बात थोड़ी देर को मान लेवें तो भी राम के युग (त्रेतायुग) में मूर्तिपूजा का विधान भारत में नहीं था। देखिए प्रमाण–

सत्येषु मानसी पूजा देवानां तृप्तिकारिणी।
त्रेता यां वन्हिपूजा च यज्ञदानादिक क्रिया।११।
द्वापरे मूर्तिपूजा च देवानां वै प्रियंकरी।
कलौ तु दारुणे प्राप्ते ब्रह्मपूजनमुत्तमम्।१२।

अर्थ–सतयुग में मानसी पूजा देवों को प्रसन्न करने वाली थी। त्रेता में यज्ञ व दान आदि मुख्य धर्म कार्य में। द्वापर में मूर्तिपूजा देवों को सन्तुष्ट करने वाली थी और घोर कलियुग में इन सबको छोड़कर केवल निराकार ब्रह्म की उपासना ही सर्वश्रेष्ठ विधि ईश्वर की पूजा की है।

इससे सिद्ध है कि राम के त्रेतायुग में मूर्तिपूजा नहीं की जाती थी व वर्तमान कलियुग में मूर्तिपूजा सनातन धर्म के अनुसार महापाप है, क्योंकि उनके शास्त्र के विरुद्ध है। अतः स्कन्द पुराण की हनुमान जी द्वारा शिवलिंग पूजा की बात उड़ाना खरी चण्डूखाने की गप्प है।

अब शिवलिंग पूजा के बारे में स्वयं शिवजी महाराज के चेले फांसने के लिए ४२० का धोखे का बयान भी देखिए, भोली जनता को किस प्रकार पण्डितों द्वारा धर्म के नाम पर बेवकूफ बनाया जाता है?

शिवलिंग पूजा के महात्म्य व चेले फांसने का जाल

बयान हलफी के साथ बजात खुद शिवजी फरमाते हैं कि–

१–जो मेरे लिंग की स्थापना करता है और उसके लिए सुन्दर मन्दिर बनवाता है, वह कल्पभर मेरे लोक में निवास करता है।

२–जो मेरे मन्दिर में झाड़ू देता है और धूल–मिट्टी आदि हटाकर शुद्ध करता है वह सब रोगों से छूट जाता है।

३–अखण्ड बेलपत्रों से और भांति–भांति के पुष्पों से शिवलिंग की पूजा करके एक लाख वर्षों तक स्वर्ग में निवास करता है।

४—देव मन्दिर को चूने से पुतवाने वाले का शरीर दृढ़ होता है।

५—मैं (शंकर) शिवलिंग को प्रणाम करने पर १५, स्नान कराने पर २० तथा उसकी विधिपूर्वक पूजा करने पर १०० अपराधों को क्षमा कर देता हूं। (संक्षिप्त स्कन्द पुराण, गीता प्रेस का पृष्ठ १०५)

जब शंकर के कथनानुसार उसके लिंग पूजने का इतना फल होता है तो उसके सारे शरीर को पूजने का कितना बड़ा फल मिलता होगा। पौराणिक हकीम व डाक्टरों को चाहिए कि सवेरे ही झाड़ू व डलिया लेकर शिवलिंग वाले मन्दिर के द्वार पर बैठ जाया करें और हर सनातनी रोगी से मन्दिर में झाड़ू लगवाया करें। शिवजी का वचन है सब रोगी अच्छे हो जाया करेंगे। कितना सस्ता नुस्खा है। पौराणिको! बेलपत्रों को शिवलिंग पर चढ़ाये जाओ और स्वर्गवासी हो जाओ। जप, तप, योग, वेदाध्ययन, ज्ञान–विज्ञान की तुम्हें कोई जरूरत नहीं। पढ़ने–लिखने पर धूल डालो। यही तो तुम चाहते हो, तुम्हारे पाखण्डी पुराण व उनके प्रचारक पोप लोगों की दृष्टि में सारे वेद, शास्त्र उपनिषद्, दर्शन गलत रहे। सदाचार, पवित्र जीवन, उच्च चरित्र श्रेष्ठ शिक्षा–दीक्षा सब व्यर्थ है। उनकी निगाह में सारे ऋषि–मुनि अज्ञानी रहें, जो इतना सस्ता नुस्खा न बता सके।

सनातन धर्मी संस्था वालो! यदि तुम इन बातों पर विश्वास करते हो तो सब मिलकर भारत सरकार से एक कानून बनवा लो कि शिवलिंग पर जल छोड़ने वालों के ६० गुनाह माफ फरमाये जायें। जब तुम्हारा शंकर जैसा फर्जी देवता गुनाह माफ कर देता है तो सरकार को भी कानून बनाने में अड़चन न होगी। देश के सारे गुनाहगार तब तुम्हारे गिरोह में भर्ती हो जावेंगे और पौराणिक पण्डितों की आमदनी खूब बढ़ जाएगी और यदि तुम्हें इन गप्पों पर विश्वास नहीं है तो कलकत्ता, बम्बई व गोरखपुर व मथुरा वालों से कहो कि वह पुराणों का घासलेटी साहित्य छापकर अन्धविश्वासी भारतीय जनता में प्रचारित करके उसे धर्म के नाम पर गलत मार्ग पर डालने का कार्य न करें।

इसी प्रकार का प्रभाव है कि आज भी इस प्रकाश एवं ज्ञान–विज्ञान के युग में पौराणिक भोला हिन्दू शिवलिंग की बट्टी को दक्षिण के लगायत सम्प्रदाय की तरह गले में बांधे फिरता है और अपनी खोपड़ी उससे रगड़ता है। न जाने मेरी इस भोली हिन्दू कौम को कब अक्ल आवेगी?

राजनैतिक दृष्टि से भारतीय हिन्दू, मंगोल, हूण, शक, यूनानी, यवन, अंग्रेज, फ्रांन्सीसी व पुर्तगाल वालों की गुलामी में सदियों से पीसा जाता रहा है और धार्मिक गुलामी में इस जमीन से २० अरब मील ऊपर आकाश में बैठे फर्जी शिव को अपनी खोपड़ी बेच चुका है व उसके त्रिशूल के डर के मारे उसके शिवलिंग को पूजता रहता है, दिन–रात उसकी खुशामद में लगा रहता है। मेरे देश का कैसा दुर्भाग्य है कि चिरकाल से भारत की इस पवित्र भूमि पर व इसके रहने वालों के दिमागों पर विदेशियों का अधिकार रहा है। हमारा देश तो लम्बे संघर्षों के बाद स्वतन्त्र हुआ है।

संसार के देशभक्त लोगों ने अपने देश के महापुरुषों को अपनी पूजा का आधार बनाया है। मुसलमानों ने अपने देश के महापुरुष मोहम्मद को खुदा का पैगम्बर माना, यूरोप वालों ने ईसा को साक्षात् खुदा का बेटा मानकर उपासना की। ये सभी महापुरुष उनके देशवासी थे। परन्तु पौराणिक हिन्दू ने अपना उपास्यदेव ऐसों को माना, जो उनके देश के तो क्या, कभी उनकी जमीन के निवासी नहीं रहे। इन विदेशी शिव, गणेश व विष्णु आदि देवताओं के भक्त सदा इसीलिए गैरों की मार खाते रहे कि इनको कभी सर्वव्यापक जगदाधार परमेश्वर का विश्वास नहीं रहा। परमात्मा से विमुख लोगों की दुर्दशा होनी चाहिए। सदा विदेशियों ने उनकी वही की। खेद है कि अब भी इन अन्धविश्वासी धर्म भक्त भोले हिन्दुओं को समझ नहीं आती है। आर्यसमाज सदा इनको सन्मार्ग का प्रदर्शन करता है, उसे ये लोग अपना शत्रु समझते हैं।

मेरे भोले शिवलिंग पूजक भक्तो! यदि तुम शिवलिंग के स्थान पर अपने शरीर को पूजा करो, सदा अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। जितना

समय तुम शिवलिंग पर पानी चढ़ाने में लगाते हो उतना समय अपने शरीर पर तेल मालिश करने में लगाओ। अपनी उपस्थेन्द्रिय पर शीतल जल की धारा छोड़ा करो तो तुम्हारा शरीर दृढ़ बनेगा। ब्रह्मचर्य की स्थापना होगी, प्रमेह, स्वप्नदोष–शीघ्रपतन का नाश होगा। समस्त शरीर की व वीर्य कोष की गर्मी शान्त होगी। शरीर के समस्त रोग जल–चिकित्सा विज्ञान के 'सिट्‌जवाथ' के अनुसार दूर होकर चित्त में स्फूर्ति उत्पन्न होगी।

तुमने देखा होगा कि भारत की प्राचीन संस्कृति में पली हुई पुरानी मातायें छोटे–छोटे बालकों को अपने पैरों पर बिठला कर उनकी उपस्थेन्द्रिय पर शीतल जल की धारा छोड़ती हैं, इससे उन बालक–बालिकाओं के गर्भ तक की गर्मी व रोग दूर होकर उनका शरीर फूलता चला आता है। ऐसे बालक–बालिकाओं को कभी चेचक, सूखा, खसरा, मोतीझरा, फोड़े–फुंसी आदि रोग नहीं होते। शरीर का समस्त विजातीय द्रव्य निकलकर उनकी काया सर्वथा निरोग बन जाती है। जो नई रोशनी की स्त्रियां ऐसा नहीं करती हैं, उनके बालक सदा रोगी बने रहते हैं। इस विज्ञान के अनुसार यदि बड़ी उम्र के (स्त्री–पुरुष) भी इस क्रिया को करें तो वह पूर्ण स्वस्थ बन सकते हैं। इस विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए जल चिकित्सा के ग्रन्थ देखे जा सकते हैं।

उपसंहार

यदि दुष्टाचारी व्यक्ति एक साधारण कोटि का होता है तो उसका प्रभाव थोड़ा एवं निम्न कोटि के व्यक्तियों पर पड़ता है, यदि वह कोई उच्च पदस्थ शक्तिशाली, गिरोहबन्द व्यक्ति हो अथवा जनता द्वारा पूजनीय स्थिति का व्यक्ति अथवा देवता हो तो उसके निजी आचरणों का सारे समाज पर भयानक प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता है। उस पर भी जब वह स्वयं दुराचार के लिए दूसरों को प्रेरणा करके समाज में दुराचार फैलाने पर उतर जावें तो वह बहुत ही खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

जहां तक शंकर जी के व्यक्तिगत चरित्र एवं कार्य-कलापों का सम्बन्ध है इमें केवल यही कहने का अधिकार है कि वह अनुकरणीय एवं उपासना के योग्य देवता नहीं सिद्ध होता है। हम यहां एक ऐसा प्रमाण हिन्दू धर्म की शैव शाखा के परम मान्य शास्त्र शिव पुराण से उपस्थित करते हैं जिसे पढ़कर प्रत्येक चौंक पड़ेगा और सोचने पर विवश होगा कि क्या यही वह शंकर महान् देवता है जिसकी भक्ति में हमारा हिन्दू समुदाय लाखों-करोड़ों की संख्या में दिन-रात व्यस्त रह कर आत्मकल्याण की भावना से तन्मय रहता है। हम समझते हैं कि पौराणिक शंकर का सत्य स्वरूप इस प्रमाण से सूर्य के प्रकाश के समान स्पष्ट हो जावेगा। आशा है कि हमें शैव शास्त्र में से सत्य के प्रकाश के लिए इस उदाहरण को ज्यों का त्यों उदधृत करने के लिए क्षमा करेंगे। शिव पुराण उमा संहिता अ० ४ में लिखा है-

शिव की माया के चमत्कार

सनत्कुमार जी बोले, हे व्यास जी-

शृणु व्यास महाबुद्धे शांकरीं सुखदां कथाम्।
यस्या श्रवणमात्रेण शिवे भक्तिः प्रजायते।७।

अर्थ-शिवजी की सुखदायक कथा सुनो, जिसके सुनने मात्र से शिवजी में भक्ति उत्पन्न होती है।

शिव माया प्रभावेणाभूद्धरिः काममोहितः।
परस्त्री घर्षणं चक्रे बहुबारं मुनीश्वरं।१७।
इन्द्रस्त्रि शपीभूत्वा गौतम स्त्री विमोहितः।
पापं चकार दुष्टात्मा शापं प्राप मुनेस्तदा।१८।
अग्निकोऽपि जगछ्रेष्टो मोहिताश्शिवमायया।
कामाधीनः कृतो गर्वात्ततस्ते नैव चोद्धृतः।१६।
जगत्प्राणोऽपि गर्वेण मोहिताश्शिवमायया।
कामेन निर्जितौ व्यास चक्रऽन्यस्त्रीरति पुरा।२०।
चण्ड रश्मिस्तु मार्तण्डो मोहिताश्शिवमायया।

कामा कुलो बभूवाशु दृष्ट्वाश्वीं हयरूपधृत् ।२१।
चन्द्रश्च मोहितश्शं भोर्मायया काम संकुलः।
गुरुपत्नी जहाराथ युतस्तेनैव चोद्धृतः ।२२।
पूर्वंतु मित्रावरुणौ घोरे तपसि संस्थितौ।
मोहितौ तावपि मुनी शिव माया विमोहितौ ।२३।
उर्वशीं तरुणीं दृष्ट्वा कामुको स बभूवतुः।
मित्रः कुम्भे जहौ रेतोवरुणौऽपि तथा जले ।२४।
ततः कुम्भात्समुत्पन्नो वसिष्ठो मित्र संभवः।
अगस्त्यो वरुणाज्जातो बडवाग्नि समद्युतिः ।२५।

अर्थ—हे मुनीश्वर! शिवजी की माया के प्रभाव से विष्णु ने काम से मोहित हो अनेक बार परस्त्री प्रसंग किया।।१७।। इन्द्र देवताओं के स्वामी ने गौतम की स्त्री पर मोहित हो पाप किया तो उस दुष्टात्मा ने गौतम का शाप पाया।।१८।। जगत में श्रेष्ठ अग्नि भी शिव की माया से मोहित होने से गर्व से काम के वशीभूत हुए, फिर शिव ने ही उनका उद्धार किया ।१९। हे व्यास जी! जगत के प्राण विष्णु भी शिव की माया से मोहित हो के काम के वशीभूत होने से पर—स्त्री से प्रेम करने लगे ।२०। तीव्र किरणों वाले सूर्य भी शिव की माया से मोहित हो काम से व्याकुल होकर घोड़ी को देखकर शीघ्र ही घोड़े का रूप धारण करने वाले हुए ।२१। शिव की माया से मोहित हुए काम से व्याकुल चन्द्रमा ने भी गुरु—पत्नी का हरण किया और शिव ने ही उनका उद्धार किया ।२२। पहिले घोर तप में प्रवृत्त हुए। मित्रा, वरुण नामक दोनों मुनि भी शिव की माया से मोहित हो गये ।२३। उर्वशी अप्सरा को देख वे दोनों काम से पीड़ित हुए। तब मित्र ने घड़े में अपना वीर्य छोड़ा और वरुण ने जल में छोड़ा ।२४। तब उस कुम्भ से मित्र के पुत्र वशिष्ठ जी उत्पन्न हुए, वरुण से बड़वानल के समान कान्ति वाले अगस्त जी उत्पन्न हुए ।२५।

दक्षश्च मोहितश्शंभोर्मायया ब्रह्मणास्सुतः।
भ्रातृभिस्स भगिन्यां वै भोक्तुकामोऽभवत्पुरा ।२६।

ब्रह्मा च बहुवारं हि मोहितश्शिवमायया।
अभवमदोक्तु कामश्च स्वसुतायां परासु च।२७।
च्यवनोऽपिमहायोगी मोहितश्शिवमायया।
स्वकन्या विजह्रेस कामासक्तो पभूवह।२८।
कश्यपः शिवमायातो मोहितः काम संकुलः।
ययाचे कन्यकां मोहाद्धन्वनो नृपतेः पुरा।२९।
गरुणः शांडिली कन्यां नेतु कामस्सुमोहितः।
विज्ञातस्तु तया सद्यो दग्धपक्षो बभूव ह।३०।
विमाण्डको मुनिर्नारी दृष्ट्वा कामवशं गतः।
ऋष्य शृंग सुतस्तस्य मृगयां जातिश्शिवाज्ञया।३१।
गौतमश्च मुनिश्शंभोर्माया मोहित मानसः।
दृष्ट्वा शरद्वती नग्नां रराम क्षुभितस्तया।३२।

अर्थ—शिव की माया से मोहित ब्रह्मा के पुत्र दक्ष भी भाइयों सहित बहिन के साथ भोग करने की इच्छा वाले हुए।२६। ब्रह्माजी ने अनेक बार शिव की माया से मोहित हो आसक्त हुई अपनी पुत्रियों से भोग करने की इच्छा की थी।२७। शिव माया से मोहित हुए महायोगी च्यवन ऋषि ने भी काम में आसक्त हो, अपनी कन्या में आसक्ति की।२८। शिव माया से मुग्ध हो कश्यप ने भी काम के वश में हो, अज्ञान से धन्वा राजा की कन्या मांगी।२९। मुग्ध हुए गरुण ने भी शांडिली की कन्या लेने की इच्छा की, फिर उस कन्या के ज्ञात होने पर उनके पक्ष भस्म हो गए।३०। विभांडक मुनि भी स्त्री को देखकर काम के वशीभूत हुए। ऋष्य शृंग का पुत्र शिव की आज्ञा से हरिणी में पैदा हुए।३१। शम्भू की माया से मुग्ध हुए गौतम मुनि ने भी शरद्वती को नग्न देख काम से व्याकुल हो, उसके साथ रमण किया।३२।

रेतः स्कन्नं दधार स्वं द्रोण्यां चैव स तापसः।
तस्माच्चकलशाज्जातो द्रोणश्शस्त्रभृतां वरः।३३।

पराशरो महायोगी मोहितश्शिवमायया।
मत्स्योदर्व्यां च क्रीडे कुमार्यां दासकायया।३४।
विश्वामित्रो बभूवाथ मोहितश्शिवमायया।
रेमेमेनकया व्यास वने कामवशं गतः।३५।
वसिष्ठेन विरोधं तु कृतवान्नष्टचेतनः।
पुनः शिवप्रसादाच्च ब्राह्मणोऽभूत्स एवं वै।३६।
रावणो वैश्रवा कामी बभूव शिवमायया।
सीतां जह्रने कुबुद्धिस्तु मोहितो मृत्युमवाप च।३७।
बृहस्पतिः मुनिवरो मोहितः शिवमायया।
भ्रातृ पत्नया वशी रेमे भारद्वाजस्ततऽभवत्।३८।
इतिमायाप्रभावो हि शंकरस्य महात्मनः।३९।

अर्थ–फिर उस तपस्वी से निकले अपने वीर्य को द्रौने में रखा तो उस कलश से शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य उत्पन्न हुए।३३। शिव की माया से मोहित हुए महायोगी पराशर ने दास की कन्या कुमारी मत्स्योदरी से विहार किया।३४। विश्वामित्र ने शिव माया से मोहित होकर वन में मेनका से रमण किया।३५। चेतना रहित हो उन्होंने वशिष्ठ से विरोध किया फिर यह शिव के प्रसाद से ब्राह्मण हुए।३६। शिव माया के वश में रावण वैश्रवा ने कामी हो कुबुद्धि से सीता को हरण किया और वह मृत्यु को प्राप्त हुआ।३७। शंकर की माया से मोहित हुए मुनि बृहस्पति ने काम के वश हो भ्राता की स्त्री से रमण किया और उससे भारद्वाज उत्पन्न हुए।३८। सनत्कुमार बोले हे व्यास जी! मैंने यह महात्मा शिवजी की माया का प्रभाव वर्णन किया है।३९।

यह वह कथा है जिसे सुनकर शिवजी में भक्ति उत्पन्न होने की बात कही गई है। समझदार व्यक्ति यह सोच सकता है कि इस कथा से शिवजी के प्रति भक्ति उत्पन्न होगी या उनके चरित्र, स्वभाव एवं भाव का कच्चा चिट्ठा जनता के सामने आ जावेगा। जिससे बुद्धिमान्‌जन शिवजी से इसलिए नफरत करने लगेंगे कि कहीं शिवजी की माया से

वे व्यभिचारी न बन जावें। यदि शिवजी की यही माया है तब तो ऐसे व्यभिचार प्रचार के ठेकेदार का हैड क्वार्डर (मन्दिर) वैश्याओं के मुहल्लों में बनाना उचित होगा। ताकि वैश्याओं को कुछ तो लाभ हो।

हमने इस पुस्तक के गत पृष्ठों में शिव के चरित्र के कुछ उदाहरण बताये हैं। तथा यह भी देखा कि शिवलिंग की पूजा व्यभिचारी लोगों द्वारा किस आधार पर व क्यों देश में प्रचलित की गई है। सबसे अन्त- में हमने शिव माया के चमत्कार भी लिखे हैं। इन सबको पढ़कर हम देख व समझ सकते हैं कि पुराणों के शिवजी कौन हैं? कैसे हैं, व उनकी उपासना करने से हानि होगी या लाभ होगा।

शिवजी जमीन से प्रायः २० मील ऊपर कहीं रहते हैं, बताये गये हैं, जहां केवल औरतें ही रहती हैं। मर्द जो भक्ति करके वहां जाता है वह भी औरत बन कर शिवजी की सेवा करता है। शिवजी कामिनी पाशों से नित्य बंधे रहते हैं। शिव लोक में असंख्य अप्सरायें भोगने को रहती हैं। शिवजी की माया में जो भी फंसे, वे सब व्यभिचारी बन गए। इसलिए शिव व पार्वती के भयानक रूप को देखकर हर व्यक्ति को उनका भक्त बनने से पहले १००—१०० बार सोच लेना चाहिए कि उनका रास्ता सही है या गलत। उसे व्यभिचार का मार्ग पसन्द है या सदाचार का। हमारे अपने विचार से हर व्यक्ति को इन शिव आदि **देवताओं के झमेले से बचकर एक ईश्वर की उपासना वैदिक विधि से करनी चाहिए।**

हमारे इस ग्रन्थ को पढ़कर शिवलिंग पूजक ज्ञान प्राप्त करें। वे इस कुमार्ग को छोड़कर ईश्वरीय ज्ञान वेद के सत्य धर्म की शरण में आवें और इन कल्पित देवी—देवताओं के झमेले से बचकर एक सर्वव्यापक परमात्मा की भक्ति करना सीखें। यही हमारी प्रार्थना है।

ईश्वरोपासना का वैदिक प्रकार

अब अन्त में हम अपने पाठकों को ईश्वरोपासना का वैदिक प्रकार बताते हैं। मनुस्मृति के इस सम्बन्ध में निम्न आदेश हैं—

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपासतेपश्चिमाम्।
स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद् द्विजकर्मणा।१०३।

अपां समीपे नियतो नैत्यिकंविधिमास्थितः।

सावित्रीमप्यधीयीत गत्वारण्यं समाहितः।१०४। (मनु०अ०२)

अर्थ—जो प्रातःकाल की सन्ध्या न करे और सायं को भी न करे, उसका सम्पूर्ण द्विज कर्मों से शूद्र के समान बहिष्कार कर देना चाहिए।१०३। जल के समीप एकाग्रचित्त से वन या एकान्त में कहीं जाकर सन्ध्या–वन्दन, नित्य कर्म और गायत्री का जाप करें।१०४। सन्ध्या का शब्दार्थ है, अच्छे प्रकार से प्रभु का ध्यान करना। इसके लिए प्रातः एवं सायंकाल के समय दोनों (दिन व रात्रि) सन्धि वेलाओं में किसी भी एकान्त जगह में, नदी के तट पर या वन में, नहा–धोकर पवित्र स्थान में, पवित्र जल से तीन आचमन करे। चोटी में गांठ लगा लें ताकि ध्यान के समय बाल हवा से उड़कर चित्त को बटावें नहीं। आचमन से गले व मुंह की शुद्धि हो जाती है, साधारण कफ आदि गले में हो, तो दूर हो जाता है।

इसके अतिरिक्त एक मनोवैज्ञानिक रहस्य और है। उपासक दाहिने हाथ की हथेली में आचमन के लिए जल लेता है। फिर **शन्नोदेवी** का आचमन मंत्र पढ़ता है। उसकी दृष्टि जल पर होती है। वह दृढ़ संकल्पात्मक मन से भावना करता है कि "यह जल मुझको कल्याणकारी हो, मुझको सुखों का दाता हो, सब ओर से मेरे ऊपर सुख की वर्षा करे, मैं सुखों में निरोगिता की प्राप्ति के लिए इस अमृत जल का पान करता हूं।" तो उपासक की संकल्प शक्ति हाथ की हथेली में प्रवाहित होकर व दृष्टिपथ द्वारा उस जल में प्रवेश करके उसको वास्तव में अमृत बना देती है और उसके शरीर पर वही प्रभाव होता है जो भक्त मंत्र द्वारा चाहता है। जिन लोगों ने मनोविज्ञान के ग्रन्थों को पढ़ा है, वे इस रहस्य को समझते हैं। इसके बाद बायें हाथ की हथेली में जल लेकर मार्जन मंत्रों से आत्मा में पूर्ण विश्वास एवं सात्विक संकल्पात्मक मन के साथ भिन्न–भिन्न अंगों पर जल छिड़कें। जिससे शारीरिक आलस्य की निवृत्ति होती है और शरीर में स्फूर्ति उत्पन्न होती है। मन की

एकाग्रता के लिए भू, भुवः स्वः के प्राणायाम मंत्र को मन में उच्चारण करते हुए प्राणायाम करे।

उसके आगे ऋषि दयानन्द प्रणीत वैदिक सन्ध्या विधि के अनुसार ईश्वर को हृदय में सर्वव्यापक अनुभव करते हुए आंख बंद करके बाहरी जगत से ध्यान को हटाकर, प्रभु में मग्न होकर ईश्वर का स्मरण करे। ईश्वर प्रार्थना के तीन अंग हैं। पहले मन को प्रभु में तल्लीन करने के लिए उसके गुणों का बार–बार वर्णन करे। इसे **स्तुति** कहते हैं। फिर अन्तःकरण में ऐसा अनुभव करे कि मैं और प्रभु एक हैं। प्रभु मेरे अन्दर समाया हुआ है, मुझमें और उसमें कोई दूरी नहीं है। प्रभु सर्वशक्तिमान, दयालु है। मेरे ऊपर सुखों की वर्षा कर रहा है। मैं ईश्वर से बल व सद्गुण प्राप्त कर रहा हूं। इसे **उपासना** कहते हैं। उसी समय ईश्वर से उपासक प्रार्थना करे कि प्रभो! आप मुझे बल देवें, बुद्धि देवें, मुझे ज्ञानवान् बनायें। मेरे अमुक–अमुक कष्टों को दूर करें। उपासक दृढ़मन, शुद्ध संकल्प एवं पूर्ण विश्वास से प्रार्थना करे। इसे तीसरा अंग **प्रार्थना** कहते हैं। जब तक स्थिरतापूर्वक मन लगे इसी प्रकार ईश्वर की **स्तुति, उपासना** तथा **प्रार्थना** भक्त नित्य दोनों समय किया करें।

स्तुति से ईश्वर में प्रीति उत्पन्न होती है। उपासना से ईश्वर के गुण उपासक में आते हैं। प्रार्थना से चित्त का अहंकार दूर होकर मन में सौम्यता आती है। शुद्ध हृदय से की गई आवश्यक प्रार्थना फलवती होती है। मनोबल दृढ़ होता है, शारीरिक एवं मानसिक दोष दूर होते हैं। प्रार्थना के लिए प्रायः उषाकाल के प्रारंभ से लेकर सूर्योदय तक का समय होता है व सायं–काल को अस्त होते सूर्य के समय से तारागणों के दर्शन तक का समय सर्वोपयुक्त है। सूर्य के उदय और अस्त होने की किरणें खुले शरीर पर पड़ने से रोगों का नाश करके स्वास्थ्य देती हैं। सूर्योदय के पश्चात् व सूर्यास्त से पूर्व अग्निहोत्र का समय होता है।

जो लोग इस वैदिक विधि से ईश्वर की स्तुति, उपासना व प्रार्थना नित्य किया करते हैं वह सफल मनोरथ होते हैं। ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त,

निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, नित्य, पवित्र और सृष्टि कर्ता है। वह प्रभु अनन्त विश्व में एक रस व्याप्त है, सारे लोक-लोकान्तरों को धारण करता, रचता व प्रलय कर्ता है। सब मनुष्यों को उसी की उपासना करनी चाहिए। मिथ्या देवी-देवताओं की, अनेक ईश्वरवाद की अथवा अवतारवाद की झूठी भ्रमपूर्ण कल्पनायें ईश्वर के सत्य स्वरूप को न समझने वाले अज्ञानियों ने की हैं। यह सब गलत हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं। अतः वेदों के आधार से ही प्रभु की उपासना करना योग्य है।

ईश्वर की भक्ति करने के लिए न मन्दिर-मस्जिद या गिरिजाघरों की जरूरत है, न घन्टा-घड़ियाल बजाने की। न मूर्ति की जरूरत है, न ईश्वर से मिलाने को पीर, पैगम्बर, देवता या अवतार रूपी एजेन्टों (दलालों) की। जहां जी चाहे, जब जी चाहे, कहीं भी ध्यान को एकाग्र करके सच्चे प्रेमी भक्त की तरह ईश्वर के ध्यान में तन्मय हो सकता है। कोई आडम्बर करने की आवश्यकता नहीं है। भक्त ध्यान करेगा, अपने प्रभु से अपने दिल की बात कहेगा और प्रभु सर्वव्यापक घट-घट वासी होने से उसकी बात जानेगा और उसे पूरा करेगा।

आयुर्वेद में आदेश है **ओ३म् कृतो स्मरः** अर्थात् 'हे कर्मशील मनुष्य! तू ओ३म् नाम से ईश्वर का स्मरण कर।' योगदर्शन कहता है **तस्य वाचकः प्रणवः** उस ईश्वर का नाम ओ३म् है। **तज्जपस्तदर्थ भावनम्** उस ओ३म् के अर्थ का स्मरण करते हुए बार-बार मानसिक जाप करो। बिना अर्थ को समझे कोरी तोता रटन्त बेकार होती है। इन वैदिक आदर्शों के विपरीत किसी भी प्रकार की मूर्तिपूजा या अन्य प्रकार के ईश्वर का ध्यान नहीं करना चाहिए।

मूर्तिपूजा के द्वारा ईश्वर का ध्यान अथवा आत्मा का मेल नहीं होता है। कारण कि उपासक की आत्मा तो शरीर में बन्द रहती है और ईश्वर के सर्वव्यापक होने से यह माना कि ईश्वर मूर्ति में भी व्यापक होता है, पर उस ईश्वर से सान्निध्य स्थापित करने के लिए, उससे उपासना

(नैकट्य) प्राप्त करने के लिए जीवात्मा शरीर को छोड़कर मूर्ति में व्यापक ईश्वर से मिलने के लिए उसमें प्रवेश नहीं कर सकती है। सच्ची उपासना ईश्वर व आत्मा का मेल, अज्ञानता के परदे को दूर करने से उपासक के अन्तकरण में ही संभव होता है। जहां कि दोनों ही व्याप्य रूप में वर्तमान रहते हैं। यह एक रहस्य है, जिसे मूर्ति पूजक भाई नहीं समझते हैं।

यह विषय बहुत बड़ा है। इस पर एक स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखा जा सकता है। परन्तु यहां हमें संक्षेप से ईश्वरोपासना का वैदिक प्रकार दर्शाना इष्ट था, जो हमने ऊपर दिखाया है। केवल इतना ही पर्याप्त है। जो लोग विशेष जानना चाहें वे आर्ष साहित्य के ग्रन्थों को **मधुर-प्रकाशन, दिल्ली-६** से प्राप्त कर सकते हैं और अपने ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं। इस विषय में हमारी पुस्तक ईश्वर सिद्धि को देखना उचित होगा।

परिशिष्ट

(इस पुस्तक के दूसरे संस्करण तक कुछ प्रमाण देने से रह गये थे,इस संस्करण में पाठकों, शास्त्रार्थी विद्वानों के लाभार्थ हम दे रहे हैं)

अनेक जिद्दी पौराणिक विद्वान पुराणों के श्लोकों के अर्थ तोड़ मरोड़कर शिवलिंग को ज्योतिलिंग तथा जलहरी को वेदी सिद्ध करने का कुप्रयास किया करते हैं और कहते हैं कि शिवजी ने दारुवन में जाकर ऋषि पत्नियों के साथ कोई व्यभिचार नहीं किया था। वे केवल ऋषि पत्नियों की परीक्षार्थ वहां गये थे।

लिंग शब्द का अर्थ पौराणिक लोग 'लयनालिंग' अर्थात् जिसमें सारा विश्व लीन हो जाता है, उस परमात्मा को लिंग कहते हैं, ऐसा कहते हैं। इसके पाखण्ड का भण्डा फोड़ करने के लिए यद्यपि यथेष्ठ प्रमाण हमने इस ग्रन्थ में दिए हैं, विशेष प्रमाण हम यहां और देते हैं, जिनको देखकर विपक्षी विद्वानों के मुंह बन्द हो जावेंगे।

शिवजी का ऋषि-पत्नियों से व्यभिचार व मार-पीट

ऋषयः उचुः–
व्यभिचारिता भार्याः सन्त्याज्याः पतिनेरिताः।२६।
दृष्ट्वा व्यभिचरन्तीह ह्यस्माभिः पुरुषाधम।३१।
ताडयाञ्चक्रिरेदण्डैलोष्ठिभिमुष्टिभिद्विजाः।३८।
दृष्ट्वाचरन्त गिरिशं नग्नं विकृति लक्षणम्।
प्राचुरेतद्भवलिंगमुत्पाट्य सुदुर्मते!।३६।
अस्माभिर्विविधाः शापां प्रवृतास्ते पराहताः।
ताडितोऽस्माभिरत्यर्थ लिंगन्तु विनिपातितम्।५४।

(कूर्मपुराण उतरार्ध अ० ३८)

ऋषियों ने कहा–हमने अपनी पतिव्रता पत्नियों को पुरुषाधम (महानीच) शिवजी के साथ व्यभिचार करते हुए देखा। हमने उस शिव को डण्डे, लोहे व लात–घूसों से खूब पीटा। हमने शिव को नंगा, विकृत आकृति वाला देखकर उसे शाप दिया कि हे दुर्मति (मूर्ख) तेरी यह लिंगेन्द्रिय कटकर गिर पड़े। हमारे उन अनेक शापों से रतिकार्य के लिए जो लिंगन्द्रिय होती है, वह कटकर गिर पड़ी।

उसी शिव मूत्रेन्द्रिय की पूजा का आदेश

ब्रह्मोवाच– यददृष्टं भवता तस्यलिंग भुवि निपातितम्।
तल्लिंगानुकृती शल्यं कृत्वा लिंगमनुत्तमम्।१।
पूजयध्वं व सपत्नीका सादर पुत्र सयुताः।

(कूर्म पुराण उत्तरार्ध अ० ३६)

ब्रह्मा जी ने ऋषियों को आदेश दिया–तुमने जिस शिवलिंग को काटकर पृथ्वी पर पतित हुआ देखा है उसी लिंगेन्द्रिय की आकृति का लिंग बनाकर अपनी पत्नी व पुत्रों के साथ आदर से तुम लोग पूजा करो–

इन प्रमाणों से प्रकट है कि शिवजी ने दारुवन में जाकर ऋषि–पत्नियों के साथ घमासान व्यभिचार किया था जिस पर ऋषियों

ने उनकी लात–घूंसों व लाठी आदि से पिटाई की थी। क्रोधित होकर उन्होंने शिवजी के व्यभिचार के नाम में आने वाले लिंग को शाप देकर काटकर भूमि पर गिरा दिया था। शिवजी जब दारुवन में गए थे तो वे–

दिगम्बरोऽतितेजस्वी भूति भूषण विभूषितः।
सचेष्टां सकदक्षां च हस्ते लिंगं विधारयन्।१०।

(शिव पुराण कोटि रुद्र सं० अ० १२)

देह पर भस्म रमाये हुए, सुन्दर, तेजस्वी वेश बनाकर अपनी लिंगेन्द्रिय को हाथ में पकड़े हुए वहां गए थे। वहां जाकर उन्होंने माया फैलाकर स्त्रियों को मोहित व कामोत्तेजित कर दिया था।

योऽनन्तः पुरुषो योनिर्लोकानामव्ययो हरिः।
स्त्रीलयं विष्णुरास्थाय सोऽनुगच्छति शूलिनम्।६।
पूर्णचन्द्र वदनं पीनोन्नत पयोधरम्।
शुचिस्मितं सुप्रसन्नंरणन्नूपुरकद्वयम्।१०।
सुपीतवसनं दिव्यं श्यामलञ्चारुलोचनम्।
उदार हंस गमनं विलासि सुमनोहरम्।११।
एवं स भगवानोशो देवदारुवनं हरः।
चचार हरिणा सार्द्ध मायया मोहञ्यगतम्।
मायया मोहिता नार्योदेवसमंन्युः।१३।
विवस्त्रस्ताभरणाः सर्वास्त्यक्तवा लज्जां पतिव्रता।
सहैव तेन कामार्ता विलासिन्यश्चरन्ति हि।१४।
ऋषीणां पुत्रकाये स्युर्युवानो जित मानसाः।
अन्वागमन्हृषीकेशं सर्वे काम प्रपीडिताः।६५।

(कूर्मपुराण उत्तरार्ध अ० ३८)

अर्थ–शिवजी स्वयं तथा विष्णु को सुन्दर स्त्री बनाकर दारुवन में गए। विष्णु जी का (स्त्री वेश में) चन्द्रमा जैसा सुन्दर मुख था, छातियां खूब उठी हुई थीं, देखने में बड़ी खूबसूरत, प्रसन्न वदन, पैरों में नूपुरों

की झन्कार करते हुए, पीले वस्त्र पहने, कजरारे चंचल नेत्र, हंस की सी मस्त तथा मन को हर लेने वाली चाल से वहां गए। वहां शिवजी व विष्णु को इन वेषों में विचरते देखकर उनकी माया से स्त्रियां मोहित हो गयी। उन्होंने अपने वस्त्र उतार कर फेंक दिए, लज्जा त्याग दी और कामातुर होकर शिवजी के पास गयीं। ऋषियों के पुत्र भी कामातुर होकर विष्णु (स्त्री रूपी विष्णु) से जाकर भिड़ गए।

उक्त सारे विवरण से स्पष्ट है कि विष्णु ने ऋषि से अपने साथ व्यभिचार कराया तथा शिवजी ने ऋषि–पत्नियों से स्वयं व्यभिचार किया था। शिवजी का व्यभिचार करना व उनकी मूत्रेन्द्रिय का कट कर गिरना तथा उसी की नकल बनाकर पूजी जाने वाली वर्तमान शिवलिंग का मूत्रेन्द्रिय होना यह सब पूर्णतया सिद्ध है–

शिव उपस्थेन्द्रिय का लिंग नाम पड़ने का कारण

दारुवन में व्यभिचार करने पर मुनियों ने शिव को निम्न शब्दों में शाप दिया–

यस्मात्कलत्रहर्ता त्वं तस्मात्षण्ढोभवत्वरम्।
एवं शप्तः स मुनिर्लिंग तस्य पतद्भुवि।
भूमिं प्राप्तं च तल्लिंगं ववृधे तरसा महत्।२५।
आवृत्य सप्त पातालान्क्षणाल्लिंगमधोर्ध्वत।
व्याप्यं पृथिवीं समग्रांच अन्तरिक्षं समावृणोत्।२६।
स्वर्गाः समावृताः सर्वे स्वर्गातोतमथाभवत्।
न मही न च दिक्चक्रं न तोयं न च पावकः।२७।
न च वायुर्नवाऽऽकाशं नाहंकारो न वा महत्।
न चाव्यक्तं न कालश्च न महा प्रकृतिस्तथा।२८।
नासीत् वदेत विभागं च सर्वालीनं च तत्क्षणात्।
यस्माल्लीनं जगत्सर्वं तस्मिल्लिंगे महात्मनः।२९।
लयनाल्लिंगमत्येयं प्रवदन्ति मनीषिणः।३०।

(स्कन्द पु० माहेश्वर खण्ड अ० ६)

अर्थ–'क्योंकि तुमने हमारी पत्नियों को भ्रष्ट व हरण किया है। अतः 'षण्ड' अर्थात् हिजड़े (लिंगहीन) हो जाओ।' मुनियों के इस प्रकार शाप देते ही शिव का लिंग (उपस्थेन्द्रिय) कट कर पृथ्वी पर गिर पड़ी। भूमि पर गिरते ही वह अत्यन्त बढ़ गई। उसने सात पाताल तथा ऊपर के लोक एक क्षण में ढक लिए। सारी पृथ्वी, आकाश, स्वर्ग सभी उससे ढक गए। वह स्वर्ग से भी ऊपर तक बढ़ गई। पृथ्वी, दिशायें, जल, अग्नि, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्व, अव्यक्त, काल, महाप्रकृति, परमाणु एवं सारे लोक उससे आवृत्त हो गए। कुछ भी शेष नहीं बच सका क्योंकि शिव की उस कटी हुई उपस्थेन्द्रिय ने सारे जगत् को अपने में लीन कर लिया। अतः महात्मा शिव की उस उपस्थेन्द्रिय को ही 'लिंग' कहा जाने लगा। विद्वान् लोग कहते हैं कि जिसमें सब कुछ लीन हो जाये, उसे लिंग कहते हैं।

इस प्रमाण से यह प्रमाणित है कि शिवलिंग शब्द शिव की उपस्थेन्द्रिय का ही वाचक है। शिवजी को 'षण्ड' अर्थात् लिंगहीन शब्द भी बड़े महत्व का प्रयुक्त किया गया है। उससे भी शिवलिंग को अन्य कुछ नहीं बताया जा सकता है। इसी सिलसिले में आगे के श्लोकों में स्पष्ट किया गया है कि शिवलिंग को ज्योतिलिंग बताना भी मूर्खता की बात है।

जब शिव ने उस कटे हुए लिंग का विस्तार बहुत हो गया तो देवताओं ने विष्णु व ब्रह्मा ने उसकी लम्बाई का पता लगाने को कहा–

देवाः उचुः

अस्यमूलं त्वया विष्णो! पद्मोद्भव! च मस्तकम्।
युवाभ्यां च विलोक्य स्यात्स्थानेस्यात्परिपालकौ।३३।
श्रुत्वा सती महाभागो वैकुण्ठ कमलोद्भवा।
विष्णुगतो हि पाताल ब्रह्मा स्वर्ग जगामह।३४।
स्वर्गं गतस्तदा ब्रह्मा अवलोकनतत्परः!
ना पश्यतत्र लिंगस्य मस्तक च विचक्षाः।३५।

(स्कन्द पुराण माहेश्वर खण्ड अ० ७)

देवताओं ने कहा विष्णु तुम इस लिंग की लम्बाई का पता लगाने नीचे की ओर जाओ तथा ब्रह्माजी! तुम ऊपर की ओर जाओ। विष्णु पाताल की ओर गए और ब्रह्मा ऊपर स्वर्ग की ओर गए लेकिन ब्रह्मा को कहीं भी उसका अन्त न दिखाई दिया।

इसी कथा में दिया है कि विष्णु के नीचे से लौटकर बताया कि उनको लिंगेन्द्रिय का अन्त नहीं मिला। ब्रह्मा ने ऊपर से लौटकर झूठ बोला कि उनको अन्त मिल गया और गवाही में केतकी का फूल पेश कर दिया। इस झूठ से केतकी फूल व ब्रह्मा को शाप दिए गये।

यही कथा अन्य पुराणों में भिन्न प्रकार से दी गई है। वहां लिखा है कि ब्रह्मा व विष्णु में एक दिन विवाद उठ खड़ा हुआ कि दोनों में कौन बड़ा है? दोनों ही अपने को बड़ा बताते थे। उसी समय उनके बीच में एक लिंग प्रकट हो गया। वहां यह निश्चय हुआ कि जो भी इस लिंग के सिर का पता लगा लाये वही बड़ा माना जायेगा। तदनुसार विष्णु जी नीचे को व ब्रह्मा ऊपर को गए। इसके आगे की कथा एक समान है। पौराणिक विद्वान् उस लिंग को 'ज्योतिलिंग' बताकर धोखा दिया करते हैं। स्कन्ध पुराण सभी पुराणों में सबसे बड़ा व माननीय पुराण है। उसमें ऊपर के प्रमाणों के आधार पर डंके की चोट यह घोषणा कर दी है कि शिवलिंग शिव की मूत्रेन्द्रिय ही थी। उसे अन्य कुछ भी बताने वाले कोरे जालसाज हैं। वे पुराणों को देखते ही नहीं हैं केवल उत्तर देने के लिए उल्टे–सीधे अर्थ भिड़ाया करते हैं।

हम सनातन धर्म के विद्वान द्वारा शिवलिंग पूजा के समर्थन में लिखे गए लेख को उद्धृत करते हैं जो काफी मनोरंजक है–

दिल्ली के एक पौराणिक विद्वान ने 'सनातन धर्मालोक' नाम से अपनी एक ग्रन्थमाला निकाली है उसके खण्ड ६ में पृ० ६५३ पर वह **हमारी पुस्तक शिवलिंग पूजा क्यों?** के संबंध में लिखते हैं–

"जो कि वादी लिखते हैं परमात्मा के स्थान पर महादेव का लिंग (मूत्रेन्द्रिय) जनता से पूजवा डाला, तो क्या वादी महादेव के सर की पूजा करेंगे–यदि हम इसकी आज्ञा दे दें? क्या वादी लिंग का अर्थ केवल

शिश्न ही जानते हैं? महादेव महान देव परमात्मा ही तो हैं, उनका लिंग ब्रह्मांड का प्रतीक है.....अथवा शिवलिंग तथा जलहरी को पार्वती का 'भग' भी आप लोगों के अनुसार मान लिया जावे और उनके पूजनीय होने में शंका की जावे तो उस पर बादी यह जाने कि—"जगत पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ" गौरी शंकर परमात्मा होने से जगत के जननी (माता) जनक (पिता) है। जननी जनक को पूजनीय कौन नहीं मानता? बादी भी तो माता—पिता को पूजनीय मानते हैं। (देखिए स० प्र० का पंचायतन देव पूजा प्रकरण) ऐसा है तो उनकी पूजा किसी अंग के द्वारा ही तो होगी। बताइए कि पिता का जनकत्व वस्तुतः किस अंग में होता है? और माता का जननीत्व वस्तुतः किस अंग में होता है?

आपका उत्तर भी सही होगा कि यही दो अंग भग लिंग ही वस्तुतः जननी जनक हैं। तब माता—पिता को यदि पूजनीय माना जाता है, और उनकी पूजा उनके किसी अंग की पूजा से होती है तो उनकी वास्तविक पूजा उन्हीं अंगों की पूजा से सम्पन्न होगी। पर प्राकृतिक शरीर होने से अपवित्रतावश लोक में इन अंगों की पूजा व्यवहार में नहीं होती, अतः नहीं की जाती। पर जगत के जननी जनक पार्वती परमेश्वर पवित्र देवता होने से उनके यह दोनों अंग भी पवित्र हैं, अतः उनकी पूजा में भी न तो कोई दोष है, और न उपहासनीयता। यहां लिंग तथा योनि अंगों में लज्जा मानी जाती है, अन्यत्र नहीं। इस प्रकार देवताओं के अंग कहां नहीं हैं? सर्वत्र हैं, पर उनके इन अंगों में भी कुछ उपहासनीयता व लज्जा की बात नहीं क्योंकि वे मनुष्य नहीं हैं।"

उपरोक्त लेख से स्पष्ट है कि पौराणिक विद्वान भी शिवलिंग को महादेव की मूत्रेन्द्रिय तथा जलहरी को पार्वती की भग स्वीकार करते हैं। वे तो यहां तक आगे बढ़ गए हैं कि सन्तान को माता—पिता की पूजा उनकी मूत्रेन्द्रियों की पूजा करके ही उनकी वास्तविक पूजा करने का आदेश दे रहे हैं। हमारा निवेदन है कि पौराणिक सन्तानों को माता पिता की रोली, चावल चढ़ाकर मूत्रेन्द्रिय पूजा करने की कोई पुराण समर्थित शास्त्रीय पद्धति बनवा ले तो सनातनी लोग उनके अति कृतज्ञ होंगे।

शिवजी के चार मुंह

तिलोत्तमा नाम पुरा ब्रह्मणायोतषदुत्तमा।
तिल तिलं समुद्धृत्य रत्नानां निर्मिता शुभा।१।
यतो यतः सुदन्ति मामुपाधावदन्तिके।
ततस्ततो मुख चारु ममदेवि विनिगतम्।३।
ता दिदृक्षुरहं योगाच्चतुर्मुखत्वमागत।
चतुर्मुखश्च संवृत्तो दर्शनेन योगमुत्तमम्।४।

(महाभारत अन० अ० १४१)

अर्थ– शिवजी ने कहा पूर्वकाल में ब्रह्मा ने एक सर्वोत्तम नारी से सृष्टि की थी। उन्होंने सम्पूर्ण रत्नों का तिल–तिल भर सार उद्धृत करके उस शुभ लक्षणा सुन्दरी के अंगों का निर्माण किया था। इस लिए वह तिलोत्तमा नाम से प्रसिद्ध हुई।१। वह सुन्दर दांतों वाली सुन्दरी निकट से मेरी परिक्रमा करती हुई जिस–जिस दिशा की ओर गई उस–उस दिशा की ओर मनोरम मुख प्रकट हो गया।३। तिलोत्तमा के रूप को देखने की इच्छा से योगबल से मैं चतुर्मुख हो गया। इस प्रकार मैंने लोगों को उत्तमोत्तम योगशक्ति का दर्शन कराया।

समीक्षा–तिलोत्तमा नाम की सुन्दर स्त्री के रूप पर शिवजी इतने मोहित हो गए कि उनकी आंखें उस पर चिपक गई। यह उसके चारों और जब घूमने लगी तो अन्य देवता लोग मजाक न बनावें, इसलिए उन्होंने सर घुमाकर उसे देखते रहने के बजाय अपने तीन तरफ तीन मुंह और बना लिए व उसके सौंदर्य को तबियत भरकर देखते रहे। शिवजी को उसी कामातुर अवस्था में प्रकट हुए चार मुंह की नकल बनाकर चतुर्मुखी शिवजी की शिव मन्दिरों में आज भी पूजा होती है। यह शिवजी का रहस्य जब पाठकों पर प्रकट होगा तो वे इस पर हंसे बिना न रहेंगे। अपने ही पूज्य कामुक शिवजी की मजाक उड़ाने में पौराणिक विद्वानों ने कोई कसर शेष न छोड़ी है।

आशा है इन प्रमाणों से सभी को स्थिति स्पष्ट हो जाएगी और वे समझ सकेंगे कि शिवलिंग ही शिव मूत्रेन्द्रिय की नकल है। दारुवन में शिवजी ने व्यभिचार किया था। शिवलिंग को ज्योतिर्लिंग बताना गलत है तथा व्यभिचार के कारण शिवजी पर भारी मार पड़ी थी, वह भी पुराण ने स्पष्ट कर दिया है।

O

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय,
पु परिग्रहण क्रमांक 2891.......
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र